XII Class

Pol. Science

दो ध्रुवीयता का अंत
(समकालीन विश्व राजनीति)

Chapter Summary- 1

❖ शीतयुद्ध का सबसे बड़ा प्रतीक 'बर्लिन-दीवार' को 1989 में पूर्वी जर्मनी की आम जनता ने गिरा दिया।

☞ दूसरे विश्वयुद्ध के बाद विभाजित हो चुके जर्मनी का अब एकीकरण हो गया।

☞ सोवियत संघ के खेमे में शामिल पूर्वी यूरोप के आठ देशों ने एक-एक करके जनता के प्रदर्शनों को देखकर अपने साम्यवादी शासन को बदल डाला।

☞ शीतयुद्ध के अंत के समय सोवियत संघ को यह सब चुपचाप देखते रहना पड़ा और अंत में स्वयं सोवियत संघ का विघटन हो गया।

❖ बर्लिन की दीवार-

☞ बर्लिन की दीवार पूँजीवादी दुनिया और साम्यवादी दुनिया के बीच विभाजन का प्रतीक थी।

☞ 1961 में बनी यह दीवार पश्चिमी बर्लिन को पूर्वी बर्लिन से अलग करती थी।

☞ आखिरकार जनता ने इसे 9 नवंबर, 1989 को तोड़ दिया और यह घटना दोनों जर्मनी के एकीकरण और साम्यवादी खेमे की समाप्ति की शुरुआत थी।

☞ बर्लिन की दीवार का गिरना शीतयुद्ध के अंत का प्रतीक था।

❖ सोवियत प्रणाली क्या थी?

☞ समाजवादी सोवियत गणराज्य (Union of Soviet Socialist Republics- USSR) रूस में हुई सन् 1917 की समाजवादी क्रांति के बाद अस्तित्व में आया।

☞ यह क्रांति पूँजीवादी व्यवस्था के विरोध में हुई थी और समाजवाद के आदर्शों और समतामूलक समाज की ज़रूरत से प्रेरित थी।

☞ यह मानव इतिहास में निजी संपत्ति की संस्था को समाप्त करने और समाज को समानता के सिद्धांत पर सचेत रूप से रचने की बड़ी कोशिश थी।

☞ सोवियत राजनीतिक प्रणाली 'समाजवाद/साम्यवाद की विचारधारा' पर आधारित थी।

☞ सोवियत प्रणाली के निर्माताओं ने 'राज्य' और 'पार्टी की संस्था' को प्राथमिक महत्त्व दिया।

☞ बोल्शेविक कम्युनिस्ट पार्टी का सोवियत राजनीतिक व्यवस्था पर दबदबा था।

☞ सोवियत राजनीतिक प्रणाली की धुरी कम्युनिस्ट पार्टी थी।

☞ अर्थव्यवस्था योजनाबद्ध और राज्य के नियंत्रण में थी।

☞ दूसरे विश्वयुद्ध के बाद महाशक्ति के रूप में उभरे सोवियत संघ की अर्थव्यवस्था अमरीका को छोड़कर शेष विश्व की तुलना में कहीं ज्यादा विकसित थी।

☞ सोवियत संघ के पास विशाल ऊर्जा-संसाधन थे, जिसमें खनिज-तेल, लोहा और इस्पात तथा मशीनरी उत्पाद शामिल हैं।

☞ दूसरे विश्वयुद्ध के बाद पूर्वी यूरोप के देश सोवियत संघ के अंकुश में आ गये। इन सभी देशों की राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था को सोवियत संघ की समाजवादी प्रणाली की तर्ज पर ढाला गया। इन्हें ही 'समाजवादी खेमे के देश' या 'दूसरी दुनिया' कहा जाता है। इस खेमे का नेता समाजवादी सोवियत गणराज्य (USSR) था।

☞ 15 गणराज्यों को आपस में मिलाकर सोवियत संघ बनाया था।

☞ कालान्तर में सोवियत प्रणाली पर नौकरशाही का शिकंजा कसता चला गया।

☞ वक्त के साथ यह प्रणाली सत्तावादी होती चली गई और इसमें लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की आज़ादी समाप्त हो गई।

☞ ऐसी स्थिति में सोवियत संघ की अधिकांश संस्थाओं में सुधार करने की ज़रूरत थी।

☞ सोवियत संघ का एकमात्र दल यानी सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी जनता के प्रति जवाबदेह नहीं थी, अतः दुर्भाग्य से कोई सुधार न हो सका।

☞ निष्कर्ष यह था कि सोवियत संघ अपने नागरिकों की राजनीतिक और आर्थिक आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सका।

❖ मिख़ाइल गोर्बाचेव 1980 के दशक के मध्य में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव बने।

☞ गोर्बाचेव ने पश्चिम के देशों के साथ संबंधों को सामान्य बनाने, सोवियत संघ को लोकतांत्रिक रूप देने और वहाँ सुधार करने का फ़ैसला किया।

किसी भी प्रकार के नोट्स डाउनलोड करने के लिए Visit करें- https://tyrosity.com
किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए Contact करें- 9462019565
किसी भी प्रकार की Update प्राप्त करने के लिए Join करें- https://t.me/drppola

☞ गोर्बाचेव ने देश के अंदर आर्थिक-राजनीतिक सुधारों और लोकतंत्रीकरण की नीति चलायी, लेकिन इन सुधार नीतियों का कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं द्वारा विरोध किया गया।

☞ सन् 1991 में एक तख़्तापलट भी हुआ।

☞ दिसम्बर, 1991 में बोरिस येल्तसिन के नेतृत्व में सोवियत संघ के तीन बड़े गणराज्य रूस, यूक्रेन और बेलारूस ने सोवियत संघ की समाप्ति की घोषणा की।

☞ साम्यवादी सोवियत गणराज्य के विघटन की घोषणा के बाद 'स्वतंत्र राज्यों के राष्ट्रकुल' (कॉमनवेल्थ ऑव इंडिपेंडेंट स्टेट्स / Commonwealth of Independent States- CIS) का गठन हुआ।

☞ रूस को सोवियत संघ का उत्तराधिकारी राज्य स्वीकार किया गया।

☞ सोवियत संघ ने जो अंतर्राष्ट्रीय करार और संधियाँ की थीं उन सब को निभाने का जिम्मा अब रूस का था।

☞ सोवियत संघ के विघटन के बाद के समय में पूर्ववर्ती गणराज्यों के बीच एकमात्र परमाणु शक्ति संपन्न देश का दर्ज़ा रूस को मिला।

☞ रूस को सुरक्षा परिषद् (संयुक्त राष्ट्रसंघ) में सोवियत संघ की सीट मिली।

❖ सोवियत अर्थव्यवस्था की प्रकृति-

☞ सोवियत अर्थव्यवस्था में समाजवाद 'प्रभावी विचारधारा' (Dominant Ideology) थी।

☞ उत्पादन के साधनों पर राज्य का स्वामित्व/नियंत्रण था।

☞ अर्थव्यवस्था के हर पहलू का नियोजन और नियंत्रण राज्य करता था।

☞ जनता को आर्थिक आज़ादी मुहैया नहीं थी।

❖ सोवियत संघ के नेता-

व्लादिमीर लेनिन (1870-1924)-

1. बोल्शेविक कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक।
2. सन् 1917 की रूसी क्रांति के नायक।
3. सोवियत समाजवादी गणराज्य के संस्थापक-अध्यक्ष।
4. सन् 1917 से 1924 तक सोवियत संघ का नेतृत्व किया।
5. दुनिया में साम्यवाद के प्रेरणास्रोत।

जोजेफ स्टालिन (1879-1953)-

1. लेनिन के उत्तराधिकारी, जिन्होंने सन् 1924 से 1953 तक सोवियत संघ का नेतृत्व किया।
2. औद्योगीकरण को तेजी से बढ़ावा दिया और खेती का बलपूर्वक सामूहिकीकरण (Forcible collectivisation of agriculture) किया।
3. स्टालिन पार्टी के अंदर अपने विरोधियों को कुचलने और तानाशाही रवैये के लिए जाने जाते हैं।

निकिता ख्रुश्चेव (1894-1971)-

1. स्टालिन की नेतृत्व-शैली के आलोचक के रूप में पहचाने जाने वाले निकिता ख्रुश्चेव सन् 1953 से 1964 तक सोवियत संघ के राष्ट्रपति रहे।
2. इन्होंने पश्चिम के साथ 'शांतिपूर्ण सहअस्तित्व' (Peaceful Coexistence) की नीति का सुझाव रखा।

लिओनिड ब्रेझनेव (1906-1982)-

1. सन् 1964 से 1982 तक सोवियत संघ के राष्ट्रपति रहे।
2. एशिया की सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था का सुझाव दिया।
3. अमरीका के साथ संबंधों में 'तनाव की कमी के दौर' (Détente phase) से जुड़े।
4. सोवियत संघ ने सन् 1979 में अफ़गानिस्तान में हस्तक्षेप (अफगानिस्तान पर आक्रमण) किया।

मिख़ाइल गोर्बाचेव (जन्म 1931)-

1. सोवियत संघ के अंतिम राष्ट्रपति (सन् 1985 से 1991 तक)।
2. पेरेस्त्रोइका (Perestroika) अर्थात् 'पुनर्रचना' (Restructuring) और ग्लासनोस्त (Glasnost) अर्थात् 'खुलापन' (Openness) के आर्थिक और राजनीतिक सुधार शुरू किए।
3. शीतयुद्ध समाप्त किया।
4. इन पर सोवियत संघ के विघटन का आरोप लगा।

बोरिस येल्तसिन (1931-2007)-

1. रूस के पहले चुने हुए राष्ट्रपति (सन् 1991 से 1999 तक)।
2. सन् 1991 में सोवियत संघ के शासन के खिलाफ विरोध का नेतृत्व।
3. सोवियत संघ के विघटन में केंद्रीय भूमिका निभाई।

❖ सोवियत संघ का विघटन क्यों हुआ?

☞ सोवियत संघ की राजनीतिक-आर्थिक संस्थाएँ अंदरुनी कमजोरी के कारण लोगों की आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सकीं।

☞ सोवियत संघ ने अपने संसाधनों का अधिकांश परमाणु हथियार और सैन्य साजो-सामान पर लगाया।

☞ सोवियत संघ ने अपने संसाधन पूर्वी यूरोप के अपने पिछलग्गू देशों के विकास पर भी खर्च किए ताकि वे सोवियत नियंत्रण में बने रहें। इससे सोवियत संघ पर गहरा आर्थिक दबाब बना और सोवियत व्यवस्था इसका सामना नहीं कर सकी।

☞ पश्चिमी मुल्कों की तरक्की के बारे में सोवियत संघ के आम नागरिकों की जानकारी बढ़ी।

☞ सोवियत संघ प्रशासनिक और राजनीतिक रूप से गतिरुद्ध हो चुका था।

☞ गोर्बाचेव ने अर्थव्यवस्था को सुधारने, पश्चिम की बराबरी पर लाने और प्रशासनिक ढाँचे में ढील देने का वायदा किया।

☞ जब गोर्बाचेव ने सुधारों को लागू किया और व्यवस्था में ढील दी तो लोगों की आकांक्षाओं-अपेक्षाओं का ऐसा ज्वार उमड़ा जिसका अनुमान शायद ही कोई लगा सकता था। इस पर काबू पाना एक अर्थ में असंभव हो गया।

☞ सोवियत संघ में जनता के एक तबके की सोच यह थी कि गोर्बाचेव को ज्यादा तेज गति से कदम उठाने चाहिए। ये लोग उनकी कार्यपद्धति से धीरज खो बैठे और निराश हो गए।

☞ सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य और वे लोग जो सोवियत व्यवस्था से फायदे में थे, उनका कहना था कि हमारी सत्ता और विशेषाधिकार अब कम हो रहे हैं और गोर्बाचेव बहुत जल्दबाजी दिखा रहे हैं।

☞ इस खींचतान में सोवियत जनमत आपस में बँट गया।

☞ राष्ट्रीयता और संप्रभुता के भावों का उभार सोवियत संघ के विघटन का अंतिम और सर्वाधिक तात्कालिक कारण सिद्ध हुआ।

☞ रूस और बाल्टिक गणराज्य (एस्टोनिया, लताविया और लिथुआनिया), उक्रेन तथा जार्जिया जैसे सोवियत संघ के विभिन्न गणराज्यों राष्ट्रीयता और संप्रभुता के भावों का उभार जोरों पर था।

☞ विश्लेषकों के एक सूमह का सोचना है कि गोर्बाचेव के सुधारों ने राष्ट्रवादियों के असंतोष को इस सीमा तक भड़काया कि उस पर शासकों का नियंत्रण नहीं रहा।

❖ मार्च, 1985 में मिख़ाइल गोर्बाचेव सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव चुने गए और बोरिस येल्तसिन को रूस की कम्युनिस्ट पार्टी का प्रमुख बनाया गया। इसी वर्ष सोवियत संघ में सुधारों की शृंखला शुरू की गई।

❖ फरवरी, 1990 में गोर्बाचेव ने सोवियत संसद 'ड्यूमा' के चुनाव के लिए बहुदलीय राजनीति की शुरुआत की और इसके साथ ही सोवियत सत्ता पर कम्युनिस्ट पार्टी का 72 वर्ष पुराना एकाधिकार समाप्त हो गया।

❖ मार्च, 1990 में लिथुआनिया स्वतंत्रता की घोषणा करने वाला पहला सोवियत गणराज्य बना।

❖ जून, 1991 में बोरिस येल्तसिन ने कम्युनिस्ट पार्टी से इस्तीफा दिया और वे रूस के राष्ट्रपति बने।

❖ सितंबर, 1991 में बाल्टिक गणराज्य एस्टोनिया, लातविया और लिथुआनिया संयुक्त राष्ट्रसंघ के सदस्य बने, जो कि आगे चलकर मार्च, 2004 में उत्तर अटलांटिक संधि संगठन में शामिल हुए।

❖ सोवियत संघ के निर्माण से संबद्ध रहे देशों ने दिसंबर, 1991 में पहली बार एक नए संगठन 'स्वतंत्र राष्ट्रों का राष्ट्रकुल' (Commonwealth of Independent States - CIS) की स्थापना की पहल शुरू की। जार्जिया 1993 में राष्ट्रकुल का सदस्य बना।

❖ 25 दिसंबर, 1991 को मिखाइल गोर्बाचेव ने सोवियत संघ के राष्ट्रपति के पद से इस्तीफा दिया और इसी के साथ सोवियत संघ का अंत हो गया।

❖ सोवियत संघ के विघटन की परिणतियाँ (प्रभाव)-

☞ 'दूसरी दुनिया' (अर्थात् सोवियत गुट) के पतन का एक परिणाम 'शीतयुद्ध के दौर के संघर्ष का समापन' हुआ।

☞ समाजवादी प्रणाली पूँजीवादी प्रणाली को पछाड़ पाएगी या नहीं- यह विचारधारात्मक विवाद, जो शीतयुद्ध की शुरुआत का एक प्रमुख कारण था, अब कोई मुद्दा नहीं रहा। अब संयुक्त राज्य अमरीका और सोवियत संघ के बीच विचारधारात्मक लड़ाई का अंत हुआ।

☞ शीतयुद्ध के समाप्त होने से हथियारों की होड़ भी समाप्त हो गई और एक नई शांति की संभावना का जन्म हुआ।

☞ विश्व राजनीति में शक्ति-संबंध बदल गए। शीतयुद्ध के अंत के समय केवल दो संभावनाएँ थी- या तो बची हुई महाशक्ति का दबदबा रहेगा और 'एकध्रुवीय विश्व' बनेगा या फिर कई देश अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण मोहरे बनकर उभरेंगे और इस तरह 'बहुध्रुवीय विश्व' बनेगा जहाँ किसी एक देश का बोलबाला नहीं होगा। हुआ यह कि अमरीका अकेली महाशक्ति बन बैठा। इस प्रकार अब विश्व-व्यवस्था के शक्ति-संतुलन में बदलाव आया।

☞ अब पूँजीवादी अर्थव्यवस्था अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभुत्वशाली अर्थव्यवस्था है। विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाएँ विभिन्न देशों की ताकतवर सलाहकार बन गईं, क्योंकि इन देशों को पूँजीवाद की ओर कदम बढ़ाने के लिए इन संस्थाओं ने कर्ज़ दिया है।

☞ राजनीतिक रूप से उदारवादी लोकतंत्र राजनीतिक जीवन को सूत्रबद्ध करने की सर्वश्रेष्ठ धारणा के रूप में उभरा।

☞ स्वतंत्र राज्यों के राष्ट्रकुल (सीआईएस) का जन्म हुआ।

❖ 'शॉक थेरेपी'-

☞ साम्यवाद के पतन के बाद पूर्व सोवियत संघ के गणराज्य एक सत्तावादी, समाजवादी व्यवस्था से लोकतांत्रिक पूँजीवादी व्यवस्था तक के कष्टप्रद संक्रमण से होकर गुजरे। रूस, मध्य एशिया के गणराज्य और पूर्वी यूरोप के देशों में पूँजीवाद की ओर संक्रमण का एक खास मॉडल अपनाया गया। विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा निर्देशित इस मॉडल को 'शॉक थेरेपी' (आघात पहुँचाकर उपचार करना) कहा गया।

☞ अब हर देश को पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की ओर पूरी तरह मुड़ना था। इसका मतलब था कि सोवियत संघ के दौर की हर संरचना से पूरी तरह निजात पाना।

☞ 'शॉक थेरेपी' की सर्वोपरि मान्यता थी कि मिल्कियत का सबसे प्रभावी रूप निजी स्वामित्व होगा। इसके अंतर्गत राज्य की संपदा के निजीकरण और व्यावसायिक स्वामित्व के ढाँचे

को तुरंत अपनाने की बात शामिल थी। सामूहिक 'फार्म' को निजी 'फार्म' में बदला गया और पूँजीवादी पद्धति से खेती शुरू हुई।

☞ पूँजीवादी व्यवस्था को अपनाने के लिए वित्तीय खुलापन, मुद्राओं की आपसी परिवर्तनीयता और मुक्त व्यापार की नीति महत्त्वपूर्ण मानी गई।

☞ 'शॉक थेरेपी' संक्रमण काल में सोवियत खेमे के प्रत्येक देश को एक-दूसरे से जोड़ने की जगह सीधे पश्चिमी मुल्कों से जोड़ा गया। इस तरह धीरे-धीरे इन देशों (सोवियत खेमे) को पश्चिमी अर्थतंत्र में समाहित किया गया।

❖ 'शॉक थेरेपी' के परिणाम-

☞ सन् 1990 में अपनायी गई 'शॉक थेरेपी' से पूरे क्षेत्र की अर्थव्यवस्था तहस-नहस हो गई और इस क्षेत्र की जनता को बर्बादी की मार झेलनी पड़ी।

☞ आर्थिक ढाँचे का यह पुनर्निर्माण चूँकि सरकार द्वारा निर्देशित औद्योगिक नीति के बज़ाय बाज़ार की ताकतें कर रही थीं, इसलिए यह कदम सभी उद्योगों को मटियामेट करने वाला साबित हुआ।

☞ 'शॉक थेरेपी' को 'इतिहास की सबसे बड़ी गराज-सेल' (The largest garage sale in history) के नाम से जाना जाता है, क्योंकि महत्त्वपूर्ण उद्योगों की कीमत कम से कम करके आंकी गई और उन्हें औने-पौने दामों में बेच दिया गया।

☞ रूसी मुद्रा रूबल के मूल्य में नाटकीय ढंग से गिरावट आई। मुद्रास्फीति इतनी ज्यादा बढ़ी कि लोगों की जमापूँजी जाती रही।

☞ सामूहिक खेती की प्रणाली समाप्त हो चुकी थी और लोगों को अब खाद्यान्न की सुरक्षा मौजूद नहीं रही। रूस ने खाद्यान्न का आयात करना शुरू किया।

☞ समाज कल्याण की पुरानी व्यवस्था को क्रम से नष्ट किया गया। सरकारी रियायतों के खात्मे के कारण ज्यादातर लोग ग़रीबी में पड़ गए।

☞ मध्य वर्ग समाज के हाशिए पर आ गया और अकादमिक-बौद्धिक कामों से जुड़े लोग या तो बिखर गए या बाहर चले गए। कई देशों में एक 'माफिया वर्ग' (जरायमपेशा लोग) उभरा और उसने अधिकतर आर्थिक गतिविधियों को अपने नियंत्रण में ले लिया।

☞ अब धनी और निर्धन लोगों के बीच बहुत गहरी आर्थिक असमानता बढ़ी।

❖ रूस, कज़ाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, उज़्बेकिस्तान और अज़रबैजान तेल और गैस के बड़े उत्पादक देश हैं।

❖ 'शॉक थेरेपी' के बाद, पूर्व सोवियत संघ के अनेक गणराज्यों ने गृहयुद्ध और बग़ावत को झेला है।

☞ रूस के दो गणराज्यों चेचन्या और दाग़िस्तान में हिंसक अलगाववादी आंदोलन चले।

☞ मध्य एशिया में, ताज़िकिस्तान दस वर्षों यानी सन् 2001 तक गृहयुद्ध की चपेट में रहा।

☞ अज़रबैज़ान का एक प्रांत नगरनो-कराबाख (Nagorno-Karabakh) के कुछ स्थानीय अर्मेनियाई अलग होकर अर्मेनिया से मिलना चाहते हैं।

❖ पूर्वी यूरोप में चेकोस्लोवाकिया शांतिपूर्वक दो भागों में बँट गया, जिससे चेक गणराज्य तथा स्लोवाकिया नाम के दो देश बने।

❖ बाल्कन क्षेत्र का गणराज्य युगोस्लाविया सन् 1991 के बाद कई प्रांतों में टूट गया और इसमें शामिल बोस्निया-हर्जेगोविना, स्लोवेनिया तथा क्रोएशिया ने अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया।

❖ शीतयुद्ध के दौरान भारत और सोवियत संघ के संबंध बहुत गहरे थे, जैसे कि-

☞ सोवियत संघ ने भिलाई, बोकारो और विशाखापट्टनम के इस्पात कारखानों तथा भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स जैसे मशीनरी संयंत्रों के लिए आर्थिक और तकनीकी सहायता दी।

☞ सोवियत संघ ने कश्मीर मामले पर संयुक्त राष्ट्रसंघ में भारत के रुख को समर्थन दिया।

☞ सोवियत संघ ने भारत के संघर्ष के गाढ़े दिनों, ख़ासकर सन् 1971 में पाकिस्तान से युद्ध के दौरान मदद की।

☞ भारत को सोवियत संघ ने ऐसे वक्त में सैनिक साजो-सामान दिए जब शायद ही कोई अन्य देश अपनी सैन्य टेक्नालॉजी भारत को देने के लिए तैयार था।

☞ हिंदी फिल्में और भारतीय संस्कृति सोवियत संघ में लोकप्रिय रही हैं।

❖ भारत को रूस के साथ अपने संबधों के कारण कश्मीर, ऊर्जा-आपूर्ति, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद से संबंधित सूचनाओं के आदान-प्रदान, पश्चिम एशिया में पहुँच बनाने तथा चीन के साथ अपने संबंधों में संतुलन लाने जैसे मसलों में फायदे हुए हैं।

☞ रूस भारत की परमाणिक योजना के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। रूस ने भारत के अंतरिक्ष उद्योग में भी ज़रूरत के वक्त क्रायोजेनिक रॉकेट देकर मदद की है। भारत और रूस विभिन्न वैज्ञानिक परियोजनाओं में साझीदार हैं।

❖ रूस को भारत के साथ संबंधों से सबसे बड़ा फायदा यह है कि-

☞ भारत रूस के लिए हथियारों का दूसरा सबसे बड़ा खरीददार देश है।

☞ भारत तेल के आयातक देशों में से एक है, इसलिए भी भारत रूस के लिए महत्त्वपूर्ण है।

XII Class

Pol. Science

सत्ता के समकालीन केंद्र
(समकालीन विश्व राजनीति)

Chapter Summary- 2

❖ 1990 के दशक के शुरू में विश्व राजनीति में दो-ध्रुवीय व्यवस्था के टूटने के बाद यह स्पष्ट हो गया कि सत्ता के वैकल्पिक केंद्र कुछ हद तक अमरीका के प्रभुत्व को सीमित करेंगे।

☞ यूरोप में 'यूरोपीय संघ' और एशिया में 'आसियान' का उदय दमदार शक्ति के रूप में हुआ।

☞ चीन के आर्थिक उभार ने विश्व राजनीति पर काफी नाटकीय प्रभाव डाला।

✍ दिसंबर, 1978 में देंग श्याओपेंग ने 'मुक्त द्वार' (Open door) की नीति चलायी। इसके बाद से चीन अगले सालों में एक बड़ी आर्थिक ताकत के रूप में उभरा।

❖ यूरोपीय संघ-

☞ दूसरे विश्व युद्ध के चलते 1945 तक यूरोपीय देशों ने अपनी अर्थव्यवस्थाओं की बर्बादी को झेला।

☞ 1945 के बाद यूरोप के देशों में मेल-मिलाप को शीतयुद्ध से भी मदद मिली, क्योंकि इसी शीतयुद्ध के कारण अमरीका ने यूरोप की अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन के लिए जबरदस्त मदद की, जिसे 'मार्शल योजना' (Marshall Plan) के नाम से जाना जाता है।

✍ मार्शल योजना के तहत् ही 1948 में 'यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन' (Organisation for European Economic Cooperation : OEEC) की स्थापना की गई, जिसके माध्यम से पश्चिमी यूरोप के देशों को आर्थिक मदद दी गई।

☞ अमेरिका ने 'नाटो' (NATO) के तहत एक सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था को जन्म दिया।

☞ 1949 में गठित 'यूरोपीय परिषद्' (Council of Europe) राजनैतिक सहयोग के मामले में एक अगला कदम साबित हुई और इसके परिणामस्वरूप 1957 में 'यूरोपीय आर्थिक समुदाय' (European Economic Community) का गठन हुआ।

☞ यूरोपीय संसद (European Parliament) के गठन के बाद इस प्रक्रिया ने राजनीतिक स्वरूप प्राप्त कर लिया।

☞ सोवियत गुट के पतन के बाद 1992 में इस प्रक्रिया की परिणति 'यूरोपीय संघ' (European Union) की स्थापना के रूप में हुई। यूँ कहें कि यूरोपीय संघ आर्थिक सहयोग वाली व्यवस्था से बदलकर राजनैतिक शक्ति का केन्द्र बन गया।

☞ अब यूरोपीय संघ स्वयं काफी हद तक एक विशाल राष्ट्र-राज्य की तरह ही काम करने लगा है।

☞ यूरोपीय संघ का अपना झंडा, गान, स्थापना-दिवस और अपनी मुद्रा है।

☞ यूरोपीय संघ के झंडे में सोने के रंग के 12 सितारों का घेरा यूरोप के लोगों की एकता और मेलमिलाप का प्रतीक है।

☞ नये सदस्यों को इसमें शामिल कर इसके विस्तार की कोशिश की गई। नये सदस्य मुख्यत: भूतपूर्व सोवियत खेमे के थे।

☞ यूरोपीय संघ का आर्थिक, राजनैतिक, कूटनीतिक तथा सैनिक प्रभाव बहुत ज़बरदस्त है।

☞ 2016 में यह दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी।

☞ यूरोपीय संघ की मुद्रा 'यूरो' (Euro) अमरीकी डालर के प्रभुत्व के लिए खतरा बन सकती है।

☞ यह विश्व व्यापार संगठन जैसे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संगठनों के अंदर एक महत्त्वपूर्ण समूह के रूप में काम करता है।

☞ यूरोपीय संघ का एक सदस्य फ्रांस सुरक्षा परिषद् का स्थायी सदस्य है।

☞ सैनिक ताकत के हिसाब से यूरोपीय संघ के पास दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी सेना है। इसका कुल रक्षा बजट अमरीका के बाद सबसे अधिक है।

✍ यूरोपीय संघ के देश फ्रांस के पास परमाणु हथियार हैं।

☞ अंतरिक्ष विज्ञान और संचार प्रौद्योगिकी के मामले में यूरोपीय संघ का दुनिया में दूसरा स्थान है।

☞ यूरोपीय संघ के सदस्य देशों की अपनी विदेश और रक्षा नीति है, अत: अनेक मामलों में कई बार इनके मत एक-दूसरे के खिलाफ भी होते हैं।

✍ यूरोप के कुछ हिस्सों में यूरो को लागू करने के कार्यक्रम को लेकर काफी नाराजगी है।

- ब्रिटेन की पूर्व प्रधानमंत्री मार्गरेट थैचर ने ब्रिटेन को यूरोपीय बाज़ार से अलग रखा था।
- डेनमार्क और स्वीडन ने मास्ट्रिस्ट संधि और साझी यूरोपीय मुद्रा यूरो को मानने का प्रतिरोध किया था।

❖ यूरोपीय एकता के महत्त्वपूर्ण पड़ाव-

- अप्रैल 1951 : पश्चिमी यूरोप के छह देशों– फ्रांस, पश्चिम जर्मनी, इटली, बेल्जियम, नीदरलैंड और लक्जमबर्ग ने पेरिस संधि पर दस्तखत करके 'यूरोपीय कोयला और इस्पात समुदाय' का गठन किया।
- मार्च 1957 : इन्हीं छह देशों ने रोम की संधि के माध्यम से 'यूरोपीय आर्थिक समुदाय' (EEC) और 'यूरोपीय एटमी ऊर्जा समुदाय' (Euratom) का गठन किया।
- जनवरी 1973 : डेनमार्क, आयरलैंड और ब्रिटेन ने भी यूरोपीय समुदाय की सदस्यता ली।
- फरवरी 1992 : यूरोपीय संघ के गठन के लिए 'मास्ट्रिस्ट संधि' पर दस्तखत।
- जनवरी 1993 : एकीकृत बाजार का गठन।
- जनवरी 2002 : नई मुद्रा यूरो को 12 सदस्य देशों ने अपनाया।
- दिसंबर 2009 : लिस्बन संधि लागू हुई।
- 2012 : यूरोपीय संघ को नोबेल शांति पुरुस्कार।
- 2013 : क्रोएशिया यूरोपीय संघ का 28वां सदस्य बना।
- 2016 : ब्रिटेन में जनमत संग्रह, 51.9 प्रतिशत मतदाताओं ने फैसला किया कि ब्रिटेन यूरोपीय संघ से बाहर (Brexit) हो जाए।
- 2020 : यूनाइटेड किंगडम ने यूरोपीय संघ छोड़ा। ब्रिटेन यूरोपीय संघ से बाहर (Brexit - British exit)।

❖ दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों का संगठन (आसियान)-

- 1967 में दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्र के पाँच देशों- इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलिपींस, सिंगापुर और थाईलैंड ने 'बैंकॉक घोषणा' (Bangkok Declaration) पर हस्ताक्षर करके 'दक्षिण-पूर्व एशियाई राष्ट्र संगठन' (Association of South East Asian Nations) अर्थात् 'आसियान' (ASEAN) की स्थापना की।
- बाद में ब्रुनेई दारुस्सलाम, वियतनाम, लाओस, म्यांमार और कंबोडिया भी आसियान में शामिल हो गए तथा इसकी सदस्य संख्या दस हो गई।
- आसियान झंडे में अंकित प्रतीक-चिह्न (Logo) में 'धान की दस बालियाँ' दक्षिण-पूर्व एशिया के दस देशों को इंगित करती हैं, जो आपस में मित्रता और एकता के धागे से बंधे हैं। 'वृत्त' आसियान की एकता का प्रतीक है।
- 'आसियान' का उद्देश्य मुख्य रूप से आर्थिक विकास को तेज करना और उसके माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक विकास हासिल करना था।
- अनौपचारिक, टकरावरहित और सहयोगात्मक मेल-मिलाप का नया उदाहरण पेश करके आसियान ने काफी यश कमाया है।
- आसियान सदस्यों के अनौपचारिक और सहयोगपूर्ण कामकाज की शैली को 'आसियान शैली' (ASEAN way) कहा जाता है।
- आसियान के कामकाज में राष्ट्रीय सार्वभौमिकता का सम्मान करना बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहा है।
- आसियान देशों ने शांति, निष्पक्षता, सहयोग, अहस्तक्षेप को बढ़ावा देने और राष्ट्रों के संप्रभुता के अधिकारों का सम्मान करने पर अपनी वचनबद्धता जाहिर की।
- आसियान के देशों की सुरक्षा और विदेश नीतियों में तालमेल बनाने के लिए आसियान देशों ने 1994 में 'आसियान क्षेत्रीय मंच' (ASEAN Regional Forum : ARF) की स्थापना की।
- बुनियादी रूप से आसियान एक आर्थिक संगठन था और वह ऐसा ही बना रहा।
- आसियान आर्थिक समुदाय (ASEAN Economic Community) का उद्देश्य आसियान देशों का साझा बाज़ार और उत्पादन आधार तैयार करना तथा इस इलाके के सामाजिक और आर्थिक विकास में मदद करना है।
- आसियान ने निवेश, श्रम और सेवाओं के मामले में मुक्त व्यापार क्षेत्र (Free Trade Area : FTA) बनाने पर भी ध्यान दिया है।
- तेज़ी से बढ़ते एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्रीय संगठन 'आसियान' के 'विजन 2020' (Vision 2020) दस्तावेज़ में 'अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में आसियान की एक बहिर्मुखी भूमिका' को प्रमुखता दी गई है। इसी नतीजा है कि आसियान ने कंबोडिया के टकराव को समाप्त किया और पूर्वी तिमोर के संकट को सम्भाला है।
- शुरुआती वर्षों में भारतीय विदेश नीति ने आसियान पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया, लेकिन हाल के वर्षों में भारत ने अपनी नीति सुधारने की कोशिश की है और भारत ने कुछ आसियान सदस्यों के साथ मुक्त व्यापार का समझौता किया है।
- 2010 में आसियान-भारत मुक्त व्यापार क्षेत्र व्यवस्था लागू हुई।
- भारत ने 1991 से 'लुक ईस्ट' (Look East) नीति और 2014 से 'एक्ट ईस्ट' (Act East) नीति अपनायी, जिससे पूर्वी एशिया के देशों (आसियान देशों, चीन, जापान और दक्षिण कोरिया) से उसके आर्थिक संबंधों में बढ़ोत्तरी हुई है।
- आसियान की असली ताकत अपने सदस्य देशों, सहभागी सदस्यों और बाकी गैर-क्षेत्रीय संगठनों के बीच निरंतर संवाद और परामर्श करने की नीति में है।

☞ 'आसियान' एशिया का एकमात्र ऐसा क्षेत्रीय संगठन है, जो एशियाई देशों और विश्व शक्तियों को राजनैतिक और सुरक्षा मामलों पर चर्चा के लिए राजनैतिक मंच उपलब्ध कराता है।

❖ चीनी अर्थव्यवस्था का उत्थान-

☞ माओ के नेतृत्व में 1949 में हुई साम्यवादी क्रांति के बाद 'चीनी जनवादी गणराज्य' (People's Republic of China) की स्थापना के समय यहाँ की आर्थिकी 'सोवियत मॉडल' (Soviet model) पर आधारित थी।

☞ इस मॉडल के चलते चीन ने मजबूत औद्योगिक अर्थव्यवस्था खड़ी करने हेतु उपलब्ध सारे संसाधनों का इस्तेमाल किया।

☞ आर्थिक रूप से पिछड़े साम्यवादी चीन ने पूँजीवादी दुनिया से अपने रिश्ते तोड़ लिए।

☞ चीन द्वारा अपनाए गए 'विकास मॉडल' में खेती से पूँजी निकाल कर सरकारी नियंत्रण में बड़े उद्योग खड़े करने पर जोर था।

☞ चीनी अर्थव्यवस्था का विकास भी 5 से 6 फीसदी की दर से हुआ, लेकिन इनकी तेज वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर इनकी विकास दर पर पानी फेर रही थी और बढ़ती आबादी विकास के लाभ से वंचित रहे जा रही थी।

☞ इनकी खेती की पैदावार उद्योगों की ज़रूरत पूरी नहीं कर पा रही थी, जिसके कारण इनका औद्योगिक उत्पादन पर्याप्त तेजी से नहीं बढ़ रहा था और प्रति व्यक्ति आय बहुत कम थी।

☞ इसी कारण चीनी नेतृत्व ने 1970 के दशक में कुछ बड़े नीतिगत निर्णय लिए, जिसके तहत् चीन ने 1972 में अमरीका से संबंध बनाकर अपने राजनैतिक और आर्थिक एकांतवास को खत्म किया।

☞ 1973 में चीनी प्रधानमंत्री चाऊ एनलाई (Zhou Enlai) ने कृषि (Agriculture), उद्योग (Industry), सेना (Military) और विज्ञान-प्रौद्योगिकी (Science and technology) के क्षेत्र में आधुनिकीकरण के चार प्रस्ताव रखे।

☞ 1978 में तत्कालीन नेता देंग श्याओपेंग (Deng Xiaoping) ने चीन में आर्थिक सुधारों और 'खुले द्वार की नीति' (Open door policy) की घोषणा की।

☞ चीन ने 'आघात चिकित्सा' या 'शॉक थेरेपी' (Shock therapy) पर अमल करने के बजाय अपनी अर्थव्यवस्था को चरणबद्ध ढंग से खोला।

☞ 1978 के बाद से जारी चीन की आर्थिक सफलता ने चीन को एक महाशक्ति के रूप में उभरने में भूमिका अदा की है।

☞ आर्थिक सुधारों की शुरुआत के बाद से चीन सबसे ज़्यादा तेजी से आर्थिक वृद्धि कर रहा है और माना जा रहा है कि 2040 तक वह दुनिया की सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति, अमरीका से भी आगे निकल जाएगा।

☞ इसकी विशाल आबादी, बड़ा भू-भाग, उपलब्ध संसाधन, क्षेत्रीय अवस्थिति, राजनैतिक प्रभाव तथा तेज आर्थिक वृद्धि ने चीन के प्रभाव को कई गुना बढ़ा दिया है।

☞ आर्थिक स्तर पर अपने पड़ोसी मुल्कों से जुड़ाव के चलते क्षेत्रीय मामलों में चीन का प्रभाव बहुत बढ़ गया है।

☞ चीन में 1982 में खेती का और 1998 में उद्योगों का निजीकरण किया गया।

☞ कृषि के निजीकरण के कारण कृषि-उत्पादों तथा ग्रामीण आय में उल्लेखनीय बढ़ोत्तरी हुई।

☞ ग्रामीण उद्योगों की तादाद बड़ी तेजी से बढ़ी।

☞ उद्योग और कृषि दोनों ही क्षेत्रों में चीन की अर्थव्यवस्था की वृद्धि-दर तेज रही।

☞ विशेष आर्थिक क्षेत्रों अर्थात् स्पेशल इकॉनामिक ज़ोन (SEZ) के निर्माण से विदेशी व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

☞ चीन पूरे विश्व में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए सबसे आकर्षक देश बनकर उभरा।

☞ चीन ने आसियान देशों की अर्थव्यवस्था को काफी मदद की है।

☞ लातिनी अमरीका और अफ्रीका में निवेश और मदद की चीनी नीतियाँ बताती हैं कि विकासशील देशों के मामले में चीन एक नई विश्व शक्ति के रूप में उभरता जा रहा है।

☞ चीन 2001 में विश्व व्यापार संगठन (WTO) में शामिल हो गया।

☞ हालाँकि क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर चीन एक ऐसी जबरदस्त आर्थिक शक्ति बनकर उभरा है कि सभी उसका लोहा मानने लगे हैं। यह सब होने के बावजूद चीन में हर किसी को सुधारों का लाभ नहीं मिला है। चीन में बेरोजगारी बढ़ी है।

☞ वहाँ महिलाओं के रोजगार और काम करने के हालात काफी खराब हैं।

☞ पर्यावरण के नुकसान और भ्रष्टाचार के बढ़ने जैसे परिणाम भी वहाँ सामने आए।

❖ चीन के साथ भारत के संबंध-

☞ पश्चिमी साम्राज्यवाद के उदय से पहले भारत हो या चीन, इनका प्रभाव सिर्फ राजनैतिक नहीं था, बल्कि आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक भी था, परन्तु चीन और भारत अपने प्रभाव क्षेत्रों के मामले में कभी टकराए नहीं थे।

☞ भारत की आज़ादी के बाद यह उम्मीद थी कि भारत एवं चीन, दोनों मुल्क साथ आकर विकासशील दुनिया और खास तौर से एशिया के भविष्य को तय करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

☞ एक वक्त 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' का नारा भी लोकप्रिय हुआ था, लेकिन सीमा विवाद पर दोनों के बीच चले सैन्य संघर्ष ने इस उम्मीद को समाप्त कर दिया।

TPROSITY

☞ 1950 में चीन द्वारा तिब्बत को हड़पने तथा भारत-चीन सीमा पर बस्तियाँ बनाने के फैसले से दोनों देशों के बीच संबंध एकदम गड़बड़ हो गए।

☞ भारत और चीन दोनों देश अरुणाचल प्रदेश के कुछ इलाकों और लद्दाख के अक्साई-चिन क्षेत्र पर प्रतिस्पर्धी दावों के चलते 1962 में लड़ पड़े।

☞ 1962 के युद्ध में भारत को सैनिक पराजय झेलनी पड़ी और 1976 तक दोनों देशों के बीच कूटनैतिक संबंध समाप्त ही रहे।

☞ 1970 के दशक के उत्तरार्द्ध में चीन में राजनीतिक नेतृत्व बदलने के बाद 1981 में सीमा विवादों को दूर करने के लिए दोनों के बीच वार्ताओं की श्रृंखला शुरू हुई।

☞ दिसम्बर 1988 में राजीव गांधी द्वारा चीन का दौरा करने से भारत-चीन सम्बन्धों को सुधारने के प्रयासों को बढ़ावा मिला।

☞ शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद से भारत-चीन संबंधों में महत्त्वपूर्ण बदलाव आया है।

☞ दोनों देशों ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान, विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में परस्पर सहयोग और व्यापार के लिए सीमा पर चार पोस्ट खोलने के समझौते भी किए।

☞ 1999 से भारत और चीन के बीच व्यापार 30 फीसदी सालाना की दर से बढ़ रहा है। चीन और भारत के बीच द्विपक्षीय व्यापार 2017 में 84 अरब डॉलर का हो चुका है।

☞ भारत और चीन ने विश्व व्यापार संगठन जैसे अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संगठनों के संबंध में एक जैसी नीतियाँ अपनायी हैं।

☞ पाकिस्तान के परमाणु हथियार कार्यक्रम में चीन को मददगार माना जाता है। बांग्लादेश और म्यांमार से चीन के सैनिक संबंधों को भी दक्षिण एशिया में भारतीय हितों के खिलाफ माना जाता है, परन्तु इसमें से कोई भी मुद्दा दोनों मुल्कों अर्थात् भारत एवं चीन में टकराव करवा देने लायक नहीं माना जाता।

☞ हालाँकि हाल के समय में दोनों देशों के बीच संबंधों में गिरावट आई है। इसके कारण सीमा-विवाद, चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा और संयुक्त राष्ट्र में आतंकवाद विरोधी भारतीय प्रस्ताव के विरुद्ध चीन द्वारा पाकिस्तान को समर्थन देना आदि हैं।

❖ जापान-

☞ आबादी के लिहाज से जापान का विश्व में ग्यारहवाँ स्थान है।

☞ जापान के पास प्राकृतिक संसाधन कम हैं और वह ज्यादातर कच्चे माल का आयात करता है। बावजूद इसके, दूसरे विश्वयुद्ध के बाद जापान ने बड़ी तेजी से प्रगति की।

☞ जापान 1964 में 'आर्थिक सहयोग तथा विकास संगठन' (Organisation for Economic Cooperation and Development : OECD) का सदस्य बना।

☞ 2017 में जापान की अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।

☞ एशिया के देशों में अकेला जापान ही 'समूह-7' (G-7) के देशों में शामिल है।

☞ परमाणु बम की विभीषिका झेलने वाला एकमात्र देश जापान है।

☞ जापान संयुक्त राष्ट्रसंघ के बजट में 10 प्रतिशत का योगदान करता है। UNO के बजट में अंशदान करने के लिहाज से जापान दूसरा सबसे बड़ा देश है।

☞ जापान का सैन्य व्यय उसके सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का केवल 1 प्रतिशत है, फिर भी सैन्य व्यय के लिहाज से विश्व में जापान का सातवाँ स्थान है।

☞ सोनी, पैनासोनिक, कैनन, सुजुकी, होंडा, ट्योटा और माज़्दा प्रसिद्ध जापानी ब्रांड हैं।

❖ दक्षिण कोरिया-

☞ कोरियाई प्रायद्वीप को द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में 'दक्षिण कोरिया' (Republic of Korea) और 'उत्तरी कोरिया' (Democratic People's Republic of Korea) में 38वें समानांतर (38th Parallel) के साथ-साथ विभाजित किया गया था।

☞ 1950-53 के दौरान कोरियाई युद्ध और शीत युद्ध ने दोनों पक्षों के बीच प्रतिद्वंदिता को तेज़ कर दिया।

☞ 17 सितंबर 1991 को दोनों कोरिया संयुक्त राष्ट्र के सदस्य बने।

☞ 1960 से 1980 के दशक के बीच, दक्षिण कोरिया का आर्थिक शक्ति के रूप में तेज़ी से विकास हुआ, जिसे "हान नदी पर चमत्कार" (Miracle on the Han River) कहा जाता है।

☞ दक्षिण कोरिया 1996 में OECD का सदस्य बना।

☞ 2017 में दक्षिण कोरिया की अर्थव्यवस्था दुनिया में ग्यारहवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और सैन्य खर्च में इसका दसवाँ स्थान है।

☞ मानव विकास रिपोर्ट 2016 के अनुसार दक्षिण कोरिया का मानव विकास सूचकांक (Human Development Index : HDI) 18 है।

☞ सैमसंग, एलजी और हुंडई जैसे दक्षिण कोरियाई ब्रांड भारत में प्रसिद्ध हैं।

XII Class

Pol. Science

समकालीन दक्षिण एशिया
(समकालीन विश्व राजनीति)

Chapter Summary- 3

❖ अमूमन बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका को इंगित करने के लिए 'दक्षिण एशिया' पद का व्यवहार किया जाता है।

☞ इस क्षेत्र की चर्चा में यदा-कदा अफ़गानिस्तान और म्यांमार को भी शामिल किया जाता है।

☞ चीन इस क्षेत्र का एक प्रमुख देश है, लेकिन चीन को दक्षिण एशिया का अंग नहीं माना जाता।

☞ दक्षिण एशिया एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ सद्भाव और शत्रुता, आशा और निराशा तथा पारस्परिक शंका और विश्वास साथ-साथ बसते हैं।

☞ दक्षिण एशिया के विभिन्न देशों में एक-सी राजनीतिक प्रणाली नहीं है।

☞ भारत और श्रीलंका में ब्रिटेन से आज़ाद होने के बाद, लोकतांत्रिक व्यवस्था सफलतापूर्वक कायम है।

☞ एक राष्ट्र के रूप में भारत हमेशा लोकतांत्रिक रहा है।

☞ पाकिस्तान और बांग्लादेश में लोकतांत्रिक और सैनिक दोनों तरह के नेताओं का शासन रहा है।

☞ शीतयुद्ध के बाद के सालों में बांग्लादेश में लोकतंत्र कायम रहा।

☞ पाकिस्तान में शीतयुद्ध के बाद के सालों में लगातार दो लोकतांत्रिक सरकारें- बेनज़ीर भुट्टो और नवाज़ शरीफ़ के नेतृत्व में बनीं।

☞ सन् 1999 में पाकिस्तान में सैनिक तख्तापलट हुआ। सन् 2008 से फिर से यहाँ लोकतांत्रिक-शासन है।

☞ सन् 2006 तक नेपाल में संवैधानिक राजतंत्र था। सन् 2008 में राजतंत्र को खत्म किया और नेपाल एक लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में उभरा।

☞ दक्षिण एशिया के दो सबसे छोटे देशों- भूटान और मालदीव में भी ऐसे ही बदलाव की बयार बह रही है।

☞ भूटान सन् 2008 में संवैधानिक राजतंत्र बन गया। राजा के नेतृत्व में यहाँ बहुदलीय लोकतंत्र उभरा।

☞ मालदीव वर्ष 1968 तक सल्तनत हुआ करता था। सन् 1968 में यह एक गणतंत्र बना और यहाँ शासन की अध्यक्षात्मक प्रणाली अपनायी गयी।

☞ जून, 2005 में मालदीव की संसद ने बहुदलीय प्रणाली को अपनाने के पक्ष में एकमत से मतदान किया। मालदीवियन डेमोक्रेटिक पार्टी (एमडीपी) का देश के राजनीतिक मामलों में दबदबा है।

☞ बीसवीं सदी के आख़िरी सालों में भारत और पाकिस्तान ने खुद को परमाणु शक्ति-संपन्न राष्ट्रों की बिरादरी में बैठा लिया।

☞ दक्षिण एशिया क्षेत्र के कई देशों के बीच सीमा और नदी जल के बँटवारे को लेकर विवाद कायम है। इसके अतिरिक्त विद्रोह, जातीय संघर्ष और संसाधनों के बँटवारे को लेकर होने वाले झगड़े भी हैं।

❖ येगेनी डेलाक्रो (Eugene Delacroix) ने सन् 1830 में एक पेंटिंग बनायी थी, जिसका शीर्षक था-'लिबर्टी लीडिंग द पीपल' (Liberty Leading the People)। पेंटिंग में स्वतंत्रता की देवी को जनता की अगुआई करते हुए चित्रित किया गया था।

❖ यूएनडीपी की मानव विकास रिपोर्ट, 2018 के अनुसार भारत की स्थिति-

जन्म के समय आयु प्रत्याशा (वर्षों में)	जीडीपी (2011 तुलनात्मक क्रय शक्ति, $ में)	बाल मृत्यु दर (प्रति हज़ार बच्चे)	मानव विकास सूची में
2017	2017	2016	स्थान
68.8	6,427	34.6	130

☞ जन्म के समय आयु प्रत्याशा के मामले में श्रीलंका, नेपाल और बांग्लादेश की स्थिति भारत से 'बेहतर' है, जबकि पाकिस्तान (66.6 वर्ष) की स्थिति 'निम्न' (Lower) है।

☞ जीडीपी (2011 तुलनात्मक क्रय शक्ति, $ में) 2017 रिपोर्ट के अनुसार श्रीलंका ($ 11,669) की स्थिति भारत से 'बेहतर' है।

☞ UNDP द्वारा प्रकाशित मानव विकास सूची-2018 (Human Development Index : HDI) में स्थान की दृष्टि से बांग्लादेश (136 वाँ स्थान), नेपाल (149 वाँ स्थान) और पाकिस्तान (150 वाँ स्थान) की रैंक भारत (130 वाँ स्थान) से 'नीची' है, जबकि श्रीलंका (76 वाँ स्थान) की रैंक 'ऊपर' है।

❖ दक्षिण एशिया का घटनाक्रम-

☞ 1947- भारत और पाकिस्तान का स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उदय।

☞ 1948- कश्मीर को लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच लड़ाई।

☞ 1948- श्रीलंका (तत्कालीन सिलोन) को आज़ादी मिली।

☞ 1954-55- पाकिस्तान 'सिएटो' (SEATO) और 'सेंटो' (CENTO) गुट में शामिल हुआ।

☞ सितंबर, 1960- भारत और पाकिस्तान ने सिंधु जल समझौते पर हस्ताक्षर किए।

☞ 1962- भारत और चीन के बीच सीमा-विवाद और युद्ध।

☞ 1965- भारत-पाक युद्ध।

☞ 1966- भारत और पाकिस्तान के बीच ताशकंद समझौता।

☞ अगस्त, 1971- भारत और सोवियत संघ ने 20 सालों के लिए मैत्री संधि पर दस्तख़त किए।

☞ दिसंबर, 1971- भारत-पाक युद्ध; बांग्लादेश की मुक्ति।

☞ जुलाई, 1972- भारत और पाकिस्तान के बीच शिमला-समझौता।

☞ मई, 1974- भारत ने परमाणु-परीक्षण किए।

☞ 7-8 दिसंबर, 1985- 'दक्षेस' का पहला शिखर सम्मेलन ढाका (बांग्लादेश) में सम्पन्न।

☞ 1987- भारत-श्रीलंका समझौता; भारतीय शांति सेना का श्रीलंका में अभियान (1987-90)।

☞ 1988- मालदीव में भारत ने सेना भेजी।

☞ 1993- 'दक्षेस' के सातवें सम्मेलन, ढाका में आपसी व्यापार में दक्षेस के देशों को वरीयता देने की संधि (SAPTA) पर हस्ताक्षर।

☞ दिसंबर, 1996- गंगा नदी के पानी में हिस्सेदारी के मसले पर भारत और बांग्लादेश के बीच फरक्का संधि पर हस्ताक्षर हुए।

☞ मई, 1998- भारत और पाकिस्तान ने परमाणु परीक्षण किए।

☞ फरवरी, 1999- भारत के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की लाहौर बस-यात्रा और एक शांति के घोषणापत्र पर हस्ताक्षर।

☞ जून-जुलाई, 1999- भारत और पाकिस्तान के बीच करगिल-युद्ध।

☞ जुलाई, 2001- वाजपेयी-मुशर्रफ के बीच आगरा-बैठक।

☞ फरवरी, 2004- इस्लामाबाद (पाकिस्तान) में 12वें दक्षेस सम्मेलन में 'दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र' (South Asian Free Trade Area- SAFTA) समझौते/सन्धि पर हस्ताक्षर हुए।

☞ 2007- अफ़गानिस्तान दक्षेस का सदस्य बना।

☞ नवंबर, 2014- 18वां दक्षेस सम्मेलन काठमांडू (नेपाल) में आयोजित।

❖ पाकिस्तान में सेना और लोकतंत्र-

☞ पाकिस्तान में पहले संविधान के बनने के बाद देश के शासन की बाग़डोर जनरल अयूब खान ने अपने हाथों में ले ली।

☞ उनके शासन के खिलाफ़ जनता का गुस्सा भड़का और उन्हें अपना पद छोड़ना पड़ा। इससे बाद सैनिक शासन की स्थापना हुई और जनरल याहिया खान ने शासन की बागडोर संभाली।

☞ सन् 1971 में भारत के साथ पाकिस्तान का युद्ध हुआ। युद्ध के परिणामस्वरूप पूर्वी पाकिस्तान टूटकर एक स्वतंत्र देश बना और बांग्लादेश कहलाया।

☞ इसके बाद पाकिस्तान में जुल्फ़िकार अली भुट्टो के नेतृत्व में एक निर्वाचित सरकार बनी, जो 1971 से 1977 तक कायम रही।

☞ 1977 में जनरल जियाउल-हक ने इस सरकार को गिरा दिया। आगे चलकर जियाउल-हक को लोकतंत्र-समर्थक आंदोलन का सामना करना पड़ा और 1988 में एक बार फिर 'पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी' की बेनज़ीर भुट्टो के नेतृत्व में लोकतांत्रिक सरकार बनी।

☞ 1999 में सेना के दखल से जनरल परवेज़ मुशर्रफ ने तत्कालीन प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ को हटा दिया और 2001 में परवेज़ मुशर्रफ ने अपना निर्वाचन राष्ट्रपति के रूप में करवा लिया।

☞ पाकिस्तान में लोकतंत्र के स्थायी न बन पाने के कई कारण हैं। यहाँ सेना, धर्मगुरु और भूस्वामी अभिजनों का सामाजिक दबदबा है। इसकी वज़ह से कई बार निर्वाचित सरकारों को गिराकर सैनिक शासन कायम हुआ।

☞ अमरीका तथा अन्य पश्चिमी देशों ने अपने-अपने स्वार्थों से गुज़रे वक्त में पाकिस्तान में सैनिक शासन को बढ़ावा दिया है।

❖ बांग्लादेश में लोकतंत्र-

☞ सन् 1947 से 1971 तक बांग्लादेश पाकिस्तान का अंग था।

☞ इस क्षेत्र की जनता ने प्रशासन में न्यायोचित प्रतिनिधित्व तथा राजनीतिक सत्ता में समुचित हिस्सेदारी की माँग भी उठायी।

☞ इस क्षेत्र के लोग पश्चिमी पाकिस्तान के दबदबे और अपने ऊपर उर्दू भाषा को लादने के ख़िलाफ़ थे। यहाँ के लोग बंगाली संस्कृति और भाषा के साथ किए जा रहे दुर्व्यवहार का विरोध करते थे।

☞ पश्चिमी पाकिस्तान के प्रभुत्व के खिलाफ़ जन-संघर्ष का नेतृत्व शेख मुजीबुर्रहमान ने किया।

☞ शेख मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व वाली 'अवामी लीग' को 1970 के चुनावों में पूर्वी पाकिस्तान की सारी सीटों पर विजय मिली।

☞ इसके बाद शेख़ मुज़ीब को गिरफ्तार कर लिया गया। जनरल याहिया खान के सैनिक शासन में पाकिस्तानी सेना ने बंगाली जनता के आंदोलन को कुचलने की कोशिश की। इसी दरम्यान पूर्वी पाकिस्तान से बड़ी संख्या में लोग भारत पलायन कर गए। भारत ने पूर्वी पाकिस्तान के लोगों की आज़ादी की माँग का समर्थन किया।

☞ वर्ष 1971 में भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध छिड़ गया। युद्ध की समाप्ति पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तानी सेना के आत्मसमर्पण तथा एक स्वतंत्र राष्ट्र 'बांग्लादेश' के निर्माण के साथ हुई।

☞ 1975 में शेख मुजीबुर्रहमान ने संविधान में संशोधन करवा कर संसदीय प्रणाली की जगह अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली को अपनाया।

☞ शेख मुजीबुर्रहमान ने अपनी पार्टी 'अवामी लीग' को छोड़कर अन्य सभी पार्टियों को समाप्त कर दिया। इससे तनाव और संघर्ष की स्थिति पैदा हुई।

☞ अगस्त, 1975 में सेना ने उनके ख़िलाफ बग़ावत कर दी और शेख मुज़ीब सेना के हाथों मारे गए।

☞ सैनिक-शासक जियाउर्रहमान ने अपनी 'बांग्लादेश नेशनल पार्टी' बनायी और सन् 1979 के चुनाव में विजयी रहे।

☞ बाद में जियाउर्रहमान की हत्या हुई और लेफ्टिनेंट ज़नरल एच एम इरशाद के नेतृत्व में बांग्लादेश में एक और सैनिक-शासन ने बागडोर संभाली।

☞ वर्ष 1990 में लेफ्टिनेंट जनरल इरशाद को राष्ट्रपति का पद छोड़ना पड़ा।

☞ सन् 1991 में चुनाव हुए। इसके बाद से बांग्लादेश में बहुदलीय चुनावों पर आधारित प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्र कायम है।

❖ नेपाल में राजतंत्र और लोकतंत्र-

☞ नेपाल अतीत में एक हिन्दू-राज्य था।

☞ आधुनिक काल में कई सालों तक यहाँ संवैधानिक राजतंत्र रहा।

☞ 1990 के दशक में नेपाल के माओवादी नेपाल के अनेक हिस्सों में अपना प्रभाव जमाने में कामयाब हुए। माओवादी, राजा और सत्ताधारी अभिजन के खिलाफ़ सशस्त्र विद्रोह करना चाहते थे।

☞ एक मजबूत लोकतंत्र-समर्थक आंदोलन की चपेट में आकर राजा ने 1990 में नए लोकतांत्रिक संविधान की माँग मान ली।

☞ 2002 में राजा ने संसद को भंग कर दिया और सरकार को गिरा दिया।

☞ अप्रैल 2006 में यहाँ देशव्यापी लोकतंत्र-समर्थक प्रदर्शन हुए। संघर्षरत लोकतंत्र-समर्थक शक्तियों ने अपनी पहली बड़ी जीत उस समय हासिल की, जब राजा ज्ञानेन्द्र ने बाध्य होकर संसद को बहाल किया। इसे अप्रैल, 2002 में भंग कर दिया गया था।

☞ इस प्रतिरोध का नेतृत्व 'सात दलों के गठबंधन' (सेवन पार्टी अलाएंस), माओवादी तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं ने किया।

☞ वर्ष 2008 में नेपाल राजतंत्र को खत्म करने के बाद लोकतांत्रिक गणराज्य बन गया।

☞ वर्ष 2015 में नेपाल ने नया संविधान अपनाया।

❖ श्रीलंका में जातीय संघर्ष-

☞ वर्ष 1948 में मिली आजादी के बाद से लेकर अब तक श्रीलंका में लोकतंत्र कायम है।

☞ श्रीलंका को पहले 'सिलोन' कहा जाता था।

☞ आज़ादी के बाद से श्रीलंका की राजनीति पर बहुसंख्यक सिंहली समुदाय के हितों की नुमाइंदगी करे वालों का दबदबा रहा है। ये लोग भारत छोड़कर श्रीलंका आ बसी एक बड़ी तमिल आबादी के खिलाफ़ हैं।

☞ तमिलों के प्रति उपेक्षा भरे बरताव से एक उग्र तमिल राष्ट्रवाद की आवाज़ बुलंद हुई।

☞ सन् 1983 के बाद से उग्र तमिल संगठन 'लिबरेशन टाइगर्स ऑव तमिल ईलम' (लिट्टे/ Liberation Tigers of Tamil Eelam- LTTE) श्रीलंकाई सेना के साथ सशस्त्र संघर्ष कर रहा है। इसने 'तमिल ईलम' यानी श्रीलंका के तमिलों के लिए एक अलग देश की माँग की है। श्रीलंका के उत्तर-पूर्वी हिस्से पर लिट्टे का नियंत्रण है।

☞ श्रीलंका की समस्या भारतवंशी लोगों से जुड़ी है। भारत की तमिल जनता का भारतीय सरकार पर भारी दबाव है कि वह श्रीलंकाई तमिलों के हितों की रक्षा करे।

☞ सन् 1987 में भारतीय सरकार श्रीलंका के तमिल मसले में प्रत्यक्ष रूप से शामिल हुई। भारत की सरकार ने श्रीलंका से एक समझौता किया तथा श्रीलंका सरकार और तमिलों के बीच रिश्ते सामान्य करने के लिए भारतीय सेना को भेजा।

☞ आखिर में भारतीय सेना लिट्टे के साथ संघर्ष में फंस गई।

☞ भारतीय सेना की श्रीलंका में उपस्थिति को वहाँ की जनता ने कुछ ख़ास पसंद नहीं किया, क्योंकि श्रीलंकाई जनता ने समझा कि भारत श्रीलंका के अंदरूनी मामलों में दखलंदाजी कर रहा है।

☞ वर्ष 1989 में भारत ने अपनी 'शांति सेना' लक्ष्य हासिल किए बिना वापस बुला ली।

☞ अंतत: सशस्त्र संघर्ष समाप्त हो गया, क्योंकि 2009 में लिट्टे को खत्म कर दिया गया।

☞ संघर्षों की चपेट में होने के बाद भी श्रीलंका ने विकास के उच्च स्तर को हासिल किया है। कई सालों से इस देश का प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद दक्षिण एशिया में सबसे ज्यादा है।

☞ दक्षिण एशिया के देशों में सबसे पहले श्रीलंका ने ही अपनी अर्थव्यवस्था का उदारीकरण किया।

☞ अंदरूनी संघर्ष के बावजूद श्रीलंका ने लोकतांत्रिक राजव्यवस्था कायम रखी है।

❖ भारत और श्रीलंका–

☞ 1987 के सैन्य हस्तक्षेप के बाद से भारतीय सरकार श्रीलंका के अंदरूनी मामलों में असलंग्नता की नीति पर अमल कर रही है।

☞ भारत सरकार ने श्रीलंका के साथ एक मुक्त व्यापार समझौते पर दस्तखत किए हैं।

☞ श्रीलंका में 'सुनामी' से हुई तबाही के बाद के पुनर्निर्माण कार्यों में भारतीय मदद से भारत एवं श्रीलंका एक दूसरे के करीब आए हैं।

❖ भारत और पाकिस्तान के बीच विवाद के मुद्दे–

☞ दक्षिण एशिया में भारत की स्थिति केंद्रीय है और इस वजह से इनमें से अधिकांश संघर्षों का रिश्ता भारत से है। इन संघर्षों में सबसे प्रमुख संघर्ष भारत और पाकिस्तान के बीच का संघर्ष है।

☞ विभाजन के तुरंत बाद दोनों देश कश्मीर के मसले पर लड़ पड़े।

☞ भारत और पाकिस्तान के बीच सन् 1947–48 के युद्ध के फलस्वरूप कश्मीर के दो हिस्से हो गए। एक हिस्सा 'पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर' (Pakistan-occupied Kashmir- PoK) कहलाया, जबकि दूसरा हिस्सा भारत का जम्मू-कश्मीर प्रान्त बना।

☞ भारत और पाकिस्तान के बीच 1947–48 तथा 1965 के युद्ध के बाद भी इस मसले का समाधान नहीं हुआ। 1971 में भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ युद्ध जीता, लेकिन कश्मीर मसला अनसुलझा ही रहा।

☞ सामरिक मसलों जैसे सियाचिन ग्लेशियर पर नियंत्रण तथा हथियारों की होड़ को लेकर भी भारत और पाकिस्तान के बीच तनातनी रहती है।

☞ भारत और पाकिस्तान के बीच नदी-जल के बँटवारे के सवाल पर भी तनातनी हुई है। वर्ष 1960 तक दोनों के बीच सिन्धु नदी के इस्तेमाल को लेकर तीखे विवाद हुए।

☞ वर्ष 1960 में विश्व बैंक की मदद से भारत और पाकिस्तान ने 'सिंधु-जल संधि' पर दस्तख़त किए।

☞ कच्छ के रन में सरक्रिक की सीमा रेखा को लेकर दोनों देशों के बीच मतभेद हैं।

☞ 1998 में भारत ने पोखरण में और फिर पाकिस्तान ने चगाई पहाड़ी पर परमाणु-परीक्षण किए। यहाँ दोनों देशों के बीच हथियारों की होड़ नजर आई।

☞ भारत सरकार का आरोप रहा है कि पाकिस्तान कश्मीरी उग्रवादियों को हथियार, प्रशिक्षण और धन देता है तथा भारत पर आतंकवादी हमले के लिए उन्हें सुरक्षा प्रदान करता है।

☞ पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी 'इंटर सर्विसेज इंटेलीजेंस' (आईएसआई) पर पूर्वोत्तर भारत में भारत-विरोधी अभियानों में संलग्न होने का आरोप है।

❖ भारत और बांग्लादेश के रिश्ते-

☞ बांग्लादेश और भारत के बीच गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी के जल में हिस्सेदारी सहित कई मुद्दों पर मतभेद हैं।

☞ भारतीय सरकारों के बांग्लादेश से नाखुश होने के कारणों में भारत में अवैध आप्रवास पर ढाका के खंडन, भारत-विरोधी इस्लामी कट्टरपंथी जमातों को समर्थन, भारतीय सेना को पूर्वोत्तर भारत में जाने के लिए अपने इलाके से रास्ता देने से बांग्लादेश के इंकार, ढाका के भारत को प्राकृतिक गैस निर्यात न करने के फैसले तथा म्यांमार को बांग्लादेशी इलाके से होकर भारत को प्राकृतिक गैस निर्यात न करने देने जैसे मसले शामिल हैं।

☞ भारत की सरकार पर चटगाँव पर्वतीय क्षेत्र में विद्रोह को हवा देने, बांग्लादेश के प्राकृतिक गैस में सेंधमारी करने और व्यापार में बेईमानी बरतने के आरोप हैं।

❖ बांग्लादेश भारत के 'लुक ईस्ट' और वर्ष 2014 से 'एक्ट ईस्ट' नीति का हिस्सा है। इस नीति के अन्तर्गत म्यांमार के ज़रिए दक्षिण-पूर्व एशिया से संपर्क साधने की बात है।

❖ भारत और नेपाल-

☞ भारत और नेपाल के बीच मधुर संबंध हैं और दोनों देशों के बीच एक संधि हुई है, जिसके तहत दोनों देशों के नागरिक एक-दूसरे के देश में बिना पासपोर्ट (पारपत्र) और वीज़ा के आ-जा सकते हैं और काम कर सकते हैं।

☞ आपदा-प्रबंधन और पर्यावरण के मसले पर भी दोनों देशों ने निरंतर सहयोग किया है।

☞ 2015 में दोनों ने कुछ परिक्षेत्रों (एन्केलेव) का आदान-प्रदान किया।

☞ ख़ास संबंधों के बावजूद दोनों देश के बीच अतीत में व्यापार से संबंधित मनमुटाव पैदा हुए हैं। नेपाल की चीन के साथ दोस्ती को लेकर भारत सरकार ने अक्सर अपनी अप्रसन्नता जतायी है।

☞ भारत की सुरक्षा एजेंसियाँ नेपाल में चल रहे माओवादी आंदोलन को अपनी सुरक्षा के लिए खतरा मानती हैं, क्योंकि भारत में बिहार से लेकर आन्ध्र प्रदेश तक विभिन्न प्रांतों में नक्सलवादी समूहों का उभार हुआ है।

☞ चारों तरफ से जमीन से घिरे नेपाल में कई लोग सोचते हैं कि भारत, नेपाल के अंदरूनी मामलों में दखल दे रहा है और उसके नदी जल तथा पनबिजली पर आँख गड़ाए हुए है।

☞ विभेदों के बावजूद भारत और नेपाल दोनों व्यापार, वैज्ञानिक सहयोग, साझे प्राकृतिक संसाधन, बिजली उत्पादन और जल प्रबंधन ग्रिड के मसले पर एक साथ हैं।

❖ भारत और भूटान-

☞ भारत के भूटान के साथ भी बहुत अच्छे रिश्ते हैं। भारत भूटान में पनबिजली की बड़ी परियोजनाओं में हाथ बँटा रहा है।

☞ भूटान से अपने काम का संचालन कर रहे पूर्वोत्तर भारत के उग्रवादियों और गुरिल्लों को भूटान ने अपने क्षेत्र से खदेड़ भगाया, जिससे भारत को बड़ी मदद मिली है।

☞ भूटान को विकास कार्यों के लिए सबसे ज्यादा अनुदान भारत से हासिल होता है।

❖ भारत और मालदीव-

☞ सन् 1988 में श्रीलंका से आए कुछ भाड़े के तमिल सैनिकों ने मालदीव पर हमला किया। मालदीव ने जब आक्रमण रोकने के लिए भारत से मदद माँगी तो भारतीय वायुसेना और नौसेना ने तुरंत कार्रवाई की।

☞ भारत ने मालदीव के आर्थिक विकास, पर्यटन और मत्स्य उद्योग में भी मदद की है।

❖ दक्षिण एशिया के सारे झगड़े सिर्फ भारत और उसके पड़ोसी देशों के बीच ही नहीं है। बांग्लादेश-म्यांमार के बीच रोहिंग्या लोगों के मसले पर भी मतभेद रहे हैं। बांग्लादेश-नेपाल के बीच हिमालयी नदियों के जल की हिस्सेदारी को लेकर खटपट है।

❖ दक्षेस (साउथ एशियन एसोशियन फॉर रिजनल कोऑपरेशन-SAARC) दक्षिण एशियाई देशों द्वारा बहुस्तरीय साधनों से आपस में सहयोग करने की दिशा में उठाया गया बड़ा कदम है।

☞ इसकी शुरुआत सन् 1985 में हुई।

☞ दक्षेस के सदस्य देशों ने सन् 2004 में 'दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार-क्षेत्र' (SAFTA) समझौते पर दस्तख़त किये। इसमें पूरे दक्षिण एशिया के लिए मुक्त व्यापार क्षेत्र बनाने का वायदा है।

☞ यह समझौता 1 जनवरी, 2006 से प्रभावी हो गया। इस समझौते का लक्ष्य है कि इन देशों के बीच आपसी व्यापार में लगने वाले सीमा शुल्क को कम कर दिया जाए।

❖ शीतयुद्ध के बाद दक्षिण एशिया में अमरीकी प्रभाव तेजी से बढ़ा है। अमरीका ने शीतयुद्ध के बाद भारत और पाकिस्तान दोनों से अपने संबंध बेहतर किए हैं। वह भारत-पाक के बीच लगातार मध्यस्थ की भूमिका निभा रहा है।

XII Class

Pol. Science

अंतर्राष्ट्रीय संगठन
(समकालीन विश्व राजनीति)

Chapter Summary- 4

❖ हमें अंतर्राष्ट्रीय संगठन क्यों चाहिए?

☞ अंतर्राष्ट्रीय संगठन युद्ध और शांति के मामलों में देशों की मदद करते हैं।

☞ ये संगठन समस्याओं के शांतिपूर्ण समाधान में सदस्य देशों की मदद करते हैं।

☞ राष्ट्रों के सामने कुछ मसले इतने चुनौतीपूर्ण होते हैं, कि उनसे तभी निपटा जा सकता है, जब सभी देश साथ मिलकर काम करें।

☞ हम 'ग्लोबल वार्मिंग' (विश्वव्यापी तापवृद्धि) और उसके प्रभावों की बात करें तो देखते हैं कि वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों के बढ़ने से तापमान बढ़ रहा है। इससे समुद्रतल की ऊँचाई बढ़ने का ख़तरा है। अगर ऐसा हुआ तो विश्व के समुद्रतटीय इलाके डूब जाऐंगे। अत: हर देश अपने-अपने तरीके से 'ग्लोबल वार्मिंग' के दुष्प्रभावों का समाधान ढूँढ़ सकता है। तब भी अंतत: सबसे प्रभावकारी समाधान तो यही है कि वैश्विक तापवृद्धि को रोका जाए।

☞ संयुक्त राष्ट्रसंघ को आज की दुनिया का सबसे महत्त्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संगठन माना जाता है। इसे 'यू एन' (United Nations) भी कहा जाता है।

☞ विश्व भर के बहुत-से लोगों की नज़र में यह संगठन शांति और प्रगति के प्रति मानवता की आशा का प्रतीक है।

☞ शीतयुद्ध के बाद के समय में विश्व की अर्थव्यवस्था के संदर्भ में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

❖ अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (इंटरनेशनल मॉनेटरी फंड/ International Monetary Fund- IMF) नामक संगठन वैश्विक स्तर की वित्त-व्यवस्था की देखरेख करता है और माँगे जाने पर वित्तीय तथा तकनीकी सहायता मुहैया करता है।

☞ 189 देश (12 अप्रैल, 2016 की स्थिति) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के सदस्य हैं।

☞ IMF के हर सदस्य की राय का वजन बराबर नहीं है। समूह-7 के सदस्यों के पास 41.29 प्रतिशत मत हैं। अकेले अमरीका के पास 16.52 प्रतिशत मताधिकार है।

☞ समूह-7 (Group of Seven OR G-7) के सदस्य निम्न हैं- अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान, जर्मनी, इटली और कनाडा।

❖ पहले विश्वयुद्ध के बाद 'राष्ट्र संघ' या 'लीग ऑव नेशंस' (League of Nations) का जन्म हुआ, लेकिन यह संगठन दूसरा विश्वयुद्ध (सन् 1939 से 1945 तक) न रोक सका।

☞ दूसरे विश्वयुद्ध की समाप्ति के तुरंत बाद सन् 1945 में संयुक्त राष्ट्र संघ स्थापित किया गया। 51 देशों द्वारा संयुक्त राष्ट्रसंघ के घोषणा-पत्र पर दस्तख़त करने के साथ इस संगठन की स्थापना हो गई।

❖ संयुक्त राष्ट्रसंघ का विकास-

☞ 'लीग ऑव नेशंस' के उत्तराधिकारी के रूप में सन् 1945 में संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई।

☞ संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना सम्बन्धी घटनाचक्र-

✍ अगस्त, 1941- अमरीकी राष्ट्रपति एफ.डी. रूजवेल्ट और ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल द्वारा 'अटलांटिक चार्टर' पर हस्ताक्षर किए गए।

✍ जनवरी 1942- 26 मित्र-राष्ट्र अटलांटिक चार्टर के समर्थन में वाशिंग्टन में मिले और दिसंबर 1943 में संयुक्त राष्ट्रसंघ की घोषणा (Declaration by United Nations) पर हस्ताक्षर हुए।

✍ फरवरी 1945- तीन बड़े नेताओं (रूजवेल्ट, चर्चिल और स्टालिन) का याल्टा सम्मेलन आयोजित।

✍ 26 जून, 1945- संयुक्त राष्ट्र संघ चार्टर पर 50 देशों ने सेन फ्रांसिस्को में हस्ताक्षर किए। पोलैंड ने 15 अक्टूबर को हस्ताक्षर किए। इस तरह संयुक्त राष्ट्रसंघ में 51 मूल संस्थापक सदस्य हैं।

✍ 24 अक्टूबर, 1945- संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना। 24 अक्टूबर को संयुक्त राष्ट्रसंघ दिवस मनाया जाता है।

✍ 30 अक्टूबर, 1945- भारत संयुक्त राष्ट्रसंघ में शामिल।

☞ अंतर्राष्ट्रीय झगड़ों को रोकना और राष्ट्रों के बीच सहयोग की राह दिखाना संयुक्त राष्ट्रसंघ का प्रमुख उद्देश्य है।

☞ संयुक्त राष्ट्रसंघ की एक मंशा पूरे विश्व में सामाजिक-आर्थिक विकास की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए विभिन्न देशों को एक साथ लाने की है।

☞ सन् 2011 तक संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य देशों की कुल संख्या 193 थी। सदस्यता ग्रहण करने वाला अंतिम सदस्य दक्षिण सूडान है।

☞ संयुक्त राष्ट्रसंघ का सबसे अधिक दिखने वाला सार्वजनिक चेहरा और उसका प्रधान प्रतिनिधि 'महासचिव' होता है।

☞ वर्तमान महासचिव एंटोनियो गुटेरेस, संयुक्त राष्ट्र संघ के नौवें महासचिव हैं। उन्होंने महासचिव का पद 1 जनवरी, 2017 को संभाला।

❖ संयुक्त राष्ट्रसंघ के प्रमुख अंग-

1. आम सभा/महासभा (General Assembly)-

☞ इसमें 193 सदस्यों के प्रतिनिधि शामिल। सभी को एकसमान मत अर्थात् आम सभा में हरेक सदस्य को एक वोट हासिल है। प्रमुख निर्णयों के लिए दो तिहाई और बाकी में सामान्य बहुमत की ज़रूरत। निर्णय सभी सदस्यों पर बाध्यकारी नहीं।

2. सुरक्षा-परिषद् (Security Council)-

☞ कुल 15 सदस्य हैं।

☞ सुरक्षा परिषद् में पाँच स्थायी और दस अस्थायी सदस्य हैं।

☞ पाँच स्थायी सदस्यों- चीन, फ्रांस, रूस, ब्रिटेन और अमरीका को 'वीटो' (निषेधाधिकार) का अधिकार।

✍ इस प्रकार 'वीटो' का अधिकार सुरक्षा-परिषद् के सिर्फ स्थायी सदस्यों को प्राप्त है।

✍ निषेधाधिकार (वीटो) एक तरह की 'नकारात्मक शक्ति' (negative power) है।

✍ एक 'वीटो' से भी सुरक्षा-परिषद् का प्रस्ताव नामंजूर हो सकता है।

✍ अस्थायी सदस्यों को 'वीटो' का अधिकार नहीं है।

☞ संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्यों द्वारा 'वीटो-पावर' का इस्तेमाल (1 जून, 2018 तक की स्थिति)-

✍ सर्वाधिक सोवियत संघ/रूस (135 बार)

✍ दूसरे स्थान पर अमरीका (84 बार)

✍ फिर क्रमशः यू.के. (32 बार), फ्रांस (18 बार) और चीन (11 बार) का स्थान है।

☞ दूसरे विश्वयुद्ध के तुरंत बाद के समय में ये देश सबसे ज़्यादा ताकतवर थे और इस महायुद्ध के विजेता भी रहे, इसलिए इन्हें स्थायी सदस्य के रूप में चुना गया।

☞ दस अस्थायी सदस्यों का चुनाव आम सभा द्वारा दो वर्षों के लिए होता है।

☞ दो साल की अवधि तक अस्थायी सदस्य रहने के तत्काल बाद किसी देश को फिर से इस पद के लिए नहीं चुना जा सकता।

☞ अस्थायी सदस्यों का निर्वाचन इस तरह से होता है कि विश्व के सभी भौगोलिक क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व हो सके।

☞ निर्णय सभी सदस्यों पर बाध्यकारी।

3. आर्थिक और सामाजिक परिषद् (Economic and Social Council : ECOSOC)-

☞ सदस्य देशों का चुनाव आम सभा द्वारा तीन वर्षों के लिए। सभी भौगोलिक क्षेत्रों को प्रतिनिधित्व देते हुए कुल 54 सदस्य।

4. न्यासिता परिषद् (Trusteeship Council)-

☞ संयुक्त राष्ट्रसंघ की न्यासिता प्रणाली के अंतर्गत आने वाली अंतिम 'ट्रस्ट टेरीटरी' पलाउ के आजाद होने के साथ 1 नवम्बर, 1994 से यह परिषद् स्थगित।

5. सचिवालय (Secretariat)-

☞ संयुक्त राष्ट्रसंघ का सबसे अधिक दिखने वाला सार्वजनिक चेहरा और उसका प्रधान प्रतिनिधि 'महासचिव' (Secretary-General) होता है, जिसकी नियुक्ति 'सुरक्षा-परिषद् की सलाह' पर आम सभा/महासभा पाँच सालों के लिए करती है।

6. अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (International Court of Justice)-

☞ इसमें 15 न्यायधीशों का चुनाव 9 वर्षों के लिए आम सभा और सुरक्षा परिषद् दोनों में पूर्ण बहुमत द्वारा होता है।

☞ मुख्यालय हेग (नीदरलैण्ड का एक शहर) में स्थित है।

❖ संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव-

1. ट्राइग्व ली (1946-1952) नार्वे-

☞ संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रथम महासचिव। दोबारा महासचिव बनाने का सोवियत संघ ने विरोध किया। महासचिव के पद से त्यागपत्र।

2. डेग हैमरशोल्ड (1953-1961) स्वीडन-

☞ कांगो-संकट को सुलझाने की दिशा में किए गए प्रयासों के लिए मरणोपरांत नोबेल शांति पुरस्कार।

3. यू थांट (1961-1971) बर्मा (म्यांमार)-

☞ एशिया महाद्वीप के पहले महासचिव। वियतनाम युद्ध के दौरान अमरीका की आलोचना की।

4. कुर्त वाल्डहीम (1972-1981) ऑस्ट्रिया।

☞ तीसरी बार महासचिव पद पर चुने जाने की दावेदारी का चीन ने विरोध किया।

5. जेवियर पेरेज द कूइयार (1982-1991) पेरु।

☞ फॉकलैंड युद्ध के बाद ब्रिटेन और अर्जेंटीना के बीच मध्यस्थता।

6 बुतरस बुतरस घाली (1992-1996) मिस्र-

☞ 'एन एजेंडा फॉर पीस' नामक रिपोर्ट जारी की। गंभीर असहमतियों के कारण अमरीका ने दुबारा महासचिव बनने का विरोध किया।

7. कोफी ए. अन्नान (1997-2006) घाना-

☞ सन् 2001 का नोबेल शांति पुरस्कार मिला।

☞ वर्ष 2005 में मानवाधिकार परिषद् तथा शांति संस्थापक आयोग की स्थापना की।

☞ एड्स, टीबी और मलेरिया से लड़ने के लिए एक वैश्विक कोष बनाया।

☞ अमरीकी नेतृत्व में इराक पर हुए हमले को अवैध करार दिया।

8. बान की मून (2007-2016) कोरिया गणराज्य (दक्षिण कोरिया)।

☞ महासचिव पद पर बैठने वाले दूसरे एशियाई।

9. अन्तोनियो गुटेरेस (2017) पुर्तगाल-

☞ वर्तमान एवं संयुक्त राष्ट्र संघ के नवें महासचिव हैं। उन्होंने महासचिव का पद 1 जनवरी, 2017 को संभाला।

☞ ये 2005 से 2015 तक 'शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र के उच्चायुक्त' (United Nations High Commissioner for Refugees) रहे।

❖ वैश्विक सामाजिक और आर्थिक मुद्दों से निबटने के लिए कई एजेंसियाँ हैं, जिनमें विश्व स्वास्थ्य संगठन (वर्ल्ड हेल्थ आर्गनाइजेशन- WHO), संयुक्त राष्ट्रसंघ विकास कार्यक्रम (यूनाइटेड नेशंस डेवलपमेंट प्रोग्राम- UNDP), संयुक्त राष्ट्रसंघ मानवाधिकार आयोग (यूनाइटेड नेशंस ह्यूमन राइट्स कमिशन- UNHRC), संयुक्त राष्ट्रसंघ शरणार्थी उच्चायोग (यूनाइटेड नेशंस हाई कमिशन फॉर रिफ्यूजीज- UNHCR), संयुक्त राष्ट्रसंघ बाल कोष (यूनाइटेड नेशंस चिल्ड्रेन्स फंड- UNICEF Or United Nations International Children's Emergency Fund) और संयुक्त राष्ट्रसंघ शैक्षिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनाइटेड नेशंस एजुकेशनल, सोशल एंड कल्चरल आर्गनाइजेशन- UNESCO) शामिल हैं।

❖ संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रतीक चिह्न (Logo) में 'दुनिया का नक्शा' बना हुआ है और इसके चारों तरफ 'जैतून की पत्तियाँ' (Olive branches) हैं, जो विश्व शांति का संकेत करती हैं।

❖ संयुक्त राष्ट्रसंघ में सुधार सम्बन्धी सुझाव-

☞ संयुक्त राष्ट्रसंघ के सामने दो तरह के बुनियादी सुधारों का मसला है। एक तो यह कि इस संगठन की बनावट और इसकी प्रक्रियाओं में सुधार किया जाए। दूसरे, इस संगठन के न्यायाधिकार में आने वाले मुद्दों की समीक्षा की जाए।

☞ सुरक्षा परिषद् में स्थायी और अस्थायी सदस्यों की संख्या बढ़ायी जाए, ताकि समकालीन विश्व राजनीति की वास्तविकताओं की इस संगठन में बेहतर नुमाइंदगी हो सके। एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमरीका के ज़्यादा देशों को सुरक्षा-परिषद् में सदस्यता देने की बात उठ रही है।

☞ अमरीका और पश्चिमी देश संयुक्त राष्ट्रसंघ के बजट से जुड़ी प्रक्रियाओं और इसके प्रशासन में सुधार चाहते हैं।

☞ कुछ देश और विशेषज्ञ चाहते हैं कि यह संगठन शांति और सुरक्षा से जुड़े मिशनों में ज़्यादा प्रभावकारी अथवा बड़ी भूमिका निभाएं, जबकि कुछ अन्य चाहते हैं कि यह संगठन अपने को विकास तथा मानवीय भलाई के कामों (स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण, जनसंख्या नियंत्रण, मानवाधिकार, लैंगिक न्याय और सामाजिक न्याय) तक सीमित रखे।

☞ कुछ देशों का इस बात पर जोर था कि सुरक्षा परिषद् में पाँच स्थायी सदस्यों को दिया गया निषेधाधिकार (वीटो पावर) खत्म होना चाहिए। निषेधाधिकार लोकतंत्र और संप्रभु राष्ट्रों के बीच बराबरी की धारणा से मेल नहीं खाता, अतः यह संयुक्त राष्ट्रसंघ के लिए उचित या प्रासंगिक नहीं है।

☞ स्थायी सदस्यों में से कोई एक अपने निषेधाधिकार (वीटो) का प्रयोग कर सकता है और इस तरह वह किसी फैसले को रोक सकता है, भले ही अन्य स्थायी सदस्यों और सभी अस्थायी सदस्यों ने उस फ़ैसले के पक्ष में मतदान किया हो, जो कि उचित नहीं है।

❖ सन् 1991 से विश्व राजनीति में आए बदलाव-

☞ संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना दूसरे विश्वयुद्ध के तत्काल बाद विश्व राजनीति की जो सच्चाइयाँ थीं उन्हीं के अनुरूप हुई थी। शीतयुद्ध के बाद ये सच्चाइयाँ बदल गई हैं। 1991 के बाद के बदलावों में से कुछ निम्नलिखित हैं-

☞ सोवियत संघ का बिखराव और अमरीका सर्वाधिक ताकतवर देश के रूप में उभरा।

☞ सोवियत संघ के उत्तराधिकारी राज्य रूस और अमरीका के बीच अब संबंध कहीं ज़्यादा सहयोगात्मक हैं।

☞ चीन बड़ी तेजी से एक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है तथा भारत भी तेजी से इस दिशा में अग्रसर है।

☞ एशिया की अर्थव्यवस्था अप्रत्याशित दर से तरक्की कर रही है।

☞ विश्व के सामने चुनौतियों की एक पूरी नयी कड़ी (जनसंहार, गृहयुद्ध, जातीय संघर्ष, आतंकवाद, परमाणिवक प्रसार, जलवायु में बदलाव, पर्यावरण की हानि, महामारी) मौजूद है।

❖ संयुक्त राष्ट्रसंघ की प्रक्रियाओं और ढाँचे में सुधार के सन्दर्भ में 'सुरक्षा परिषद् में सुधार' पर की गई बहस–

☞ सन् 1992 में संयुक्त राष्ट्रसंघ की आम सभा में एक प्रस्ताव स्वीकृत हुआ, जिसमें तीन मुख्य शिकायतों का जिक्र था–

☞ सुरक्षा परिषद् अब राजनीतिक वास्तविकताओं की नुमाइंदगी नहीं करती।

☞ इसके फ़ैसलों पर पश्चिमी मूल्यों और हितों की छाप होती है और इन फ़ैसलों पर चंद देशों का दबदबा होता है।

☞ सुरक्षा परिषद् में बराबर का प्रतिनिधित्व नहीं है।

❖ संयुक्त राष्ट्र संघ के ढाँचे में बदलाव की बढ़ती हुई माँगों के मद्देनज़र 1 जनवरी, 1997 को संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिव कोफी अन्नान ने जाँच शुरू करवाई कि सुधार कैसे कराए जाएँ।

☞ इसके बाद सुरक्षा परिषद् की स्थायी और अस्थायी सदस्यता के लिए मानदंड सुझाए गए। सुझाव आए कि 'एक नए सदस्य' को–

1. बड़ी आर्थिक ताकत होना चाहिए।
2. बड़ी सैन्य ताकत होना चाहिए।
3. संयुक्त राष्ट्र संघ के बजट में ऐसे देश का योगदान ज़्यादा हो।
4. आबादी के लिहाज से बड़ा राष्ट्र हो।
5. ऐसा देश जो लोकतंत्र और मानवाधिकारों का सम्मान करता हो।

❖ सितम्बर, 2005 में संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक में शामिल नेताओं ने बदलते हुए परिवेश में संयुक्त राष्ट्रसंघ को ज़्यादा प्रासंगिक बनाने के लिए निम्नलिखित कदम उठाने का फ़ैसला किया–

☞ शांति संस्थापक आयोग का गठन।

☞ यदि कोई राष्ट्र अपने नागरिकों को अत्याचारों से बचाने में असफल हो जाए तो विश्व-बिरादरी इसका उत्तरदायित्व ले– इस बात की स्वीकृति।

☞ मानवाधिकार परिषद् की स्थापना (19 जून, 2006 से सक्रिय)।

☞ सहस्राब्दि विकास लक्ष्य (मिलेनियम डेवेलपमेंट गोल्स/ Millennium Development Goals : MDGs) को प्राप्त करने पर सहमति।

☞ हर रूप-रीति के आतंकवाद की निंदा।

☞ एक लोकतंत्र-कोष (Democracy Fund) का गठन।

☞ ट्रस्टीशिप काउंसिल (न्यासिता परिषद्) को समाप्त करने पर सहमति।

❖ संयुक्त राष्ट्र संघ सुरक्षा परिषद् में सुधार और भारत–

☞ भारत का मानना है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ विभिन्न देशों के बीच सहयोग बढ़ाने और विकास को बढ़ावा देने में ज़्यादा बड़ी भूमिका निभाए। इस कारण बदले हुए विश्व में संयुक्त राष्ट्रसंघ की मज़बूती और दृढ़ता ज़रुरी है।

☞ भारत की एक बड़ी चिंता सुरक्षा परिषद् की संरचना को लेकर है। संयुक्त राष्ट्र संघ सुरक्षा परिषद् की अस्थायी सदस्य संख्या सन् 1965 में 11 से बढ़ाकर 15 कर दी गई थी, लेकिन स्थायी सदस्यों की संख्या स्थिर रही।

☞ भारत सुरक्षा परिषद् के अस्थायी और स्थायी, दोनों ही तरह के सदस्यों की संख्या में बढ़ोत्तरी का समर्थक है।

☞ भारत का तर्क है कि परिषद् का विस्तार करने पर वह ज़्यादा प्रतिनिधिमूलक (more representational) होगी और उसे विश्व-बिरादरी का ज़्यादा समर्थन मिलेगा।

☞ भारत खुद भी पुनर्गठित सुरक्षा-परिषद् में एक स्थायी सदस्य बनना चाहता है।

☞ भारत चाहता है कि वह संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद् में निषेधाधिकार संपन्न (वीटोधारी) सदस्य बने।

☞ भारत का विश्वास है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ के एजेंडे में विकास का मामला प्रमुख होना चाहिए।

❖ भारत के सुरक्षा-परिषद् में एक स्थायी सदस्य बनने की दावेदारी के पक्ष में तर्क–

1. भारत विश्व में सबसे बड़ी आबादी वाला दूसरा देश है।
2. भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है।
3. भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ की लगभग सभी पहलकदमियों में भाग लिया है।
4. संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति बहाल करने के प्रयासों में भारत लंबे समय से ठोस भूमिका निभाता आ रहा है।
5. भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ के बजट में नियमित रूप से अपना योगदान दिया है।
6. भारत तेजी से अंतर्राष्ट्रीय फलक पर आर्थिक-शक्ति बनकर उभर रहा है। भारत की बढ़ती हुई आर्थिक ताकत और स्थिर राजनीतिक व्यवस्था, इसकी दावेदारी के तर्क को मजबूती प्रदान करता है।

❖ संयुक्त राष्ट्र संघ के सालाना बजट में सर्वाधिक योगदान करने वाला देश संयुक्त राज्य अमेरिका (वर्ष 2019 में 22.0%) है। इसके बाद क्रमशः चीन (12.0%), जापान (8.5%), जर्मनी (6.0%), यू.के. (4.5%) और फ्रान्स (4.4%) हैं।

☞ भारत का योगदान 0.8% है।

❖ जून 2006 के दौरान इजराइल ने लेबनान पर यह कहकर हमला किया कि उग्रवादी गुट हिज़बुल्लाह पर नियंत्रण करने के लिए हमला ज़रूरी है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस मामले पर एक प्रस्ताव बहुत बाद पास किया, तब तक भारी संख्या में वहाँ आम नागरिक मारे गए।

❖ एक-ध्रुवीय विश्व में संयुक्त राष्ट्रसंघ-

☞ यह चिन्ता वाजिब है कि क्या संयुक्त राष्ट्रसंघ एक-ध्रुवीय विश्व में अमरीकी प्रभुत्व के विरुद्ध संतुलनकारी भूमिका निभा सकता है?

☞ सोवियत संघ की गैर मौजूदगी में अब अमरीका एकमात्र महाशक्ति है, अत: अमरीका की ताकत पर आसानी से अंकुश नहीं लगाया जा सकता।

☞ संयुक्त राष्ट्रसंघ के भीतर अमरीका का खास प्रभाव है। जैसे कि वह संयुक्त राष्ट्रसंघ के बजट में सबसे ज़्यादा योगदान करने वाला देश है।

☞ यह भी एक तथ्य है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ अमरीकी भू-क्षेत्र में स्थित है और इस कारण भी अमरीका का प्रभाव इसमें बढ़ जाता है।

☞ अगर अमरीका को लगे कि कोई प्रस्ताव उसके अथवा उसके साथी राष्ट्रों के हितों के अनुकूल नहीं है, तो अपने 'वीटो' से वह उसे रोक सकता है।

☞ इस तरह संयुक्त राष्ट्रसंघ अमरीका की ताकत पर अंकुश लगाने में ख़ास सक्षम नहीं। फिर भी, एकध्रुवीय विश्व में संयुक्त राष्ट्रसंघ अमरीका और शेष विश्व के बीच विभिन्न मसलों पर बातचीत कायम कर सकता है और इस संगठन ने ऐसा किया भी है।

☞ जहाँ तक शेष विश्व की बात है, तो उसके लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ ऐसा मंच है, जहाँ अमरीकी रवैये और नीतियों पर कुछ अंकुश लगाया जा सकता है।

☞ निष्कर्ष है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ में थोड़ी कमियाँ हैं, लेकिन इसके बिना दुनिया और बदहाल होगी।

❖ सन् 1944 में विश्व बैंक (World Bank) की औपचारिक स्थापना हुई। वाशिंगटन डीसी (संयुक्त राज्य अमेरिका) में इसका मुख्यालय है।

☞ इस बैंक की गतिविधियाँ प्रमुख रूप से विकासशील देशों से संबंधित हैं।

☞ यह बैंक अपने सदस्य-देशों को आसान ऋण और अनुदान देता है।

❖ विश्व व्यापार संगठन (वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गनाइजेशन- WTO)-

☞ यह अंतर्राष्ट्रीय संगठन वैश्विक व्यापार के नियमों को तय करता है।

☞ इस संगठन की स्थापना सन् 1995 में हुई। जेनेवा (स्विट्जरलैंड) में इसका मुख्यालय है।

☞ यह संगठन 'जनरल एग्रीमेंट ऑन ट्रेड एंड टैरिफ' (GATT) के उत्तराधिकारी के रूप में काम करता है।

☞ इनके सदस्यों की संख्या 164 (29 जुलाई 2016 की स्थिति) है।

❖ अंतर्राष्ट्रीय आण्विक ऊर्जा एजेंसी (इंटरनेशनल एटॉमिक एनर्जी एजेंसी- IAEA)-

☞ इस संगठन की स्थापना सन् 1957 में हुई।

☞ यह संगठन परमाण्विक ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देने और सैन्य उद्देश्यों में इसके इस्तेमाल को रोकने की कोशिश करता है।

❖ एमनेस्टी इंटरनेशनल-

☞ यह एक स्वयंसेवी संगठन/गैर-सरकारी संगठन (NGO) है।

☞ यह पूरे विश्व में मानवाधिकारों की रक्षा के लिए अभियान चलाता है।

☞ यह संगठन मानवाधिकारों से जुड़ी रिपोर्ट तैयार और प्रकाशित करता है।

❖ ह्यूमन राइट्स वॉच-

☞ यह भी मानवाधिकारों की वकालत और उनसे संबंधित अनुसंधान करने वाला एक अंतर्राष्ट्रीय स्वयंसेवी संगठन है।

☞ यह अमरीका का सबसे बड़ा अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन है।

❖ कुछ अन्य प्रमुख संगठन-

WHO- World Health Organization (वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन- विश्व स्वास्थ्य संगठन)।

ILO- International Labour Organization (इंटरनेशनल लेबर ऑर्गेनाइजेशन- अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन)।

UNDP- United Nations Development Programme (यूनाइटेड नेशंस डेवलपमेंट प्रोग्राम- संयुक्त राष्ट्र संघ विकास कार्यक्रम)।

UNICEF- United Nations International Children's Emergency Fund (यूनाइटेड नेशंस इंटरनेशनल चिल्ड्रेन्स इमरजेंसी फंड- संयुक्त राष्ट्र संघ बाल कोष)।

UNESCO- United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization (यूनाइटेड नेशंस एजुकेशनल, साइंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गेनाइजेशन- संयुक्त राष्ट्र संघ शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन)।

UNHCR- United Nations High Commissioner for Refugees (यूनाइटेड नेशंस हाई कमिशनर फॉर रिफ्यूजीज- संयुक्त राष्ट्र संघ शरणार्थी उच्चायुक्त)।

UNHRC- United Nations Human Rights Council (यूनाइटेड नेशंस ह्यूमन राइट्स कौंसिल- संयुक्त राष्ट्र संघ मानवाधिकार परिषद्)।

XII Class Pol. Science

समकालीन विश्व में सुरक्षा
(समकालीन विश्व राजनीति)

Chapter Summary- 5

❖ सुरक्षा क्या है?

☞ सुरक्षा का बुनियादी अर्थ है- खतरे से आज़ादी।

☞ केवल उन चीजों को 'सुरक्षा' से जुड़ी चीजों का विषय बनाया जाय, जिनसे जीवन के 'केंद्रीय मूल्यों' को खतरा हो।

☞ सुरक्षा की विभिन्न धारणाओं को दो कोटियों में रखा जा सकता है, अर्थात् 'सुरक्षा की पारंपरिक धारणा' और 'सुरक्षा की अपारंपरिक धारणा'।

❖ सुरक्षा की 'पारंपरिक धारणा' (Traditional Conceptions) अर्थात् 'राष्ट्रीय सुरक्षा की धारणा' (National Security Conceptions) के दो प्रकार हैं-

1. बाहरी सुरक्षा
2. आंतरिक सुरक्षा

☞ सुरक्षा की परंपरागत धारणा मुख्य रूप से सैन्य बल के प्रयोग अथवा सैन्य बल के प्रयोग की आशंका से संबद्ध है। सुरक्षा की पारंपरिक धारणा में माना जाता है कि सैन्य बल से सुरक्षा को खतरा पहुँचता है और सैन्य बल से ही सुरक्षा को कायम रखा जा सकता है।

❖ सुरक्षा की पारंपरिक धारणा- बाहरी सुरक्षा :-

☞ सुरक्षा की पारंपरिक अर्थात् राष्ट्रीय सुरक्षा अवधारणा में सैन्य ख़तरे को किसी देश के लिए सबसे ज़्यादा ख़तरनाक माना जाता है।

☞ बुनियादी तौर पर किसी सरकार के पास युद्ध की स्थिति में कुछ विकल्प होते हैं, जैसे-
आत्मसमर्पण करना तथा दूसरे पक्ष की बात को बिना युद्ध किए मान लेना अथवा युद्ध से होने वाले नाश को इस हद तक बढ़ाने के संकेत देना कि दूसरा पक्ष सहमकर हमला करने से बाज आये या युद्ध ठन जाय तो अपनी रक्षा करना ताकि हमलावर देश अपने मकसद में कामयाब न हो सके और पीछे हट जाए अथवा हमलावार को पराजित कर देना।

☞ सामान्यत: सुरक्षा-नीति का संबंध युद्ध की आशंका को रोकने से होता है, जिसे 'अपरोध' (Deterrence) कहा जाता है और अगर युद्ध को सीमित रखने अथवा उसको समाप्त करने से होता है, तो उसे 'रक्षा' (Defence) कहा जाता है।

☞ परंपरागत सुरक्षा-नीति का एक तत्त्व और है, जिसे 'शक्ति-संतुलन' (Balance of power) कहते हैं।

☞ शक्ति-संतुलन का आशय है कि कोई भी अकेला राज्य इतना शक्तिशाली न हो, कि वह अकेले अन्य राज्यों को दबा दे।

☞ शक्ति-संतुलन बनाये रखने की यह कवायद ज़्यादातर अपनी सैन्य-शक्ति बढ़ाने की होती है, लेकिन आर्थिक और प्रौद्योगिकी की ताकत भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि सैन्य-शक्ति का यही आधार है।

☞ पारंपरिक सुरक्षा-नीति का चौथा तत्त्व है, 'गठबंधन बनाना' (Alliance building)।

☞ गठबंधन में कई देश शामिल होते हैं और सैन्य हमले को रोकने अथवा उससे रक्षा करने के लिए समवेत कदम उठाते हैं।

☞ अधिकांश गठबंधनों को लिखित संधि से एक औपचारिक रूप मिलता है और ऐसे गठबंधनों को यह बात बिलकुल स्पष्ट रहती है कि खतरा किससे है।

☞ किसी देश अथवा गठबंधन की तुलना में अपनी ताकत का असर बढ़ाने के लिए देश गठबंधन बनाते हैं।

☞ गठबंधन राष्ट्रीय हितों पर आधारित होते हैं और राष्ट्रीय हितों के बदलने पर गठबंधन भी बदल जाते हैं।

☞ ओसामा बिन लादेन के नेतृत्व में अल-कायदा नामक समूह के आतंकवादियों ने जब 11 सितंबर, 2001 के दिन संयुक्त राज्य अमरीका पर हमला किया, तो उसने इस्लामी उग्रवादियों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया।

☞ सुरक्षा की परंपरागत धारणा में माना जाता है कि किसी देश की सुरक्षा को ज़्यादातर ख़तरा उसकी सीमा के बाहर से होता है, जिसकी वज़ह है- अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था।

❖ सुरक्षा की पारंपरिक धारणा- आंतरिक सुरक्षा :-

☞ सुरक्षा की परंपरागत धारणा का ज़रूरी रिश्ता अंदरूनी सुरक्षा से भी है, क्योंकि अगर किसी देश के भीतर रक्तपात हो रहा हो अथवा होने की आशंका हो तो वह देश सुरक्षित कैसे हो सकता है?

☞ सन् 1946 से 1991 के बीच गृह युद्धों की संख्या में दोगुनी वृद्धि हुई है।

☞ पड़ोसी देशों से युद्ध और आंतरिक संघर्ष नव-स्वतंत्र देशों के सामने सुरक्षा की सबसे बड़ी चुनौती थे।

☞ किसी देश के भीतर हिंसा के ख़तरों से निपटने के लिए एक जानी-पहचानी व्यवस्था होती है– इसे 'सरकार' कहते हैं।

❖ सुरक्षा के पारंपरिक तरीके-

☞ सुरक्षा की परंपरागत धारणा में स्वीकार किया जाता है कि हिंसा का इस्तेमाल यथासंभव सीमित होना चाहिए।

☞ 'न्याय-युद्ध' अर्थात् किसी देश को युद्ध उचित कारणों यानी आत्म-रक्षा अथवा दूसरों को जनसंहार से बचाने के लिए ही करना चाहिए।

☞ किसी युद्ध में युद्ध-साधनों का सीमित इस्तेमाल होना चाहिए।

☞ युद्धरत् सेना को चाहिए कि वह संघर्षविमुख शत्रु, निहत्थे व्यक्ति अथवा आत्मसपर्मण करने वाले शत्रु को न मारे।

☞ सेना को उतने ही बल का प्रयोग करना चाहिए जितना आत्मरक्षा के लिए ज़रूरी हो और उसे एक सीमा तक ही हिंसा का सहारा लेना चाहिए।

☞ बल प्रयोग तभी किया जाय जब बाकी उपाय असफल हो गए हों।

☞ निरस्त्रीकरण (Disarmament) की माँग होती है कि सभी राज्य, चाहे उनका आकार, ताकत और प्रभाव कुछ भी हो, कुछ खास किस्म के हथियारों से बाज आयें।

☞ सन् 1972 की जैविक हथियार संधि (बॉयोलॉजिकल वीपन्स कंवेंशन, Biological Weapons Convention- BWC) तथा सन् 1992 की रासायनिक हथियार संधि (केमिकल वीपन्स कंवेंशन, Chemical Weapons Convention- CWC) में ऐसे हथियार को बनाना और रखना प्रतिबंधित कर दिया गया है।

☞ अस्त्र नियंत्रण (Arms control) के अंतर्गत हथियारों को विकसित करने अथवा उनको हासिल करने के संबंध में कुछ कायदे-कानूनों का पालन करना पड़ता है।

☞ सन् 1972 की एंटी बैलेस्टिक मिसाइल संधि (Anti-Ballistic Missile Treaty- ABM Treaty) ने अमरीका और सोवियत संघ को बैलेस्टिक मिसाइलों को रक्षा-कवच के रूप में इस्तेमाल करने से रोका।

☞ अमरीका और सोवियत संघ ने अस्त्र-नियंत्रण की कई अन्य संधियों पर हस्ताक्षर किए, जिसमें सामरिक अस्त्र परिसीमन संधि-2 (स्ट्रैटजिक आर्म्स लिमिटेशन ट्रीटी- SALT- II) और सामरिक अस्त्र न्यूनीकरण संधि (स्ट्रेटजिक आर्म्स रिडक्शन ट्रीटी-(START) शामिल हैं।

☞ परमाणु अप्रसार संधि (न्यूक्लियर नॉन प्रोलिफेरेशन ट्रीटी : NPT- वर्ष 1968) भी एक अर्थ में अस्त्र नियंत्रण संधि ही थी, क्योंकि इसने परमाण्विक हथियारों के उपार्जन को कायदे-कानून के दायरे में ला खड़ा किया।

☞ जिन देशों ने सन् 1967 से पहले परमाणु हथियार बना लिये थे या उनका परीक्षण कर लिया था, उन्हें इस संधि के अंतर्गत इन हथियारों को रखने की अनुमति दी गई।

☞ जो देश सन् 1967 तक ऐसा नहीं कर पाये थे, उन्हें ऐसे हथियारों को हासिल करने के अधिकार से वंचित किया गया।

☞ परमाणु अप्रसार संधि ने परमाण्विक आयुधों को समाप्त तो नहीं किया, लेकिन इन्हें हासिल कर सकने वाले देशों की संख्या ज़रूर कम की।

☞ सुरक्षा की पारंपरिक धारणा में यह बात भी मानी गई है कि 'विश्वास बहाली के उपायों' (कॉन्फिडेंस बिल्डिंग मेजर्स-CBMs) से देशों के बीच हिंसाचार कम किया जा सकता है।

✍ विश्वास बहाली की प्रक्रिया में सैन्य टकराव और प्रतिद्वन्द्विता वाले देश सूचनाओं तथा विचारों के नियमित आदान-प्रदान का फैसला करते हैं। दो देश एक-दूसरे को अपने फौजी मकसद तथा एक हद तक अपनी सैन्य योजनाओं के बारे में बताते हैं।

✍ देश एक-दूसरे को यह भी बताते हैं कि उनके पास किस तरह के सैन्य-बल हैं। वे यह भी बता सकते हैं कि इन बलों को कहाँ तैनात किया जा रहा है।

✍ संक्षेप में कहें तो विश्वासी बहाली की प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि प्रतिद्वन्द्वी देश किसी ग़लतफहमी या गफलत में पड़कर जंग के लिए आमादा न हो जाएँ।

❖ सुरक्षा की अपारंपरिक धारणा (Non-traditional notions)-

☞ सुरक्षा की अपारंपरिक धारणा सिर्फ सैन्य खतरों से संबद्ध नहीं। इसमें मानवीय अस्तित्व पर चोट करने वाले व्यापक खतरों और आशंकाओं को शामिल किया जाता है।

☞ इसी कारण सुरक्षा की अपारंपरिक धारणा को 'मानवता की सुरक्षा' अथवा 'विश्व-रक्षा' कहा जाता है।

☞ मानवता की सुरक्षा के सभी पैरोकार मानते हैं कि इसका प्राथमिक लक्ष्य व्यक्तियों की संरक्षा है।

☞ मानवता की सुरक्षा का संकीर्ण अर्थ लेने वाले पैरोकारों का जोर व्यक्तियों को हिंसक खतरों यानी खून-खराबे से बचाने पर होता है।

☞ मानवता की सुरक्षा का व्यापक अर्थ लेने वाले पैरोकारों का तर्क है कि खतरों की सूची में अकाल, महामारी और आपदाओं को भी शामिल किया जाना चाहिए क्योंकि युद्ध, जन-संहार और आतंकवाद साथ मिलकर जितने लोगों को मारते हैं उससे कहीं ज़्यादा लोग अकाल, महामारी और प्राकृतिक आपदा की भेंट चढ़ जाते हैं।

☞ एक अलग अंदाज में कहें तो मानवता की रक्षा के व्यापकतम नज़रिए में जोर 'अभाव से मुक्ति' (Freedom from want) और 'भय से मुक्ति' (Freedom from fear) पर दिया जाता है।

☞ विश्वव्यापी खतरे जैसे वैश्विक तापवृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग), अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद तथा एड्स और बर्ड फ्लू जैसी महामारियों के मद्देनज़र 1990 के दशक में विश्व-सुरक्षा की धारणा उभरी। कोई भी देश इन समस्याओं का समाधान अकेले नहीं कर सकता।

❖ खतरे के नये स्रोत-

1. आतंकवाद- इसका आशय राजनीतिक खून-खराबे से है जो जान-बूझकर और बिना किसी मुरौव्वत के नागरिकों को अपना निशाना बनाता है। अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद एक से ज़्यादा देशों में व्याप्त है और उसके निशाने पर कई देशों के नागरिक हैं।

☞ 11 सितंबर, 2001 को आतंकवादियों ने अमरीका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमला बोला।

2. मानवाधिकार- मानवाधिकार को तीन कोटियों में रखा गया है। पहली कोटि राजनीतिक अधिकारों की है, जैसे अभिव्यक्ति और सभा करने की आज़ादी। दूसरी कोटि आर्थिक और सामाजिक अधिकारों की है। अधिकारों की तीसरी कोटि में उपनिवेशीकृत जनता अथवा जातीय और मूलवासी अल्पसंख्यकों के अधिकार आते हैं।

3. वैश्विक निर्धनता- विश्व की जनसंख्या फिलहाल 760 करोड़ है और यह आँकड़ा 21वीं सदी के मध्य तक 1000 करोड़ हो जाएगा। फिलहाल विश्व की कुल जनसंख्या-वृद्धि का 50 फीसदी सिर्फ 6 देशों - भारत, चीन, पाकिस्तान, नाइजीरिया, बांग्लादेश और इंडोनेशिया में घटित हो रहा है। अनुमान है कि अगले 50 सालों में दुनिया के सबसे गरीब देशों में जनसंख्या तीन गुनी बढ़ेगी जबकि इसी अवधि में अनेक धनी देशों की जनसंख्या घटेगी।

☞ विश्वस्तर पर यह असमानता उत्तरी गोलार्द्ध के देशों को दक्षिणी गोलार्द्ध के देशों से अलग करती है। दक्षिण गोलार्द्ध के देशों में असमानता अच्छी-खासी बढ़ी है।

☞ दुनिया में सबसे ज़्यादा सशस्त्र संघर्ष अफ्रीका के सहारा मरुस्थल के दक्षिणवर्ती देशों में होते हैं। यह इलाका दुनिया का सबसे गरीब इलाका है।

☞ दक्षिणी गोलार्द्ध के देशों में मौजूद गरीबी के कारण अधिकाधिक लोग बेहतर जीवन खासकर आर्थिक अवसरों की तलाश में उत्तरी गोलार्द्ध के देशों में प्रवास कर रहे हैं। इससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक मतभेद उठ खड़ा हुआ है।

☞ अंतर्राष्ट्रीय कायदे कानून 'आप्रवासी' (जो अपनी मर्जी से स्वदेश छोड़ते हैं) और 'शरणार्थी' (जो युद्ध, प्राकृतिक आपदा अथवा राजनीतिक उत्पीड़न के कारण स्वदेश छोड़ने पर मज़बूर होते हैं) में भेद करते हैं।

☞ 1990 के दशक के शुरुआती सालों में हिंसा से बचने के लिए कश्मीर घाटी छोड़ने वाले कश्मीरी पंडित "आंतरिक रूप से विस्थापित जन" के उदाहरण हैं।

4. शरणार्थी- विश्व का शरणार्थी-मानचित्र विश्व के संघर्ष-मानचित्र से लगभग हू-ब-हू मेल खाता है, क्योंकि दक्षिणी गोलार्द्ध के देशों में सशस्त्र संघर्ष और युद्ध के कारण लाखों लोग शरणार्थी बने और सुरक्षित जगह की तलाश में निकले हैं।

☞ सन् 1990 से 1995 के बीच सत्तर देशों के मध्य कुल 93 युद्ध हुए और इसमें लगभग साढ़े 55 लाख लोग मारे गये। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति, परिवार और कभी-कभी पूरे समुदाय को सर्वव्याप्त भय अथवा आजीविका, पहचान और जीवन-यापन के परिवेश के नाश के कारण जन्मभूमि छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा।

☞ सन् 1990 के दशक में कुल 60 जगहों से शरणार्थी प्रवास करने को मजबूर हुए और इसमें तीन को छोड़कर शेष सभी के मूल में सशस्त्र संघर्ष था।

❖ एचआईवी-एड्स, बर्ड फ्लू और सार्स (सिवियर एक्यूट रेसपिरेटॅरी सिंड्रोम- SARS) जैसी महामारियाँ आप्रवास, व्यवसाय, पर्यटन और सैन्य-अभियानों के जरिए बड़ी तेजी से विभिन्न देशों में फैली हैं।

☞ सन् 2003 तक पूरी दुनिया में 4 करोड़ लोग एचआईवी-एड्स से संक्रमित हो चुके थे। इसमें दो-तिहाई लोग अफ्रीका में रहते है। अफ्रीका को ज़्यादा गरीब बनाने में एचआईवी-एड्स महत्त्वपूर्ण घटक साबित हुआ है।

☞ एबोला वायरस, हैन्टावायरस और हेपेटाइटिस-सी जैसी कुछ नई महामारियों और टीबी, मलेरिया, डेंगी बुखार और हैजा जैसी पुरानी महामारियों ने दुनियाँ के देशों को प्रभावित किया है।

☞ 1990 के दशक के उत्तरार्द्ध के सालों से ब्रिटेन ने 'मैड-काऊ' महामारी के भड़क उठने के कारण अरबों डॉलर का नुकसान उठाया है और बर्ड फ्लू के कारण कई दक्षिण एशियाई देशों को मुर्गा-निर्यात बंद करना पड़ा।

☞ अगर किसी मसले से संदर्भी (राज्य अथवा जनसमूह) के अस्तित्व को खतरा हो रहा हो तो उसे सुरक्षा का मसला कहा जा सकता है, चाहे इस खतरे की प्रकृति कुछ भी हो।

☞ मालदीव को वैश्विक तापवृद्धि से खतरा हो सकता है, क्योंकि समुद्र तल के ऊँचा उठने से इसका ज़्यादातर हिस्सा डूब जाएगा।

☞ अफ्रीकन देश बोस्तवाना में तीन में से एक व्यक्ति एचआईवी- एड्स पीड़ित है।

☞ सन् 1994 में रवांडा की तुत्सी जनजाति के अस्तित्व पर खतरा मंडराया, क्योंकि प्रतिद्वन्द्वी हुतु जनजाति ने कुछ ही हफ्तों में लगभग 5 लाख तुत्सी लोगों को मार डाला।

❖ विश्व में शरणार्थी (2017) रिपोर्ट पर नजर डालें तो पता चलता है कि विश्व के विस्थापित लोगों को सर्वाधिक शरण अफ्रीका (30 प्रतिशत) में दी गई है। एशिया और पैसिफिक में यह आंकड़ा 11 प्रतिशत है।

❖ आयु-प्रत्याशा (Life Expectancy):-

☞ सहारा मरुस्थल के दक्षिणवर्ती देशों में आयु-प्रत्याशा मात्र 40 वर्ष है।

❖ सहयोगमूलक सुरक्षा (Cooperative security)-

☞ सुरक्षा पर मंडराते इन अनेक अपारंपरिक ख़तरों से निपटने के लिए सैन्य-संघर्ष की नहीं बल्कि आपसी सहयोग की ज़रूरत है।

☞ सहयोगमूलक सुरक्षा में विभिन्न देशों के अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय-राष्ट्रीय स्तर की अन्य संस्थाएँ जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठन (संयुक्त राष्ट्रसंघ, विश्व स्वास्थ्य संगठन, विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष आदि) स्वयंसेवी संगठन (एमनेस्टी इंटरनेशनल, रेड क्रॉस, निजी संगठन तथा दानदाता संस्थाएँ, चर्च और धार्मिक संगठन, मज़दूर संगठन, सामाजिक और विकास संगठन) व्यवसायिक संगठन और निगम तथा जानी-मानी हस्तियाँ (जैसे नेल्सन मंडेला, मदर टेरेसा) शामिल हो सकती हैं।

☞ सहयोग मूलक सुरक्षा में भी अंतिम उपाय के रूप में बल-प्रयोग किया जा सकता है। अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी उन सरकारों से निबटने के लिए बल-प्रयोग की अनुमति दे सकती है जो अपनी ही जनता को मार रही हों अथवा गरीबी, महामारी और प्रलयंकारी घटनाओं की मार झेल रही जनता के दुख-दर्द की उपेक्षा कर रही हो।

❖ भारत– सुरक्षा की रणनीतियाँ :-

☞ भारत को पारंपरिक (सैन्य) और अपारंपरिक खतरों का सामना करना पड़ा है। ये खतरे सीमा के अंदर से भी उभरे और बाहर से भी।

☞ भारत की सुरक्षा-नीति के चार बड़े घटक हैं :-

1. सुरक्षा-नीति का पहला घटक रहा सैन्य-क्षमता को मज़बूत करना क्योंकि भारत पर पड़ोसी देशों से हमले होते रहे हैं।

☞ पाकिस्तान ने सन् 1947-48, 1965, 1971 तथा 1999 में और चीन ने सन् 1962 में भारत पर हमला किया।

☞ भारत ने सन् 1974 में पहला परमाणु परीक्षण किया था।

2. भारत की सुरक्षा नीति का दूसरा घटक है अपने सुरक्षा हितों को बचाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय कायदों और संस्थाओं को मज़बूत करना।

☞ भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने एशियाई एकता, विउपनिवेशीकरण (Decolonisation) और निरस्त्रीकरण के प्रयासों की हिमायत की।

☞ नेहरू ने अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों में संयुक्त राष्ट्रसंघ को अंतिम पंच मानने पर जोर दिया।

☞ भारत ने हथियारों के अप्रसार के संबंध में एक सार्वभौम और बिना भेदभाव वाली नीति चलाने की पहलकदमी की, जिसमें हर देश को सामूहिक संहार के हथियारों (परमाणु, जैविक, रासायनिक) से संबद्ध बराबर के अधिकार और दायित्व हों।

☞ भारत ने नव-अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की माँग उठायी।

☞ महाशक्तियों की खेमेबाजी से अलग उसने गुटनिरपेक्षता के रूप में विश्व-शांति का तीसरा विकल्प सामने रखा।

☞ भारत उन 160 देशों में शामिल है, जिन्होंने सन् 1997 के क्योटो प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए हैं। क्योटो प्रोटोकॉल में वैश्विक तापवृद्धि पर काबू रखने के लिए ग्रीनहाऊस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के संबंध में दिशा निर्देश बताए गए हैं।

☞ सहयोगमूलक सुरक्षा की पहलकदमियों के समर्थन में भारत ने अपनी सेना संयुक्त राष्ट्रसंघ के शांतिबहाली के मिशनों में भेजी है।

3. भारत की सुरक्षा रणनीति का तीसरा घटक है देश की अंदरूनी सुरक्षा-समस्याओं से निबटने की तैयारी।

☞ नागालैंड, मिजोरम, पंजाब और कश्मीर जैसे क्षेत्रों से कई उग्रवादी समूहों ने समय-समय पर इन प्रांतों को भारत से अलगाने की कोशिश की।

☞ भारत ने राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के लिए लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था का पालन किया है। यह व्यवस्था विभिन्न समुदाय और जन-समूहों का अपनी शिकायतों को खुलकर रखने और सत्ता में भागीदारी करने का मौका देती है।

4. भारत में अर्थव्यवस्था को इस तरह विकसित करने के प्रयास किए गए हैं कि बहुसंख्यक नागरिकों को गरीबी और अभाव से निज़ात मिले तथा नागरिकों के बीच आर्थिक असमानता ज़्यादा न हो।

❖ विशिष्ट 'पद' (Terms) और उनके अर्थ–

☞ विश्वास बहाली के उपाय (कॉन्फिडेंस बिल्डिंग मेजर्स - CBMs) - राष्ट्रों के बीच सुरक्षा-मामलों पर सूचनाओं के आदान-प्रदान की नियमित प्रक्रिया।

☞ अस्त्र-नियंत्रण - हथियारों के निर्माण अथवा उनको हासिल करने पर अंकुश।

☞ निरस्त्रीकरण - कुछ खास हथियारों के इस्तेमाल से परहेज करना।

☞ गठबंधन - सैन्य हमले की स्थिति से निबटने अथवा उसके अपरोध के लिए कुछ राष्ट्रों का आपस में मेल करना।

XII Class

Pol. Science

पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन
(समकालीन विश्व राजनीति)

Chapter Summary- 6

❖ वैश्विक परिदृश्य में, कुछ मुद्दे, जिन पर विचार करने की जरूरत है-

☞ दुनिया भर में कृषि-योग्य भूमि में अब कोई बढ़ोत्तरी नहीं हो रही, जबकि मौजूदा उपजाऊ जमीन के एक बड़े हिस्से की उर्वरता कम हो रही है। इससे खाद्य-उत्पादन में कमी आ रही है।

☞ चारागाहों के चारे खत्म होने को हैं और मत्स्य-भंडार घट रहा है।

☞ जलाशयों की जलराशि बड़ी तेजी से कम हुई है तथा उसमें प्रदूषण बढ़ा है।

☞ संयुक्त राष्ट्रसंघ की मानव विकास रिपोर्ट (2016) के अनुसार विकासशील देशों की 66.3 करोड़ जनता को स्वच्छ जल उपलब्ध नहीं होता है।

☞ प्राकृतिक वन, जलवायु को संतुलित रखने में मदद करते हैं, इनसे जलचक्र भी संतुलित बना रहता है और इन्हीं वनों में धरती की जैव-विविधता (Biodiversity) का भंडार भरा रहता है, लेकिन ऐसे वनों की कटाई हो रही है और लोग विस्थापित (Displaced) हो रहे हैं।

☞ जैव-विविधता की हानि जारी है और इसका कारण है, उन पर्यावासों का विध्वंस (Destruction of habitat) जो जैव-प्रजातियों के मामले में समृद्ध हैं।

☞ धरती के ऊपरी वायुमंडल में ओज़ोन गैस की मात्रा में लगातार कमी हो रही है। इसे ओज़ोन परत में छेद होना भी कहते हैं। इससे पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystems) और मनुष्य के स्वास्थ्य पर एक बड़ा खतरा मंडरा रहा है।

☞ पूरे विश्व में समुद्रतटीय क्षेत्रों का प्रदूषण भी बढ़ रहा है। विशेषकर समुद्र का तटवर्ती जल जमीनी क्रियाकलापों से प्रदूषित हो रहा है। पूरी दुनिया में समुद्रतटीय इलाकों में मनुष्यों की सघन बसाहट (Intensive human settlement) जारी है।

❖ अराल सागर (Aral Sea) के आसपास बसे हज़ारों लोगों को अपना घर-बार छोड़ना पड़ा क्योंकि-

☞ पानी के विषाक्त होने से मत्स्य-उद्योग नष्ट हो गया।

☞ जहाजरानी उद्योग और इससे जुड़े तमाम कामकाज खत्म हो गए।

☞ पानी में नमक की सांद्रता (Concentrations of salt) के ज़्यादा बढ़ जाने से पैदावार कम हो गई।

❖ आर्थिक विकास के कारण पर्यावरण पर होने वाले असर की चिंता ने 1960 के दशक के बाद से राजनीतिक चरित्र ग्रहण किया।

❖ वैश्विक मामलों से सरोकार रखने वाले एक विद्वत् समूह 'क्लब ऑव रोम' (Club of Rome) ने सन् 1972 में 'लिमिट्स टू ग्रोथ' (Limits to Growth) शीर्षक से एक पुस्तक प्रकाशित की।

☞ यह पुस्तक दुनिया की बढ़ती जनसंख्या के आलोक में प्राकृतिक संसाधनों के विनाश के अंदेशे को बड़ी खूबी से बताती है।

☞ संयुक्त राष्ट्रसंघ पर्यावरण कार्यक्रम (United Nations Environment Programme- UNEP) सहित अनेक अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं पर सम्मेलन कराये और इस विषय पर अध्ययन को बढ़ावा देना शुरू किया।

❖ सन् 1992 में संयुक्त राष्ट्रसंघ का पर्यावरण और विकास के मुद्दे पर केंद्रित एक सम्मेलन रियो डी जनेरियो (ब्राजील) में हुआ। इसे 'पृथ्वी सम्मेलन' (Earth Summit) कहा जाता है।

☞ इस सम्मेलन में 170 देश, हज़ारों स्वयंसेवी संगठन तथा अनेक बहुराष्ट्रीय निगमों ने भाग लिया।

☞ वैश्विक राजनीति के दायरे में पर्यावरण को लेकर बढ़ते सरोकारों को इस सम्मेलन में एक ठोस रूप मिला।

☞ इस सम्मेलन से पहले सन् 1987 में 'अवर कॉमन फ्यूचर' (Our Common Future) शीर्षक बर्टलैंड रिपोर्ट (Brundtland Report) छपी थी, जिसमें चेताया गया था कि आर्थिक विकास के चालू तौर-तरीके आगे चलकर टिकाऊ साबित नहीं होंगे।

☞ रियो-सम्मेलन में यह बात खुलकर सामने आयी कि विश्व के धनी और विकसित देश यानी 'उत्तरी गोलार्द्ध' तथा गरीब और विकासशील देश यानी 'दक्षिणी गोलार्द्ध' पर्यावरण के अलग-अलग अजेंडे के पैरोकार हैं।

1. उत्तरी देशों की मुख्य चिंता ओज़ोन परत की छेद और वैश्विक तापवृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग) को लेकर थी।

2. दक्षिणी देश आर्थिक विकास और पर्यावरण प्रबंधन के आपसी रिश्ते को सुलझाने के लिए ज़्यादा चिंतित थे।

☞ रियो-सम्मेलन में जलवायु-परिवर्तन, जैव-विविधता और वानिकी के संबंध में कुछ नियमाचार निर्धारित हुए। इसमें 'अजेंडा-21' (Agenda 21) के रूप में विकास के कुछ तौर-तरीके भी सुझाए गए।

☞ सम्मेलन में इस बात पर सहमति बनी कि आर्थिक वृद्धि का तरीका ऐसा होना चाहिए कि इससे पर्यावरण को नुकसान न पहुँचे। इसे 'टिकाऊ विकास' (Sustainable Development) का तरीका कहा गया।

❖ 'साझी संपदा' उन संसाधनों को कहते हैं जिन पर किसी एक का नहीं बल्कि पूरे समुदाय का अधिकार होता है।

☞ इसके पीछे मूल तर्क यह है, कि ऐसे संसाधन की प्रकृति, उपयोग के स्तर और रख-रखाव के संदर्भ में समूह के हर सदस्य को समान अधिकार प्राप्त होंगे और समान उत्तरदायित्व निभाने होंगे।

☞ संयुक्त परिवार का चूल्हा, चारागाह, मैदान, कुआँ या नदी साझी संपदा के उदाहरण हैं।

☞ राजकीय स्वामित्व वाली वन्यभूमि (State-owned forest land) में पावन वन-प्रांतरों (Sacred groves) के वास्तविक प्रबंधन की पुरानी व्यवस्था, 'साझी संपदा के रख-रखाव और उपभोग' का ही उदाहरण है।

✍ दक्षिण भारत के वन-प्रदेशों में विद्यमान पावन वन-प्रांतरों का प्रबंधन आज भी परंपरानुसार ग्रामीण समुदाय करता आ रहा है।

☞ भारत में विद्यमान 'पावन वन-प्रांतर' प्रथा में वनों के कुछ हिस्सों को काटा नहीं जाता। इन स्थानों पर देवता अथवा किसी पुण्यात्मा का वास माना जाता है। इन्हें ही 'पावन वन-प्रांतर' (Sacred groves) या 'देवस्थान' कहा जाता है।

✍ इन देवस्थानों को राजस्थान में वानी, केंकड़ी और ओरान; झारखंड में जहेरा थान और सरना; मेघालय में लिंगदोह; केरल में काव; उत्तराखंड में थान या देवभूमि और महाराष्ट्र में देव रहतिस आदि सैकड़ों नामों से जाना जाता है।

☞ इसी तरह विश्व के कुछ हिस्से और क्षेत्र किसी एक देश के संप्रभु क्षेत्राधिकार से बाहर होते हैं। इसीलिए उनका प्रबंधन साझे तौर पर अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा किया जाता है। इन्हें 'वैश्विक संपदा' या 'मानवता की साझी विरासत' कहा जाता है।

✍ इस प्रकार 'विश्व की साझी विरासत' (Global commons) में पृथ्वी का वायुमंडल, अंटार्कटिका, समुद्री सतह और बाहरी अंतरिक्ष शामिल है।

☞ 'वैश्विक संपदा' की सुरक्षा के सवाल पर महत्त्वपूर्ण समझौता मांट्रियल प्रोटोकॉल/न्यायाचार (सन् 1987) हो चुका है।

☞ निजीकरण (Privatisation), गहनतर खेती (Agricultural intensification), आबादी की वृद्धि (Population growth) और पारिस्थितिकी तंत्र की गिरावट (Ecosystem degradation) समेत कई कारणों से पूरी दुनिया में साझी संपदा का आकार घट रहा है, उसकी गुणवत्ता और गरीबों को उसकी उपलब्धता कम हो रही है।

❖ अंटार्कटिक महादेशीय इलाका 1 करोड़ 40 लाख वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। विश्व के निर्जन क्षेत्र का 26 प्रतिशत हिस्सा इसी महादेश के अंतर्गत आता है। स्थलीय हिम का 90 प्रतिशत हिस्सा और धरती पर मौजूद स्वच्छ जल का 70 प्रतिशत हिस्सा इस महादेश में मौजूद है।

☞ सीमित स्थलीय जीवन वाले इस महादेश का समुद्री पारिस्थितिकी-तंत्र अत्यंत उर्वर है, जिसमें कुछ पादप (सूक्ष्म शैवाल, कवक और लाइकेन), समुद्री स्तनधारी जीव, मत्स्य तथा कठिन वातावरण में जीवनयापन के लिए अनुकूलित विभिन्न पक्षी शामिल हैं।

☞ यहाँ पाई जाने वाली क्रिल मछली (Krill fish) समुद्री आहार शृंखला की धुरी है और जिस पर दूसरे जानवरों का आहार निर्भर है।

☞ विश्व का सबसे सुदूर ठंडा और झंझावाती महादेश अंटार्कटिक प्रदेश विश्व की जलवायु को संतुलित रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

❖ 'साझी परंतु अलग-अलग जिम्मेदारियाँ' : सिद्धांत-

☞ उत्तर के विकसित देश पर्यावरण के मसले पर उसी रूप में चर्चा करना चाहते हैं जिस दशा में पर्यावरण आज मौजूद है। ये देश चाहते हैं कि पर्यावरण के संरक्षण में हर देश की जिम्मेदारी बराबर हो।

☞ दक्षिण के विकासशील देशों का तर्क है कि विश्व में पारिस्थितिकी को नुकसान अधिकांशतया विकसित देशों के औद्योगिक विकास से पहुँचा है। यदि विकसित देशों ने पर्यावरण को ज़्यादा नुकसान पहुँचाया है तो उन्हें इस नुकसान की भरपाई की जिम्मेदारी भी ज़्यादा उठानी चाहिए।

☞ विकासशील देशों का कहना है कि वे अभी औद्योगीकरण की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं और ज़रूरी है कि उन पर वे प्रतिबंध न लगें जो विकसित देशों पर लगाये जाने हैं।

☞ इस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण कानून के निर्माण, प्रयोग और व्याख्या में विकासशील देशों की विशिष्ट ज़रूरतों का ध्यान रखा जाना चाहिए।

☞ सन् 1992 में हुए 'पृथ्वी सम्मेलन' में इस तर्क को मान लिया गया और इसे 'साझी परंतु अलग-अलग जिम्मेदारियाँ' का सिद्धांत कहा गया।

☞ रियो-घोषणापत्र-1992 में कहा गया कि– "धरती के पारिस्थितिकी तंत्र की अखंडता और गुणवत्ता की बहाली, सुरक्षा तथा संरक्षण के लिए विभिन्न देश विश्व-बंधुत्व की भावना से आपस में सहयोग करेंगे। पर्यावरण के विश्वव्यापी अपक्षय में विभिन्न राज्यों का योगदान अलग-अलग है। इसे देखते हुए विभिन्न राज्यों की 'साझी परंतु अलग-अलग जिम्मेदारियाँ' होगी। विकसित देशों के समाजों का वैश्विक पर्यावरण पर दबाव ज़्यादा है और इन देशों के पास विपुल प्रौद्योगिक एवं वित्तीय संसाधन हैं। इसे देखते हुए टिकाऊ विकास के अंतर्राष्ट्रीय प्रयास में विकसित देश अपनी ख़ास जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं।"

❖ जलवायु के परिवर्तन से संबंधित संयुक्त राष्ट्रसंघ के नियमाचार यानी यूनाइटेड नेशंस फ्रेमवर्क कंवेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (UNFCCC- 1992) में भी कहा गया है कि इस संधि को स्वीकार करने वाले देश अपनी क्षमता के अनुरूप, पर्यावरण के अपक्षय (Degradation) में अपनी हिस्सेदारी के आधार पर साझी परंतु अलग-अलग ज़िम्मेदारियाँ निभाते हुए पर्यावरण की सुरक्षा के प्रयास करेंगे।

☞ इस नियमाचार को स्वीकार करने वाले देश इस बात पर सहमत थे कि ऐतिहासिक रूप से भी और मौजूदा समय में भी ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन में सबसे ज़्यादा हिस्सा विकसित देशों का है।

☞ यह बात भी मानी गई कि विकासशील देशों का प्रतिव्यक्ति उत्सर्जन अपेक्षाकृत कम है।

☞ इस कारण चीन, भारत और अन्य विकासशील देशों को क्योटो-प्रोटोकॉल की बाध्यताओं से अलग रखा गया है।

☞ क्योटो प्रोटोकॉल (सन् 1997) एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता है, जिसके अंतर्गत औद्योगिक देशों के लिए ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं।

☞ कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और हाइड्रो-फ्लोरो कार्बन जैसी कुछ गैसों के बारे में माना जाता है कि वैश्विक तापवृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग) में इनकी कोई-न-कोई भूमिका ज़रूर है।

☞ ग्लोबल वार्मिंग की परिघटना में विश्व का तापमान बढ़ता है और धरती के जीवन के लिए यह बात बड़ी प्रलयंकारी साबित होगी।

☞ क्योटो जापान का एक शहर है।

❖ भारत ने सन् 2002 में क्योटो प्रोटोकॉल (वर्ष 1997) पर हस्ताक्षर किए और इसका अनुमोदन किया।

☞ भारत को क्योटो प्रोटोकॉल की बाध्यताओं से छूट दी गई है क्योंकि औद्योगीकरण के दौर में ग्रीनहाऊस गैसों के उत्सर्जन के मामले में इसका कुछ ख़ास योगदान नहीं था।

❖ तटीय पर्यावरण से जुड़े मुद्दे-

☞ मछली और समुद्री जीवन का अतिशय दोहन।

☞ मछली और प्रान की बढ़ती माँग के कारण मेन्ग्रोव को नुकसान।

☞ समुद्र तटों पर औद्योगिक प्रदूषण। भारी मात्रा में प्रदूषित जल को बिना शोधन के समुद्र में डालना।

☞ अत्यधिक मशीनीकरण।

❖ भारत सरकार विभिन्न कार्यक्रमों के जरिए पर्यावरण से संबंधित वैश्विक प्रयासों में शिरकत कर रही है।

☞ वर्ष 2001 में ऊर्जा-संरक्षण अधिनियम पारित हुआ, जिसमें ऊर्जा के ज़्यादा कारगर इस्तेमाल की पहलकदमी की गई है।

☞ वर्ष 2003 के बिजली अधिनियम में नवीकरणीय (Renewable) ऊर्जा के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया गया है।

☞ भारत बायोडीजल से संबंधित एक राष्ट्रीय मिशन चलाने के लिए भी तत्पर है।

☞ भारत ने 2 अक्तूबर, 2016 को पेरिस जलवायु समझौते को अनुमोदित किया।

☞ भारत ने पृथ्वी-सम्मेलन (रियो) के समझौतों के क्रियान्वयन का एक पुनरावलोकन वर्ष 1997 में किया। इसका मुख्य निष्कर्ष यह था कि विकासशील देशों को रियायती शर्तों पर नये और अतिरिक्त वित्तीय संसाधन तथा पर्यावरण के संदर्भ में बेहतर साबित होने वाली प्रौद्योगिकी मुहैया कराने की दिशा में कोई सार्थक प्रगति नहीं हुई है।

❖ दक्षिणी गोलार्द्ध के देशों के वन निर्जन नहीं हैं, जबकि उत्तरी गोलार्द्ध के देशों के वन जनविहीन हैं या कहें कि इन देशों में वन को निर्जन प्रांत के रूप में देखा जाता है। इसी वजह से उत्तरी देशों में वनभूमि को निर्जन भूमि का दर्जा दिया गया है, यानी ऐसी जगह जहाँ लोग नहीं रहते-बसते।

☞ दक्षिणी गोलार्द्ध के देशों मसलन मैक्सिको, चिली, ब्राज़ील, मलेशिया, इंडोनेशिया, महादेशीय अफ्रीका और भारत के वन-आंदोलनों पर बहुत दबाव है।

☞ जंगल-उन्मुख दृष्टिकोण (Wilderness-oriented perspectives) ऑस्ट्रेलिया, स्केंडिनेविया, उत्तरी अमरीका और न्यूजीलैंड में हावी है। अधिकांश यूरोपीय देशों के विपरीत इन

इलाकों में 'अविकसित निर्जन वन-क्षेत्र' (Underdeveloped wilderness) अपेक्षाकृत ज़्यादा हैं। इसका यह मतलब नहीं कि दक्षिणी गोलार्द्ध के देशों में 'विजनपन' का अभियान (Wilderness campaigns) एकदम नदारद है।

- फिलीपिन्स में 'हरित-संगठनों' (Green Organisations) ने गरुड़ तथा अन्य शिकारी पक्षियों को विलुप्त होने से बचाने के लिए मुहिम चलायी।
- भारत में 'बंगाल-टाइगर' को बचाने की मुहिम चल रही है, क्योंकि इनकी संख्या लुप्त होने की हद तक कम हो चली थी।
- अफ्रीका में हाथीदाँत के व्यापार और हाथियों को निर्दयतापूर्वक मारने के विरुद्ध लंबा अभियान चलाया गया।
- इनमें से अनेक अभियानों की शुरुआत और वित्तीय मदद वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ फंड (WWF) जैसे संगठनों ने की।
- बाँध-विरोधी आंदोलन को नदियों को बचाने के आंदोलनों के रूप में देखने की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है, क्योंकि ऐसे आंदोलन में नदियों और नदी-घाटियों के ज़्यादा टिकाऊ तथा न्यायसंगत प्रबंधन की बात उठायी जाती है।
  - 1980 के दशक के शुरुआती और मध्यवर्ती वर्षों में विश्व का पहला बाँध-विरोधी आंदोलन दक्षिणी गोलार्द्ध में चला।
  - भारत में बाँध-विरोधी और नदी हितैषी कुछ अग्रणी आंदोलन चल रहे हैं। इन आंदोलनों में नर्मदा आंदोलन सबसे ज़्यादा प्रसिद्ध है। भारत में बाँध विरोधी तथा पर्यावरण-बचाव के अन्य आंदोलन अहिंसा पर आधारित हैं।
- खनिज-उद्योग पृथ्वी पर मौजूद सबसे ताकतवर उद्योगों में एक है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में उदारीकरण के कारण दक्षिणी गोलार्द्ध के अनेक देशों की अर्थव्यवस्था बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए खुल चुकी हैं।
  - खनिज-उद्योग धरती के भीतर मौजूद संसाधनों को बाहर निकालता है।
  - रसायनों का भरपूर उपयोग करता है।
  - भूमि और जलमार्गों को प्रदूषित करता है।
  - स्थानीय वनस्पतियों का विनाश करता है।
  - इसके कारण जन-समुदायों को विस्थापित होना पड़ता है।

❖ बीसवीं सदी के अधिकांश समय में विश्व की अर्थव्यवस्था तेल पर निर्भर रही।

- वैश्विक रणनीति में तेल लगातार सबसे महत्त्वपूर्ण संसाधन बना हुआ है।
- खाड़ी-क्षेत्र विश्व के कुल तेल-उत्पादन का 30 प्रतिशत मुहैया कराता है। इस क्षेत्र में विश्व के ज्ञात तेल-भंडार का 64 प्रतिशत हिस्सा मौजूद है।
- सऊदी अरब के पास विश्व के कुल तेल-भंडार का एक चौथाई हिस्सा मौजूद है।
- सऊदी अरब विश्व में सबसे बड़ा तेल-उत्पादक देश है। इराक का ज्ञात तेल-भंडार सऊदी अरब के बाद दूसरे नंबर पर है।
- संयुक्त राज्य अमरीका, यूरोप, जापान, चीन और भारत में इस तेल की खपत होती है, लेकिन ये देश इस इलाके से बहुत दूरी पर हैं।

❖ विश्व-राजनीति के लिए पानी एक और महत्त्वपूर्ण संसाधन है।

- विश्व के कुछ भागों में साफ पानी की कमी हो रही है।
- विश्व के हर हिस्से में स्वच्छ जल समान मात्रा में मौजूद नहीं है।

❖ मूलवासी (Indigenous People)-

- ऐसे लोगों के वंशज, जो किसी मौजूदा देश में बहुत दिनों से रहते चले आ रहे थे। फिर किसी दूसरी संस्कृति या जातीय मूल के लोग विश्व के दूसरे हिस्से से उस देश में आये और इन लोगों को अधीन बना लिया।
- किसी देश के 'मूलवासी' आज भी उस देश की संस्थाओं के अनुरूप आचरण करने से ज़्यादा अपनी परंपरा, सांस्कृतिक रिवाज़ तथा अपने ख़ास सामाजिक, आर्थिक ढर्रे पर जीवन-यापन करना पसंद करते हैं।
- फिलीपिन्स के कोरडिलेरा क्षेत्र (Cordillera region) में 20 लाख मूलवासी लोग रहते हैं।
- चिली में मापुशे (Mapuche) नामक मूलवासियों की संख्या 10 लाख है।
- बांग्लादेश के चटगांव पर्वतीय क्षेत्र (Chittagong Hill Tracts) में 6 लाख आदिवासी बसे हैं।
- उत्तर अमरीकी मूलवासियों की संख्या 3 लाख 50 हजार है।
- पनामा नहर के पूरब में कुना (Kuna) नामक मूलवासी 50 हज़ार की तादाद में हैं और उत्तरी सोवियत में ऐसे लोगों की आबादी 10 लाख है।

❖ भारत में 'मूलवासी' के लिए 'अनुसूचित जनजाति' या 'आदिवासी' शब्द प्रयोग किया जाता है। ये कुल जनसंख्या का आठ प्रतिशत हैं।

- भारत की अधिकांश आदिवासी जनता अपने जीवन-यापन के लिए खेती पर निर्भर हैं।

❖ सन् 1975 में 'वर्ल्ड काउंसिल ऑफ इंडिजिनस पीपल्स' (World Council of Indigenous Peoples) का गठन हुआ।

THROSITY

वैश्वीकरण
(समकालीन विश्व राजनीति)

Chapter Summary- 7

❖ अवधारणा के रूप में वैश्वीकरण–

☞ एक अवधारणा के रूप में वैश्वीकरण की बुनियादी बात है– प्रवाह। प्रवाह कई तरह के हो सकते हैं– विश्व के एक हिस्से के विचारों का दूसरे हिस्सों में पहुँचना, पूँजी का एक से ज़्यादा जगहों पर जाना, वस्तुओं का कई देशों में पहुँचना एवं उनका व्यापार तथा बेहतर आजीविका की तलाश में दुनिया के विभिन्न हिस्सों में लोगों की आवाजाही।

☞ यहाँ सबसे ज़रूरी बात है 'विश्वव्यापी पारस्परिक जुड़ाव', जो ऐसे प्रवाहों की निरंतरता से पैदा हुआ है और कायम भी है।

☞ वैश्वीकरण एक बहुआयामी अवधारणा है।

☞ वैश्वीकरण के राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अवतार (manifestations) हैं और इनके बीच ठीक-ठीक भेद किया जाना चाहिए।

✍ वैश्वीकरण का प्रभाव बड़ा विषम रहा है– यह कुछ समाजों को बाकियों की अपेक्षा और समाज के एक हिस्से को बाकी हिस्सों की अपेक्षा ज़्यादा प्रभावित कर रहा है।

☞ वैश्वीकरण विचार (Ideas), पूँजी (Capital), वस्तु (Commodities) और लोगों (People) की आवाजाही (Flows) से जुड़ी परिघटना है, लेकिन अगर इन चार तरह के प्रवाहों की ही बात है, तो फिर वैश्वीकरण मानव-इतिहास के अधिकांश समय जारी रहा है।

☞ बहरहाल, जो लोग तर्क देते हैं कि समकालीन वैश्वीकरण के साथ कुछ ख़ास बात है, जो नई बात है, वह है, इन प्रवाहों की गति (Speed of these flows) और इनके प्रसार का धरातल (Scale of these flows)।

❖ वैश्वीकरण के कारण–

☞ वैश्वीकरण के लिए कोई एक कारक जिम्मेवार नहीं है, फिर भी प्रौद्योगिकी (Technology) अपने आप में एक अपरिहार्य कारण साबित हुई है।

✍ जब छपाई (मुद्रण) की तकनीक आयी थी, तो उसने राष्ट्रवाद की आधारशिला रखी।

✍ टेलीग्राफ, टेलीफोन और माइक्रोचिप जैसे आविष्कारों ने विश्व के विभिन्न भागों के बीच संचार की क्रांति कर दिखाई है।

✍ प्रौद्योगिकी में हुई तरक्की के कारण विचार, पूँजी, वस्तु और लोगों की विश्व के विभिन्न भागों में आवाजाही सुगम हुई है।

✍ लेकिन, एकमात्र संचार-साधनों की तरक्की और उनकी उपलब्धता से ही वैश्वीकरण अस्तित्व में आया हो, ऐसी बात भी नहीं है।

❖ वैश्वीकरण के प्रभाव–

☞ राजनीतिक प्रभाव–

✍ वैश्वीकरण के कारण राज्य की क्षमता यानी सरकारों को जो करना है, उसे करने की ताकत में कमी आती है।

✍ कल्याणकारी राज्य की धारणा अब पुरानी पड़ गई है और इसकी जगह न्यूनतम हस्तक्षेपकारी राज्य ने ले ली है, अर्थात् राज्य अब कुछेक मुख्य कामों यथा– कानून और व्यवस्था को बनाये रखना तथा अपने नागरिकों की सुरक्षा करना, तक ही अपने को सीमित रखता है।

✍ लोक कल्याणकारी राज्य, जिसका लक्ष्य लोगों का आर्थिक और सामाजिक-कल्याण था, की जगह अब बाज़ार आर्थिक और सामाजिक प्राथमिकताओं का प्रमुख निर्धारक है।

✍ आज बहुराष्ट्रीय निगम (Multinational Companies) अपने पैर पसार चुके हैं और उनकी भूमिका बढ़ी है, जिससे सरकारों के अपने दम पर फ़ैसला करने की क्षमता में कमी आती है।

✍ वैश्वीकरण से हमेशा राज्य की ताकत में कमी आती है, ऐसी बात भी नहीं है। राजनीतिक समुदाय के आधार के रूप में राज्य की प्रधानता को कोई चुनौती नहीं मिली है। राज्य आज भी कानून और व्यवस्था, राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे अपने अनिवार्य कार्यों को पूरा कर रहे हैं।

THROSITY

- कुछ मायनों में वैश्वीकरण के फलस्वरूप राज्य की ताकत में इजाफा हुआ है। अब राज्यों के हाथ में अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी मौजूद है, जिसके परिणामस्वरूप राज्य अब पहले से ज़्यादा ताकतवर हैं।

आर्थिक प्रभाव–

- वैश्वीकरण के कारण दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में सरकारों ने एक जैसी आर्थिक नीतियों को अपनाया है, लेकिन विश्व के विभिन्न भागों में इसके परिणाम बहुत अलग-अलग हुए हैं।
- आर्थिक वैश्वीकरण के कारण दुनिया के विभिन्न देशों के बीच आर्थिक प्रवाह तेज हुआ है। कुछ आर्थिक प्रवाह स्वेच्छा से होते हैं, जबकि कुछ, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व व्यापार संगठन जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं और ताकतवर देशों द्वारा जबरन लादे जाते हैं।
- वैश्वीकरण के चलते पूरी दुनिया में वस्तुओं के व्यापार में इजाफा हुआ है। दुनिया भर में पूंजी की आवाजाही पर अब कहीं कम प्रतिबंध हैं। कहने का तात्पर्य यह हुआ कि धनी देश के निवेशकर्ता अपना धन खासकर विकासशील देशों में, जहाँ उन्हें ज़्यादा मुनाफा होगा, निवेश कर सकते हैं।
- वैश्वीकरण के चलते अब विचारों के सामने राष्ट्र की सीमाओं की बाधा नहीं रही, उनका प्रवाह अबाध हो उठा है। इंटरनेट और कंप्यूटर से जुड़ी सेवाओं का विस्तार इसका एक उदाहरण है।
- वैश्वीकरण के कारण जितना प्रवाह वस्तुओं और पूंजी का बढ़ा है, उतनी लोगों की आवाजाही नहीं बढ़ सकी है। विकसित देश अपनी वीजा-नीति के जरिए अपनी राष्ट्रीय सीमाओं को अभेद्य बनाए रखते हैं, ताकि दूसरे देशों के नागरिक विकसित देशों में आकर कहीं उनके नागरिकों के नौकरी-धंधे न हथिया लें।
- आर्थिक वैश्वीकरण के कारण पूरे विश्व में जनमत बड़ी गहराई से बँट गया है। कुछ लोगों का कहना है कि आर्थिक वैश्वीकरण से आबादी के एक बहुत ही छोटे तबके को फायदा होगा, जबकि नौकरी और जन-कल्याण के लिए सरकार पर आश्रित रहने वाले लोग बदहाल हो जाएँगे। उनका कहना है कि 'सामाजिक सुरक्षा कवच' (Social safety nets) तैयार किया जाना चाहिए, ताकि जो लोग आर्थिक रूप से कमजोर हैं, उन पर वैश्वीकरण के दुष्प्रभावों को कम किया जा सके।
- कुछ अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक वैश्वीकरण को विश्व का पुन:उपनिवेशीकरण (Recolonization) कहा है।
- आर्थिक वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं के समर्थकों का तर्क है कि इससे समृद्धि बढ़ती है और 'खुलेपन' के कारण ज़्यादा से ज़्यादा आबादी की खुशहाली बढ़ती है।
- वैश्वीकरण के समर्थकों का तर्क है कि आर्थिक वैश्वीकरण अपरिहार्य है और इतिहास की धारा को अवरुद्ध करना कोई बुद्धिमानी नहीं।
- वैश्वीकरण के मध्यमार्गी समर्थकों (More moderate supporters) का कहना है कि वैश्वीकरण ने चुनौतियाँ पेश की हैं और सजग-सचेत होकर पूरी बुद्धिमत्ता से इसका सामना किया जाना चाहिए।
- बहरहाल, हम कह सकते हैं कि वैश्वीकरण के फलस्वरूप विश्व के विभिन्न भागों में सरकार, व्यवसाय तथा लोगों के बीच जुड़ाव बढ़ रहा है।

सांस्कृतिक प्रभाव–

- वैश्वीकरण के परिणाम सिर्फ आर्थिक और राजनीतिक दायरों में ही नज़र नहीं आते, बल्कि इसके सांस्कृतिक प्रभाव भी नजर आते हैं।
- हमारा खान-पान, हमारी पसंद, पहनावा, विचार इन सब पर इसका असर नज़र आता है।
- वैश्वीकरण के सांस्कृतिक प्रभावों को देखते हुए इस भय को बल मिला है कि यह प्रक्रिया विश्व की संस्कृतियों को खतरा पहुँचाएगी।
- वैश्वीकरण सांस्कृतिक समरूपता (Cultural Homogenisation) ले आता है। सांस्कृतिक समरूपता का यह अर्थ नहीं कि किसी विश्व-संस्कृति का उदय हो रहा है, बल्कि विश्व-संस्कृति के नाम पर दरअसल शेष विश्व पर पश्चिमी संस्कृति लादी जा रही है।
- राजनीतिक और आर्थिक रूप से प्रभुत्वशाली संस्कृति कम ताकतवर समाजों पर अपनी छाप छोड़ती है और संसार वैसा ही दीखता है, जैसा ताकतवर संस्कृति इसे बनाना चाहती है।
- सांस्कृतिक वैश्वीकरण से पूरे विश्व की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर धीरे-धीरे खत्म होती है, जो समूची मानवता के लिए खतरनाक है।
- वैश्वीकरण के सांस्कृतिक प्रभाव सिर्फ नकारात्मक ही नहीं है, बल्कि कभी-कभी परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों को छोड़े बिना संस्कृति का परिष्कार भी होता है।
- वैश्वीकरण से हर संस्कृति कहीं 'ज़्यादा अलग और विशिष्ट' (More different and distinctive) होती जा रही है। इस प्रक्रिया को सांस्कृतिक वैभिन्नीकरण (Cultural Heterogenization) कहते हैं।

❖ भारत और वैश्वीकरण–

☞ औपनिवेशिक दौर में ब्रिटेन के साम्राज्यवादी मंसूबों के परिणामस्वरूप भारत आधारभूत वस्तुओं और कच्चे माल का निर्यातक तथा बने-बनाये सामानों का आयातक देश था।

☞ आज़ादी के बाद हमने फ़ैसला किया कि दूसरों पर निर्भर रहने के बजाय खुद सामान बनाया जाए। हमने यह भी फ़ैसला किया कि दूसरे देशों को भारत में निर्यात की अनुमति नहीं होगी, ताकि हमारे अपने उत्पादक चीजों को बनाना सीख सकें, लेकिन इस 'संरक्षणवाद' (Protectionism) से कुछ नयी दिक्कतें पैदा हुई और नतीजा यह रहा कि भारत में आर्थिक-वृद्धि की दर धीमी रही।

☞ 1991 में, वित्तीय संकट से उबरने और आर्थिक वृद्धि की ऊँची दर हासिल करने की इच्छा से भारत में आर्थिक-सुधारों की योजना शुरू हुई, जिसके अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों पर आयद बाधाएँ हटायी गईं। इन क्षेत्रों में व्यापार और विदेशी निवेश भी शामिल थे।

❖ वैश्वीकरण का प्रतिरोध–

☞ वामपंथी विचारधारा वालों का तर्क है कि मौजूदा वैश्वीकरण विश्वव्यापी पूंजीवाद की एक ख़ास अवस्था है, जो धनिकों को और ज़्यादा धनी एवं गरीब को और ज़्यादा ग़रीब बनाती है। राज्य के कमजोर होने से गरीबों के हित की रक्षा करने की उसकी क्षमता में कमी आती है।

☞ वैश्वीकरण के दक्षिणपंथी आलोचक इसके राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों को लेकर चिंतित हैं। राजनीतिक अर्थों में उन्हें राज्य के कमजोर होने की चिंता है। सांस्कृतिक संदर्भ में इनकी चिंता है कि परंपरागत संस्कृति की हानि होगी। आर्थिक क्षेत्र में वे चाहते हैं कि कम से कम कुछ क्षेत्रों में आर्थिक आत्मनिर्भरता और 'संरक्षणवाद' का दौर फिर कायम हो।

☞ वैश्वीकरण-विरोधी बहुत से आंदोलन वैश्वीकरण की सम्पूर्ण अवधारणा के विरोधी नहीं बल्कि वैश्वीकरण के किसी खास कार्यक्रम के विरोधी हैं, जिसे वे साम्राज्यवाद का एक रूप मानते हैं।

☞ 1999 में, सिएट्ल में विश्व व्यापार संगठन की मंत्री-स्तरीय बैठक हुई, जिसमें आर्थिक रूप से ताकतवर देशों द्वारा व्यापार के अनुचित तौर-तरीकों के अपनाने के विरोध में प्रदर्शन हुए थे। विरोधियों का तर्क था कि उदीयमान वैश्विक आर्थिक-व्यवस्था में विकासशील देशों के हितों को समुचित महत्त्व नहीं दिया गया है।

☞ 'वर्ल्ड सोशल फोरम' (World Social Forum : WSF) नव-उदारवादी वैश्वीकरण (Neo-liberal globalisation) के विरोध का एक विश्व-व्यापी मंच है।

✍ इस मंच के तहत् मानवाधिकार कार्यकर्त्ता, पर्यावरणवादी, मजदूर, युवा और महिला कार्यकर्त्ता एकजुट होकर नव-उदारवादी वैश्वीकरण का विरोध करते हैं।

✍ 'वर्ल्ड सोशल फोरम' की पहली बैठक 2001 में पोर्टो अलगेरे (ब्राजील) में, चौथी बैठक 2004 में मुंबई में हुई थी। मार्च, 2018 में इसकी बैठक ब्राजील में हुई है।

❖ भारत और वैश्वीकरण का प्रतिरोध–

☞ भारत में वैश्वीकरण का विरोध कई हलकों से हो रहा है।

☞ आर्थिक वैश्वीकरण के ख़िलाफ आवाजें न केवल वामपंथी विचारधारा वाले राजनीतिक दलों की तरफ से उठी हैं, बल्कि इंडियन सोशल फोरम जैसे मंचों से भी उठी हैं।

☞ वैश्वीकरण का विरोध राजनीति के दक्षिणपंथी खेमों से भी हुआ है। यह खेमा विभिन्न सांस्कृतिक प्रभावों का विरोध कर रहा है जिसमें केबल नेटवर्क के जरिए उपलब्ध कराए जा रहे विदेशी टी.वी. चैनलों से लेकर वैलेन्टाईन-डे मनाने तथा स्कूल-कॉलेज के छात्र-छात्राओं की पश्चिमी पोशाकों के लिए बढ़ती अभिरुचि तक का विरोध शामिल है।

☞ औद्योगिक श्रमिक और किसानों के संगठनों ने बहुराष्ट्रीय निगमों के भारत में प्रवेश का विरोध किया है।

☞ 'नीम' जैसी वनस्पति को अमरीकी और यूरोपीय फर्मों द्वारा पेटेन्ट कराने का प्रयास हुआ, जिसका भी कड़ा विरोध हुआ।

❖ निष्कर्ष रूप में वैश्वीकरण–

✍ वैश्वीकरण एक बहुआयामी परिघटना (multi-dimensional phenomenon) है।

✍ वैश्वीकरण का संबंध विश्वव्यापी पारस्परिक जुड़ाव (world-wide interconnectedness) से है।

✍ वैश्वीकरण का एक महत्त्वपूर्ण कारण प्रौद्योगिकी (technology) है।

✍ वैश्वीकरण के समर्थकों का तर्क है कि इससे आर्थिक समृद्धि बढ़ेगी।

✍ वैश्वीकरण के पैरोकारों का तर्क है कि इससे सांस्कृतिक समरूपता (cultural homogenisation) आएगी।

✍ विभिन्न देशों और समाजों पर वैश्वीकरण का प्रभाव विषम (uneven) रहा है।

XII Class

Pol. Science

राष्ट्र-निर्माण की चुनौतियाँ (स्वतंत्र भारत में राजनीति)

Part II Chapter Summary- 1

❖ सन् 1947 के 14-15 अगस्त की मध्यरात्रि को हिंदुस्तान आज़ाद हुआ।

☞ स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने इस रात संविधान सभा के एक विशेष सत्र को संबोधित किया था।

☞ जवाहरलाल नेहरू का यह प्रसिद्ध भाषण 'भाग्यवधू से चिर-प्रतीक्षित भेंट' या 'ट्रिस्ट विद् डेस्टिनी' के नाम से जाना गया।

❖ आज़ाद हिंदुस्तान का जन्म कठिन परिस्थितियों में हुआ। आज़ादी मिली लेकिन देश के बँटवारे के साथ। सन् 1947 का साल अभूतपूर्व हिंसा और विस्थापन की त्रासदी का साल था।

❖ आजादी के बाद मुख्य तौर पर भारत के सामने तीन तरह की चुनौतियाँ थी-

✓ पहली और तात्कालिक चुनौती एकता के सूत्र में बँधे एक ऐसे भारत को गढ़ने की थी, जिसमें भारतीय समाज की सारी विविधताओं के लिए जगह हो।

✓ दूसरी चुनौती लोकतंत्र को कायम करने की थी।

✓ तीसरी चुनौती थी ऐसे विकास की, जिससे समूचे समाज का भला होता हो, न कि कुछ एक तबकों का।

☞ इस प्रकार असली चुनौती आर्थिक विकास तथा गरीबी के खात्मे के लिए कारगर नीतियों को तैयार करने की थी।

☞ निष्कर्ष रूप में कहें तो आज़ादी के तुरंत बाद राष्ट्र-निर्माण की चुनौती सबसे प्रमुख थी।

❖ भारत में प्रथम गणतंत्र दिवस 26 जनवरी, 1950 को मनाया गया।

❖ 11 अगस्त, 1947 को कराची में, पाकिस्तान की संविधान सभा में अध्यक्षीय भाषण देते हुए मुहम्मद अली ज़िन्ना ने कहा कि ''हमें बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक समुदायों की इन जटिलताओं को दूर करने की भावना से काम करना चाहिए।... पाकिस्तान में आप आज़ाद हैं,... आपके धर्म, आपकी जाति या विश्वास से राज्य को कुछ लेना-देना नहीं है।''

☞ मुहम्मद अली ज़िन्ना ने आजादी मिलने तक मुस्लिम लीग द्वारा प्रतिपादित 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' (Two-nation theory) की हमेशा वकालत की है।

❖ 15 अक्तूबर, 1947 को मुख्यमंत्रियों को लिखे एक पत्र में पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि ''भारत में मुसलमान अल्पसंख्यकों की तादाद इतनी ज़्यादा है कि वे चाहें तब भी यहाँ से कहीं और नहीं जा सकते।...''

❖ ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित, पंजाबी भाषा की प्रमुख कवयित्री और कथाकार अमृता प्रीतम (1919-2005) ने पंजाबी की साहित्यिक पत्रिका 'नागमणि' का संपादन किया।

❖ 14-15 अगस्त 1947 को एक नहीं बल्कि दो राष्ट्र-भारत और पाकिस्तान-अस्तित्व में आए।

☞ आजादी की लड़ाई के दौरान मुस्लिम लीग ने 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' की बात की थी।

☞ 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' के अनुसार भारत किसी एक कौम का नहीं बल्कि 'हिंदू' और 'मुसलमान' नाम की दो कौमों का देश था और इसी कारण मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिए एक अलग देश यानी पाकिस्तान की माँग की।

☞ कांग्रेस ने 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' तथा पाकिस्तान की माँग का विरोध किया।

❖ भारत विभाजन के समय यह तय किया गया कि 'धार्मिक बहुसंख्या' को विभाजन का आधार बनाया जाएगा। इसके मायने यह थे कि जिन इलाकों में मुसलमान बहुसंख्यक थे वे इलाके 'पाकिस्तान' के भू-भाग होंगे और शेष हिस्से 'भारत' कहलाएँगे।

☞ लेकिन इस योजना को लागू करने में कई किस्म की दिक्कतें थी-

✓ पहली बात तो यह कि 'ब्रिटिश इंडिया' में कोई एक भी इलाका ऐसा नहीं था जहाँ मुसलमान बहुसंख्यक हों। ऐसे दो इलाके थे जहाँ मुसलमानों की आबादी ज़्यादा थी। एक इलाका पश्चिम में था तो दूसरा इलाका पूर्व में। ऐसा कोई तरीका न था कि इन दोनों इलाकों को जोड़कर एक जगह कर दिया जाए।

✓ दूसरी बात यह कि मुस्लिम-बहुल हर इलाका पाकिस्तान में जाने को राजी हो, ऐसा भी नहीं था।

☞ खान अब्दुल गफ्फार खान पश्चिमोत्तर सीमाप्रांत (North-West Frontier Province) के निर्विवाद नेता थे। उनकी प्रसिद्धि 'सीमांत गाँधी' (Frontier Gandhi) के रूप में थी और वे 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' के एकदम खिलाफ़ थे।

✓ तीसरी समस्या और भी विकट थी। 'ब्रिटिश-इंडिया' के मुस्लिम-बहुल प्रांत पंजाब और बंगाल में अनेक हिस्से बहुसंख्यक गैर-मुस्लिम आबादी वाले थे। ऐसे में फ़ैसला हुआ कि इन दोनों

THROUGH

प्रांतों में बँटवारा धार्मिक बहुसंख्यकों के आधार पर होगा।

पंजाब और बंगाल का बँटवारा विभाजन की सबसे बड़ी त्रासदी साबित हुआ।

✓ चौथी और विभाजन की सबसे अबूझ कठिनाई 'अल्पसंख्यकों' की थी। सीमा के दोनों तरफ़ 'अल्पसंख्यक' थे। जो इलाके अब पाकिस्तान में हैं वहाँ लाखों की संख्या में हिंदू और सिख आबादी थी। ठीक इसी तरह पंजाब और बंगाल के भारतीय भू-भाग में भी लाखों की संख्या में मुस्लिम आबादी थी। दिल्ली और उसके आस-पास के इलाकों में भी मुसलमानों की एक बड़ी आबादी थी। इन लोगों ने पाया कि हम तो अपने ही घर में विदेशी बन गए।

☞ भारत विभाजन की पृष्ठभूमि पर लिखे साहित्य में सआदत हसन मंटो की कहानी 'कस्र-ए-नफ्सी' (Kasre-Nafsi) प्रमुख है। ऐसी ही एक फिल्म 'गर्म हवा' (*GARAM HAWA*) है, जो एम.एस. सथ्यु (M.S. Sathyu) द्वारा निर्देशित है।

❖ भारत विभाजन के परिणाम-

☞ सन् 1947 में बड़े पैमाने पर एक जगह की आबादी दूसरी जगह जाने को मज़बूर हुई थी। आबादी का यह स्थानांतरण आकस्मिक, अनियोजित और त्रासदी से भरा था।

☞ धर्म के नाम पर एक समुदाय के लोगों ने दूसरे समुदाय के लोगों को बेरहमी से मारा।

☞ लोग अपना घर-बार छोड़ने के लिए मजबूर हुए। वे सीमा के एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ गए।

☞ भारत और पाकिस्तान दोनों ही तरफ़ के अल्पसंख्यक अपने घरों से भाग खड़े हुए और अकसर अस्थाई तौर पर उन्हें शरणार्थी शिविरों में पनाह लेनी पड़ी।

☞ इन लाखों शरणार्थियों के लिए देश की आज़ादी का मतलब था महीनों और कभी-कभी सालों तक किसी शरणार्थी शिविर में ज़िंदगी काटना।

☞ विभाजन के दौरान बड़ी संख्या में मुस्लिम आबादी पाकिस्तान चली गई। इसके बावजूद सन् 1951 के वक्त भारत की कुल आबादी में 12 फीसदी मुसलमान थे।

☞ सीमा के दोनों ओर हज़ारों की तादाद में औरतों को अगवा कर लिया गया। उन्हें जबरन शादी करनी पड़ी और अगवा करने वाले का धर्म भी अपनाना पड़ा।

☞ कई मामलों में यह भी हुआ कि खुद परिवार के लोगों ने अपने 'कुल की इज़्ज़त' बचाने के नाम पर घर की बहू-बेटियों को मार डाला।

☞ बहुत-से बच्चे अपने माँ-बाप से बिछड़ गए।

☞ वित्तीय संपदा के साथ-साथ टेबुल, कुर्सी, टाईपराइटर और पुलिस के वाद्ययंत्रों तक का बँटवारा हुआ था। सरकारी और रेलवे के कर्मचारियों का भी बँटवारा हुआ। लोगों को अपना घर-बार छोड़कर सीमा-पार जाना पड़ा।

☞ विभाजन की हिंसा में तकरीबन पाँच से दस लाख लोगों ने अपनी जान गँवाई।

☞ भारत और पाकिस्तान के लेखक, कवि तथा फिल्म-निर्माताओं ने अपने उपन्यास, लघुकथा, कविता और फिल्मों में इस मार-काट की नृशंसता का जिक्र किया; विस्थापन और हिंसा से पैदा दुखों को अभिव्यक्ति दी।

❖ आजादी के समय साम्प्रदायिक दंगों का अखाड़ा बना 'नोआखली' (Noakhali) वर्तमान में बांग्लादेश में स्थित है।

❖ महात्मा गाँधी ने 15 अगस्त, 1947 के दिन आज़ादी के किसी भी जश्न में भाग नहीं लिया। वे कोलकाता के उन इलाकों में डेरा डाले हुए थे, जहाँ हिंदुओं और मुसलमानों के बीच भयंकर दंगे हुए थे।

☞ 'अहिंसा' और 'सत्याग्रह' के जिन सिद्धांतों के लिए वे आजीवन समर्पित भाव से काम करते रहे, वे सिद्धांत भी इस कठिन घड़ी में लोगों को एकता के सूत्र में पिरो सकने में नाकामयाब हो गए थे।

❖ 30 जनवरी, 1948 को एक हिंदू अतिवादी नाथूराम विनायक गोडसे ने संध्याकालीन प्रार्थना के समय गाँधीजी की हत्या कर दी।

❖ आजादी के समय ब्रिटिश-इंडिया दो हिस्सों में था। एक हिस्से में ब्रिटिश-भारतीय प्रांत थे, तो दूसरे हिस्से में देसी रजवाड़े।

☞ ब्रिटिश प्रभुत्व वाले भारतीय प्रांतों पर अंग्रेजी सरकार का सीधा नियंत्रण था। दूसरी तरफ़ छोटे-बड़े आकार के कुछ और राज्य थे, जिन्हें रजवाड़ा कहा जाता था तथा रजवाड़ों पर राजाओं का शासन था।

☞ राजाओं ने ब्रिटिश-राज की अधीनता या कहें कि सर्वोच्च सत्ता (Paramountcy) स्वीकार कर रखी थी और इसके अंतर्गत वे अपने राज्य के घरेलू मामलों का शासन चलाते थे।

❖ आजादी के समय रजवाड़ों (देसी रियासतों) की कुल संख्या 565 थी।

☞ आजादी के समय देसी रियासतों के प्रति अंग्रेजी-राज का नज़रिया यह था कि रजवाड़े अपनी मर्जी से चाहें तो भारत या पाकिस्तान में शामिल हो जाएँ या फिर अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाएँ रखें।

☞ सबसे पहले त्रावणकोर के राजा ने अपने राज्य को आज़ाद रखने की घोषणा की। त्रावणकोर के बाद हैदराबाद के निज़ाम ने भी ऐसी ही घोषणा की।

☞ हमारा देश छोटे-बड़े विभिन्न आकार के देशों में बँट जाने की इस संभावना के विरुद्ध अंतरिम सरकार ने कड़ा रुख अपनाया। मुस्लिम लीग ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के इस कदम का विरोध किया। मुस्लिम लीग का मानना था कि रजवाड़ों को अपनी मनमर्जी का रास्ता चुनने के लिए छोड़ दिया जाना चाहिए।

☞ देसी रजवाड़ों की चर्चा से तीन बातें सामने आती हैं-

✓ पहली बात तो यह कि अधिकतर रजवाड़ों के लोग भारतीय संघ में शामिल होना चाहते थे।

✓ दूसरी बात यह कि भारत सरकार का रुख लचीला था और वह कुछ इलाकों को स्वायत्तता देने के लिए तैयार थी जैसा कि जम्मू-कश्मीर में हुआ।

✓ तीसरी बात, विभाजन की पृष्ठभूमि में विभिन्न इलाकों के सीमांकन के सवाल पर खींचतान ज़ोर पकड़ रही थी और ऐसे में देश की क्षेत्रीय अखंडता–एकता का सवाल सबसे ज़्यादा अहम हो उठा था।

❖ रजवाड़ों (देसी रियासतों) के शासकों को मनाने-समझाने में सरदार वल्लभभाई पटेल ने ऐतिहासिक भूमिका निभाई और अधिकतर रजवाड़ों को उन्होंने भारतीय संघ में शामिल होने के लिए राजी कर लिया।

☞ अधिकतर रजवाड़ों के शासकों ने भारतीय संघ में अपने विलय के एक सहमति-पत्र पर हस्ताक्षर किए। इस सहमति-पत्र को 'इंस्ट्रूमेंट ऑफ़ एक्सेशन' (Instrument of Accession) कहा जाता है। इस पर हस्ताक्षर का अर्थ था कि रजवाड़े भारतीय संघ का अंग बनने के लिए सहमत हैं।

☞ जूनागढ़, हैदराबाद, कश्मीर और मणिपुर की रियासतों का विलय बाकियों की तुलना में थोड़ा कठिन साबित हुआ।

❖ सरदार वल्लभभाई पटेल (1875-1950) स्वतंत्र भारत के प्रथम उप-प्रधानमंत्री और प्रथम गृहमंत्री रहे।

☞ देसी रियासतों को भारत संघ में मिलाने में इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

❖ आज़ादी के चंद रोज पहले मणिपुर के महाराजा बोधचंद्र सिंह ने भारत सरकार के साथ भारतीय संघ में अपनी रियासत के विलय के एक सहमति-पत्र पर हस्ताक्षर किए थे।

☞ मणिपुर भारत का पहला भाग है, जहाँ सार्वभौम वयस्क मताधिकार के सिद्धांत को अपनाकर चुनाव हुए।

❖ हैदराबाद के शासक को 'निज़ाम' कहा जाता था। निज़ाम चाहता था कि हैदराबाद की रियासत को आज़ाद रियासत का दर्जा दिया जाए।

☞ हैदराबाद की रियासत के लोगों के बीच निज़ाम के शासन के खिलाफ़ एक आंदोलन ने ज़ोर पकड़ा। तेलंगाना इलाके के किसान निज़ाम के दमनकारी शासन से खासतौर पर दुखी थे। वे निज़ाम के खिलाफ़ उठ खड़े हुए। महिलाएँ निज़ाम के शासन में सबसे ज़्यादा जुल्म का शिकार हुई थीं। महिलाएँ भी बड़ी संख्या में इस आंदोलन से आ जुड़ीं। हैदराबाद शहर इस आंदोलन का गढ़ बन गया। कम्युनिस्ट और हैदराबाद कांग्रेस इस आंदोलन की अग्रिम पंक्ति में थे। आंदोलन को देख निज़ाम ने लोगों के खिलाफ़ एक अर्द्ध-सैनिक बल रवाना किया। इसे 'रज़ाकार' (Razakars) कहा जाता था।

✓ रज़ाकार अव्वल दर्जे के सांप्रदायिक और अत्याचारी थे। रज़ाकारों ने गैर-मुसलमानों को खासतौर पर अपना निशाना बनाया। रज़ाकारों ने लूटपाट मचायी और हत्या तथा बलात्कार पर उतारू हो गए।

☞ वर्ष 1948 के सितंबर में भारतीय सेना, निज़ाम के सैनिकों पर काबू पाने के लिए हैदराबाद आ पहुँची। कुछ रोज तक रुक-रुक कर लड़ाई चली और इसके बाद निज़ाम ने आत्मसमर्पण कर दिया।

☞ निज़ाम के आत्मसमर्पण के साथ ही हैदराबाद का भारत में विलय हो गया।

❖ कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन-1920 के बाद से ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इस सिद्धांत को मान लिया था कि राज्यों का पुनर्गठन भाषा के आधार पर होगा।

❖ पुराने मद्रास प्रांत में आज के तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश शामिल थे। इसके कुछ हिस्से मौजूदा केरल एवं कर्नाटक में भी हैं।

☞ ''आंध्र आंदोलन'' (आंध्र प्रदेश नाम से अलग राज्य बनाने के लिए चलाया गया आंदोलन) ने माँग की कि ''मद्रास प्रांत के तेलुगुभाषी इलाकों को अलग करके एक नया राज्य आंध्र प्रदेश बनाया जाए।''

☞ कांग्रेस के दिग्गज गाँधीवादी नेता पोट्टी श्रीरामुलु (1901-1952) आंध्र प्रदेश के गठन के लिए अनिश्चितकालीन भूख-हड़ताल पर बैठ गए और 56 दिनों की भूख-हड़ताल के बाद पोट्टी श्रीरामुलु की 15 दिसम्बर, 1952 को मृत्यु हो गई।

☞ आखिरकार दिसंबर, 1952 में प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने आंध्र प्रदेश नाम से अलग राज्य बनाने की घोषणा की।

☞ भाषाई आधार पर गठित होने वाला भारत का पहला राज्य आन्ध्र प्रदेश है।

❖ भारत सरकार ने न्यायमूर्ति फजल अली की अध्यक्षता में सन् 1953 में राज्य पुनर्गठन आयोग (States Reorganisation Commission) का गठन किया।

☞ इस आयोग की रिपोर्ट के आधार पर सन् 1956 में राज्य पुनर्गठन अधिनियम (States Reorganisation Act) पास हुआ।

☞ इस अधिनियम के आधार पर देश में उस समय कुल 14 राज्य और 6 केंद्र-शासित प्रदेश बनाए गए।

❖ बंबई में गुजराती और मराठी भाषा बोलने वाले लोग थे, अतः इसका विभाजन कर सन् 1960 में गुजरात और महाराष्ट्र राज्य बनाए गए।

☞ पंजाब में भी हिन्दी-भाषी और पंजाबी-भाषी दो समुदाय थे, अतः सन् 1966 में इसका विभाजन करके पंजाब और हरियाणा नाम के राज्य बनाए गए। वृहत्तर पंजाब से अलग करके हिमाचल प्रदेश नाम का राज्य बनाया गया।

☞ पूर्वोत्तर भारत में नागालैंड सन् 1963 में राज्य बन गया। 1972 में असम से अलग करके मेघालय राज्य बनाया गया। इसी साल मणिपुर और त्रिपुरा भी अलग राज्य के रूप में अस्तित्व में आए। मिजोरम और अरुणाचल प्रदेश 1987 में वजूद में आए।

☞ सन् 2000 में छत्तीसगढ़ (मध्य प्रदेश से अलग होकर), उत्तराखंड (उत्तर प्रदेश से अलग होकर) और झारखण्ड (बिहार से अलग होकर) राज्य बना।

☞ 2 जून, 2014 को आन्ध्र प्रदेश से अलग होकर तेलंगाना राज्य बना।

☞ महाराष्ट्र में 'विदर्भ' क्षेत्र आज भी राज्य का रूप धारण करने के लिए आन्दोलनरत रहता है।

एक दल के प्रभुत्व का दौर
(स्वतंत्र भारत में राजनीति)

Part II Chapter Summary- 2

❖ 25 नवंबर, 1949 को संविधान सभा में दिए गए भाषण में डॉ. भीमराव अंबेडकर ने कहा था कि ''हिंदुस्तान की राजनीति में नायक-पूजा... बड़ी भूमिका अदा करती है... लेकिन राजनीति में नायक-पूजा का भाव सीधे पतन की ओर ले जाता है और यह रास्ता तानाशाही की तरफ़ जाता है...।''

❖ भारत का संविधान 26 नवम्बर, 1949 को अंगीकृत (adopted) किया गया और 24 जनवरी, 1950 को इस पर हस्ताक्षर (signed) हुए। यह संविधान 26 जनवरी, 1950 से अमल में (into effect on) आया। उस वक्त देश का शासन अंतरिम सरकार चला रही थी।

❖ भारत के चुनाव आयोग का गठन जनवरी, 1950 में हुआ। सुकुमार सेन (Sukumar Sen) पहले चुनाव आयुक्त बने।

❖ चुनाव आयोग ने पाया कि भारत के आकार को देखते हुए एक स्वतंत्र और निष्पक्ष आम चुनाव कराना कोई आसान मामला नहीं है। चुनाव कराने में निम्न चुनौतियाँ थी-

✓ चुनाव कराने के लिए चुनाव क्षेत्रों का सीमांकन ज़रूरी था।

✓ फिर, मतदाता-सूची यानी मताधिकार प्राप्त वयस्क व्यक्तियों की सूची बनाना भी आवश्यक था।

☞ भारत के पहले आम चुनाव के वक्त देश में 17 करोड़ मतदाता थे, जिनमें महज 15 फीसदी साक्षर थे। इन्हें 3200 विधायक और लोकसभा के लिए 489 सांसद चुनने थे।

☞ मतदाताओं की एक बड़ी तादाद गरीब और अनपढ़ लोगों की थी और ऐसे माहौल में यह चुनाव लोकतंत्र के लिए परीक्षा की कठिन घड़ी था।

☞ हिंदुस्तान में सार्वभौम मताधिकार (universal adult franchise) पर अमल हुआ और यह अपने आप में बड़ा जोखिम भरा प्रयोग था। एक हिंदुस्तानी संपादक ने इसे "इतिहास का सबसे बड़ा जुआ" (the biggest gamble in history) करार दिया।

☞ 'आर्गनाइजर' (Organiser) नाम की पत्रिका ने लिखा कि जवाहरलाल नेहरू "अपने जीवित रहते ही यह देख लेंगे और पछताएँगे कि भारत में सार्वभौम मताधिकार असफल रहा।"

☞ चुनावों को दो बार स्थगित करना पड़ा और आखिरकार अक्तूबर, 1951 से फरवरी, 1952 तक चुनाव हुए। बहरहाल, इस चुनाव को अमूमन '1952 का चुनाव' ही कहा जाता है, क्योंकि देश के अधिकांश हिस्सों में मतदान सन् 1952 में ही हुआ। लोगों ने इस चुनाव में बढ़-चढ़कर हिस्सेदारी की। कुल मतदाताओं में आधे से अधिक ने मतदान के दिन अपना वोट डाला।

☞ सार्वभौम मताधिकार के इस प्रयोग ने आलोचकों का मुँह बंद कर दिया। देश से बाहर के पर्यवेक्षक भी हैरान थे।

☞ हिंदुस्तान टाइम्स ने लिखा- "यह बात हर जगह मानी जा रही है कि भारतीय जनता ने विश्व के इतिहास में लोकतंत्र के सबसे बड़े प्रयोग को बखूबी अंजाम दिया।"

☞ इस प्रकार ''सन् 1952 का आम चुनाव पूरी दुनिया में लोकतंत्र के इतिहास के लिए मील का पत्थर साबित हुआ।'' अब यह दलील दे पाना संभव नहीं रहा कि लोकतांत्रिक चुनाव गरीबी अथवा अशिक्षा के माहौल में नहीं कराए जा सकते। यह बात साबित हो गई कि दुनिया में कहीं भी लोकतंत्र पर अमल किया जा सकता है।

❖ पहले आम चुनाव के समय भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस का चुनाव निहन ''दो बैलों की जोड़ी'' था।

❖ भारत में आम चुनाव-

☞ पहले आम चुनाव में फ़ैसला किया गया था कि हर एक मतदान केंद्र में प्रत्येक उम्मीदवार के लिए एक मतपेटी रखी जाएगी और मतपेटी पर उम्मीदवार का चुनाव-चिह्न अंकित होगा। प्रत्येक मतदाता को एक खाली मतपत्र दिया जाएगा जिसे वह अपने पसंद के उम्मीदवार की मतपेटी में डालेगा।

☞ शुरुआती दो चुनावों के बाद यह तरीका बदल दिया गया। अब मतपत्र पर हर उम्मीदवार का नाम और चुनाव-चिह्न अंकित किया जाने लगा। मतदाता को इस मतपत्र पर अपने पसंद के उम्मीदवार के नाम पर मुहर लगानी होती थी। यह तरीका अगले चालीस सालों तक अमल में रहा।

☞ भारत में तीसरे आम चुनाव से वर्तमान तक के चुनावों में मतदान के दो तरीके काम में लिए गए-

✓ तीसरे आम चुनाव से तेरहवें आम चुनाव तक "बैलट पेपर" (Ballot paper) का इस्तेमाल किया गया।

✓ सन् 1990 के दशक के अंत में चुनाव आयोग ने इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) का इस्तेमाल शुरू किया। सन् 2004 तक पूरे देश में "इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन" (Electronic Voting Machine : EVM) का इस्तेमाल चालू हो गया।

❖ हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रतिपादक एवं प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी मौलाना अबुल क़लाम आज़ाद (1888-1958) स्वतंत्र भारत के पहले शिक्षा मंत्री बने। आज़ाद भारत विभाजन के विरोधी थे।

❖ पहले तीन चुनावों में कांग्रेस का प्रभुत्व-

☞ सन् 1952-1967 तक का दौर भारतीय राजनीति में 'कांग्रेस के प्रभुत्व का दौर' कहलाता है।

☞ कांग्रेस ने लोकसभा के पहले चुनाव में कुल 489 सीटों में से 364 सीटें जीती। दूसरे आम चुनाव (सन् 1957) और तीसरे आम चुनाव (सन् 1962) के समय लोक सभा सीटों की संख्या 494 थी।

☞ पहले आम चुनाव में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी दूसरे नंबर पर रही, जिसे कुल 16 सीटें हासिल हुईं।

☞ सन् 1952 में कांग्रेस पार्टी को कुल वोटों में से मात्र 45 प्रतिशत वोट हासिल हुए थे लेकिन कांग्रेस को 74 फीसदी सीटें हासिल हुईं। सोशलिस्ट पार्टी वोट हासिल करने के लिहाज़ से दूसरे नंबर पर रही। उसे 1952 के चुनाव में पूरे देश में कुल 10 प्रतिशत वोट मिले थे लेकिन यह पार्टी 3 प्रतिशत सीटें भी नहीं जीत पायी।

☞ पं. जवाहरलाल नेहरू पहले आम चुनाव के बाद प्रधानमंत्री बने।

☞ सन् 1957 से 1959 तक केरल में 'डेमोक्रेटिक लेफ्ट फ्रंट' की सरकार थी। जम्मू और कश्मीर में शुरुआत में 'नेशनल कॉन्फ्रेंस' की सरकार थी।

☞ देश में लोकसभा के चुनाव के साथ-साथ विधानसभा के भी चुनाव कराए गए थे। कांग्रेस पार्टी को विधानसभा के चुनावों में भी बड़ी जीत हासिल हुई।

☞ त्रावणकोर-कोचीन (आज के केरल का एक हिस्सा), मद्रास और उड़ीसा को छोड़कर सभी राज्यों में कांग्रेस ने अधिकतर सीटों पर जीत दर्ज़ की। आखिरकार इन तीन राज्यों में भी कांग्रेस की ही सरकार बनी।

❖ राजकुमारी अमृतकौर (1889-1964) स्वतंत्र भारत के पहले मंत्रिमंडल में स्वास्थ्य मंत्री बनी। वे सन् 1957 तक स्वास्थ्य मंत्री के पद पर रहीं।

❖ सन् 1957 में केरल में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (Communist Party of India : CPI) की अगुआई में एक गठबंधन सरकार बनी।

☞ मार्च, 1957 में जो विधानसभा के चुनाव हुए उसमें कम्युनिस्ट पार्टी को केरल की विधानसभा के लिए सबसे ज्यादा- कुल 126 में से 60 सीटें मिलीं। पाँच स्वतंत्र उम्मीदवारों का भी समर्थन इस पार्टी को प्राप्त था।

☞ कम्युनिस्ट विधायक दल के नेता ई.एम.एस. नम्बूदरीपाद (E.M.S. Namboodiripad) के नेतृत्व में सरकार बनी।

☞ दुनिया में यह पहला अवसर था, जब एक कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार लोकतांत्रिक चुनावों के जरिए बनी।

☞ सन् 1959 में केंद्र की कांग्रेस सरकार ने संविधान के अनुच्छेद 356 के अंतर्गत केरल की कम्युनिस्ट सरकार को बर्खास्त कर दिया।

❖ कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (Congress Socialist Party) का गठन खुद कांग्रेस के भीतर सन् 1934 में युवा नेताओं की एक टोली ने किया था।

☞ ये नेता कांग्रेस को ज़्यादा-से-ज़्यादा परिवर्तनकामी और समतावादी (radical and egalitarian) बनाना चाहते थे। 1948

में कांग्रेस ने अपने संविधान में बदलाव किया। यह बदलाव इसलिए किया गया था ताकि कांग्रेस के सदस्य दोहरी सदस्यता न धारण कर सकें।

☞ इस वजह से कांग्रेस के समाजवादियों ने सन् 1948 में सोशलिस्ट पार्टी (Socialist Party) बनाई, जिसके संस्थापक आचार्य नरेन्द्र देव (1889-1956) थे, जिन्होंने आगे चलकर प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का भी नेतृत्व किया।

☞ समाजवादी 'लोकतांत्रिक समाजवाद' (democratic socialism) की विचारधारा में विश्वास करते थे।

☞ सोशलिस्ट पार्टी के कई टुकड़े हुए और इस प्रक्रिया में कई समाजवादी दल बने। इन दलों में, किसान मज़दूर प्रजा पार्टी, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी का नाम लिया जा सकता है।

☞ भारत के प्रमुख समाजवादी नेताओं में निम्न हैं- जयप्रकाश नारायण, अच्युत पटवर्धन, अशोक मेहता, आचार्य नरेन्द्र देव, राममनोहर लोहिया और एस.एम. जोशी।

☞ मौजूदा हिंदुस्तान के कई दलों जैसे समाजवादी पार्टी, राष्ट्रीय जनता दल, जनता दल (यूनाइटेड) और जनता दल (सेक्युलर) पर सोशलिस्ट पार्टी की छाप देखी जा सकती है।

❖ इंस्टीट्यूशनल रिवोल्यूशनरी पार्टी (स्पेनिश में इसे पीआरआई कहा जाता है) का मैक्सिको में लगभग साठ सालों तक शासन रहा। इस पार्टी की स्थापना सन् 1929 में हुई थी। तब इसे नेशनल रिवोल्यूशनरी पार्टी (National Revolutionary Party) कहा जाता था।

☞ मूल रूप से पीआरआई में राजनेता और सैनिक-नेता, मज़दूर और किसान संगठन तथा अनेक राजनीतिक दलों समेत कई किस्म के हितों का संगठन था।

☞ पीआरआई (PRI) के संस्थापक प्लूटार्को इलियास कैलस (Plutarco Elías Calles) थे।

❖ जाति विरोधी आंदोलन के नेता और दलितों को न्याय दिलाने के संघर्ष के अगुआ बाबा साहब भीमराव रामजी अंबेडकर (1891-1956) ने 'इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी' () और 'शिडयूल्ड कास्ट्स फेडरेशन' (Scheduled Castes Federation) की स्थापना की।

☞ डॉ. अंबेडकर संविधान सभा की 'प्रारूप समिति' (Drafting Committee) के अध्यक्ष थे।

☞ आज़ादी के बाद पं. नेहरू के पहले मंत्रिमंडल में विधि (कानून) मंत्री बने।

☞ हिंदू कोड बिल के मुद्दे पर अपनी असहमति दर्ज कराते हुए सन् 1951 में इन्होंने मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया।

☞ सन् 1956 में अपने हज़ारों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म अपनाया।

❖ रफी अहमद किदवई (1894-1954) ने स्वतंत्र भारत के पहले मंत्रिमंडल में संचार मंत्री, खाद्य एवं कृषि मंत्री आदि के रूप में कार्य किया।

❖ कांग्रेस के प्रभुत्व की प्रकृति-

☞ कांग्रेस पार्टी को राष्ट्रीय आंदोलन के वारिस के रूप में देखा गया। आज़ादी के आंदोलन में अग्रणी रहे अनेक नेता अब कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ रहे थे। कांग्रेस पहले से ही एक सुसंगठित पार्टी थी। बाकी दल अभी अपनी रणनीति सोच ही रहे होते थे कि कांग्रेस अपना अभियान शुरू कर देती थी। दरअसल, अनेक पार्टियों का गठन स्वतंत्रता के समय के आस-पास अथवा उसके बाद में हुआ। इस प्रकार कांग्रेस को 'अव्वल और एकलौता' होने का फायदा मिला।

☞ कांग्रेस एक सामाजिक और विचारधारात्मक गठबंधन के रूप में-

- कांग्रेस का जन्म सन् 1885 में हुआ था।
- आज़ादी से पहले के वक्त में अनेक संगठन और पार्टियों को कांग्रेस में रहने की इजाज़त थी।
- कांग्रेस ने अपने अंदर क्रांतिकारी और शांतिवादी, कंजरवेटिव और रेडिकल, गरमपंथी और नरमपंथी, दक्षिणपंथी, वामपंथी और हर धारा के मध्यमार्गियों को समाहित किया।
- कांग्रेस एक मंच की तरह थी, जिस पर अनेक समूह, हित और राजनीतिक दल तक आ जुटते थे और राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेते थे।
- कांग्रेस के गठबंधनी स्वभाव ने उसे एक असाधारण ताकत दी। अगर किसी पार्टी का स्वभाव गठबंधनी हो तो अंदरूनी मतभेदों को लेकर उसमें सहनशीलता भी ज्यादा होती है। विभिन्न समूह और नेताओं की महत्त्वाकांक्षाओं की भी उसमें समाई हो जाती है।
- विपक्ष कोई बात कहना चाहे तो कांग्रेस की विचारधारा और कार्यक्रम में उसे तुरंत जगह मिल जाती थी।

HOSHI

चुनावी प्रतिस्पर्धा के पहले दशक में कांग्रेस ने शासक-दल की भूमिका निभायी और विपक्ष की भी। इसी कारण भारतीय राजनीति के इस कालखंड को 'कांग्रेस-प्रणाली' (Congress system) कहा जाता है।

❖ कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ इंडिया (Communist Party of India) या भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने पहले आम चुनाव (लोकसभा चुनाव) में 16 सीटें जीतीं और वह सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी बनकर उभरी।

☞ भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख नेताओं में ए.के. गोपालन, एस.ए. डांगे, ई.एम.एस. नम्बूदरीपाद, पी.सी. जोशी, अजय घोष और पी. सुंदरैया के नाम लिए जाते हैं।

☞ चीन और सोवियत संघ के बीच विचारधारात्मक अंतर आने के बाद भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी सन् 1964 में एक बड़ी टूट का शिकार हुई।

☞ सोवियत संघ की विचारधारा को ठीक मानने वाले भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में रहे, जबकि इसके विरोध में राय रखने वालों ने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) (Communist Party of India-Marxist) या सीपीआई (एम) (CPI-M) नाम से अलग दल बनाया।

❖ भारतीय जनसंघ (Bharatiya Jana Sangh) का गठन सन् 1951 में हुआ था।

☞ श्यामा प्रसाद मुखर्जी (Syama Prasad Mukherjee) इसके संस्थापक-अध्यक्ष थे।

☞ इस दल की जड़ें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) और हिंदू महासभा में खोजी जा सकती हैं।

☞ भारतीय जनता पार्टी की जड़ें इसी जनसंघ में हैं।

☞ जनसंघ ने 'एक देश, एक संस्कृति और एक राष्ट्र' के विचार पर जोर दिया।

☞ जनसंघ ने भारत और पाकिस्तान को एक करके 'अखंड भारत' बनाने की बात कही।

☞ हिंदी को राजभाषा बनाने के आंदोलन में यह पार्टी सबसे आगे थी।

☞ इस पार्टी को सन् 1952 के चुनाव में लोकसभा की तीन सीटों पर सफलता मिली।

☞ जनसंघ के नेताओं में श्यामा प्रसाद मुखर्जी, दीनदयाल उपाध्याय और बलराज मधोक के नाम शामिल हैं।

❖ भारतीय जनसंघ के संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी (1901 - 1953) स्वतंत्रता के बाद पं. नेहरू के पहले मंत्रिमंडल में मंत्री बने, लेकिन पाकिस्तान के साथ संबंधों को लेकर अपने मतभेदों के चलते इन्होंने नेहरू मंत्रिमंडल से सन् 1950 में इस्तीफा दे किया।

❖ भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य रहे पं. दीन दयाल उपाध्याय (1916-1968) भारतीय जनसंघ में पहले महासचिव, फिर अध्यक्ष रहे।

☞ पं. दीन दयाल उपाध्याय 'समग्र मानवतावाद' (Integral humanism) सिद्धांत के प्रणेता थे।

❖ स्वतंत्र पार्टी-

☞ कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में जमीन की हदबंदी, खाद्यान्न के व्यापार, सरकारी अधिग्रहण और सहकारी खेती का प्रस्ताव पास हुआ था।

☞ नागपुर अधिवेशन के बाद अगस्त, 1959 में स्वतंत्र पार्टी अस्तित्व में आई।

☞ स्वतंत्र पार्टी चाहती थी कि सरकार अर्थव्यवस्था में कम से कमतर हस्तक्षेप करे। इसका मानना था कि समृद्धि सिर्फ व्यक्तिगत स्वतंत्रता के जरिए आ सकती है।

☞ इस दल ने निजी क्षेत्र को खुली छूट देने की तरफदारी की।

☞ स्वतंत्र पार्टी कृषि में जमीन की हदबंदी, सहकारी खेती और खाद्यान्न के व्यापार पर सरकारी नियंत्रण के विरुद्ध थी।

☞ स्वतंत्र पार्टी ने संयुक्त राज्य अमरीका से नजदीकी संबंध बनाने की वकालत की।

☞ स्वतंत्र पार्टी की तरफ मुख्य रूप से जमींदार और राजे-महाराजे आकर्षित हुए।

☞ इस पार्टी का नेतृत्व सी. राजगोपालाचारी, के.एम. मुंशी, एन.जी. रंगा और मीनू मसानी जैसे पुराने कांग्रेस नेता कर रहे थे।

❖ सी. राजगोपालाचारी (1878-1972)-

☞ स्वतंत्र भारत के पहले भारतीय गवर्नर-जनरल (1948-1950) बने।

☞ आज़ादी के बाद बनी अंतरिम केंद्र सरकार में मंत्री बने और बाद में मद्रास के मुख्यमंत्री भी बने।

☞ भारत रत्न से सम्मानित पहले भारतीय।

☞ स्वतंत्र पार्टी (1959) के संस्थापक रहे।

PROSITH

नियोजित विकास की राजनीति
(स्वतंत्र भारत में राजनीति)

Part II Chapter Summary- 3

❖ इस्पात की विश्वव्यापी माँग बढ़ी तो निवेश के लिहाज़ से उड़ीसा एक महत्त्वपूर्ण जगह के रूप में उभरा।

☞ उड़ीसा में लौह-अयस्क का विशाल भंडार था। उड़ीसा की राज्य सरकार ने लौह-अयस्क की इस अप्रत्याशित माँग को भुनाना चाहा। उसने अंतर्राष्ट्रीय इस्पात-निर्माताओं और राष्ट्रीय-स्तर के इस्पात-निर्माताओं के साथ सहमति-पत्र पर हस्ताक्षर किए।

☞ सरकार सोच रही थी कि इससे राज्य में ज़रूरी पूँजी-निवेश भी हो जाएगा और रोज़गार के अवसर भी बड़ी संख्या में सामने आएँगे।

☞ केंद्र सरकार को लगता है कि अगर उद्योग लगाने की अनुमति नहीं दी गई, तो इससे एक बुरी मिसाल कायम होगी और देश में पूँजी निवेश को बाधा पहुँचेगी।

☞ इसी श्रृंखला में कोरियाई समूह 'पोस्को' की एक सहायक भारतीय कम्पनी द्वारा उड़ीसा में पोस्को-इंडिया इस्पात संयंत्र (पोस्को प्लांट) लगाने का निर्णय हुआ, लेकिन विस्थापन के शिकार लोगों ने इस योजना के विरोध में प्रदर्शन किए।

☞ लौह-अयस्क के ज़्यादातर भंडार उड़ीसा के सर्वाधिक अविकसित इलाकों– खासकर राज्य के आदिवासी-बहुल जिलों में हैं।

☞ संभावित विस्थापन के शिकार आदिवासियों को डर था कि अगर यहाँ उद्योग लग गए तो उन्हें अपने घर-बार से विस्थापित होना पड़ेगा और आजीविका भी छिन जाएगी।

☞ पर्यावरणविदों को इस बात का भय था कि खनन और उद्योग से पर्यावरण प्रदूषित होगा।

❖ आज़ादी के वक्त हिंदुस्तान के सामने विकास के मॉडल-

☞ आज़ादी के बाद अपने देश में सारे के सारे फ़ैसले आपस में आर्थिक विकास के एक मॉडल या यों कहें कि एक 'विज़न' से बँधे हुए थे। लगभग सभी इस बात पर सहमत थे कि भारत के विकास का अर्थ आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक-सामाजिक न्याय दोनों ही है।

☞ इस बात पर भी सहमति थी कि इस मामले को व्यवसायी, उद्योगपति और किसानों के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। सरकार को इस मसले में प्रमुख भूमिका निभानी थी।

☞ आज़ादी के बाद के दशक में लोग-बाग 'विकास' की बात आते ही 'पश्चिम' का हवाला देते थे कि 'विकास' का पैमाना 'पश्चिमी' मुल्क है।

☞ आज़ादी के वक्त हिंदुस्तान के सामने विकास के दो मॉडल थे-

✓ पहला उदारवादी-पँजीवादी मॉडल (Liberal-capitalist Model) था, जिसे यूरोप के अधिकतर हिस्सों और संयुक्त राज्य अमरीका में अपनाया गया था।

✓ दूसरा समाजवादी मॉडल (Socialist Model) था, जिसे सोवियत संघ ने अपनाया था।

☞ आज़ादी के आंदोलन के दौरान ही राष्ट्रवादी नेताओं के मन में यह बात बिलकुल साफ़ थी कि आज़ाद भारत की सरकार के आर्थिक सरोकार अंग्रेजी हुकूमत के आर्थिक सरोकारों से एकदम अलग होंगे। आज़ाद भारत की सरकार अंग्रेजी हुकूमत की तरह संकुचित व्यापारिक हितों की पूर्ति के लिए काम नहीं करेगी।

☞ आज़ादी के आंदोलन के दौरान ही यह बात भी साफ़ हो गई थी कि गरीबी मिटाने और सामाजिक-आर्थिक पुनर्वितरण के काम का मुख्य जिम्मा सरकार का होगा।

❖ योजना आयोग-

☞ मार्च 1950 में, 'भारत सरकार के एक प्रस्ताव' के ज़रिए योजना आयोग की स्थापना हुई। यह आयोग 'एक सलाहकारी निकाय' है और इसकी सिफारिशें तभी प्रभावकारी हो पाती हैं जब मंत्रिमंडल उन्हें मंजूर करे।

☞ योजना आयोग के कार्य-

1. समुदाय के भौतिक संसाधनों की मिल्कियत और नियंत्रण को इस तरह बाँटा जाएगा, कि उससे सर्वसामान्य की भलाई हो।
2. अर्थव्यवस्था का संचालन इस तरह नहीं किया जाएगा कि धन अथवा उत्पादन के साधन एकाध जगह केंद्रित हो जाएँ और जनसामान्य की भलाई बाधित हो।
3. स्त्री और पुरुष, सभी नागरिकों को आजीविका के पर्याप्त साधनों का बराबर-बराबर अधिकार हो।

☞ भारत के प्रधानमंत्री इसके पदेन अध्यक्ष होते थे। इसके पहले अध्यक्ष पं. जवाहर लाल नेहरू थे।

☞ वर्तमान में यह आयोग अस्तित्व में नहीं है।

❖ भारत सरकार ने योजना आयोग के स्थान पर एक नई संस्था, ''नीति आयोग'' (National Institution for Transforming India : NITI Aayog) की स्थापना की।

✓ यह आयोग 1 जनवरी, 2015 को अस्तित्व में आया।

✓ नीति आयोग का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है।

✓ भारत के प्रधानमंत्री इसके पदेन अध्यक्ष होते हैं। वर्तमान अध्यक्ष प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हैं।

✓ इसके वर्तमान उपाध्यक्ष सुमन बेरी (Suman Bery) हैं।

❖ 'बॉम्बे प्लान'-

✓ सन् 1944 में उद्योगपतियों के एक समूह ने देश में नियोजित अर्थव्यवस्था चलाने का एक संयुक्त प्रस्ताव तैयार किया, जिसे 'बॉम्बे प्लान' कहा जाता है।

✓ 'बॉम्बे प्लान' की मंशा थी कि सरकार औद्योगिक तथा अन्य आर्थिक निवेश के क्षेत्र में बड़े कदम उठाए।

❖ सोवियत संघ की तरह भारत के योजना आयोग ने भी पंचवर्षीय योजनाओं का विकल्प चुना।

☞ विचार था कि भारत सरकार अपनी तरफ़ से एक दस्तावेज़ तैयार करेगी, जिसमें अगले पाँच सालों के लिए उसकी आमदनी और खर्च की योजना होगी।

☞ इस योजना के अनुसार केंद्र सरकार और सभी राज्य-सरकारों के बजट को दो हिस्सों में बाँटा गया-

✓ एक हिस्सा 'गैरयोजना-व्यय' (Non-plan Expenditure/Budget) का था। इसके अंतर्गत सालाना आधार पर दैनंदिन मदों पर खर्च करना था।

✓ दूसरा हिस्सा 'योजना-व्यय' (Plan Expenditure/Budget) का था। योजना में तय की गई प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए इसे पाँच साल की अवधि में खर्च करना था।

❖ सन् 1951 में प्रथम पंचवर्षीय योजना का प्रारूप जारी हुआ।

☞ प्रथम पंचवर्षीय योजना की अवधि सन् 1951 से 1956 तक थी। योजना को तैयार करने में जुटे विशेषज्ञों में एक के. एन. राज (Kakkadan Nandanath Rajan, popularly known as K.N. Raj) थे।

☞ पहली पंचवर्षीय योजना में ज़्यादा ज़ोर 'प्राथमिक क्षेत्र' (Primary sector) अर्थात 'कृषि-क्षेत्र' पर था। इसी योजना के अंतर्गत बाँध और सिंचाई के क्षेत्र में निवेश किया गया गया। भाखड़ा-नांगल जैसी विशाल परियोजनाओं के लिए बड़ी धनराशि आबंटित की गई।

☞ पहली पंचवर्षीय योजना में कृषि और सामुदायिक विकास पर बजट खर्चे की 15.1 प्रतिशत राशि खर्च तथा सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण पर 17.0 प्रतिशत राशि खर्च का प्रावधान था।

☞ इस पंचवर्षीय योजना में माना गया था कि देश में भूमि के वितरण का जो ढर्रा मौजूद है उससे कृषि के विकास को सबसे बड़ी बाधा पहुँचती है। इस योजना में भूमि-सुधार पर ज़ोर दिया गया और उसे देश के विकास की बुनियादी चीज़ माना गया।

❖ सन् 1956 में शुरू दूसरी पंचवर्षीय योजना में 'भारी उद्योगों' के विकास पर ज़ोर दिया गया।

☞ पी.सी. महालनोबिस (Prasanta Chandra Mahalanobis) के नेतृत्व में अर्थशास्त्रियों और योजनाकारों की एक टोली ने यह योजना तैयार की थी।

☞ पहली योजना का मूलमंत्र था धीरज (patience), लेकिन दूसरी योजना की कोशिश तेज़ गति से संरचनात्मक बदलाव (quick structural transformation) करने की थी।

☞ सरकार ने देसी उद्योगों को संरक्षण देने के लिए आयात पर भारी शुल्क लगाया।

☞ बहरहाल, इसके साथ कुछ समस्याएँ भी थी।

✓ भारत प्रौद्योगिकी के लिहाज़ से पिछड़ा हुआ था और विश्व बाज़ार से प्रौद्योगिकी खरीदने में उसे अपनी बहुमूल्य विदेशी मुद्रा खर्च करनी पड़ी।

✓ इसके अतिरिक्त, उद्योगों ने कृषि की अपेक्षा निवेश को ज़्यादा आकर्षित किया। ऐसे में खाद्यान्न-संकट की आशंका अलग से सता रही थी।

✓ भारत के योजनाकारों को उद्योग और कृषि के बीच संतुलन साधने में भारी कठिनाई आई।

❖ पी.सी. महालनोबिस (1893-1972) विख्यात वैज्ञानिक एवं सांख्यिकीविद थे।

☞ इन्होंने भारतीय सांख्यिकी संस्थान (1931) की स्थापना की।

☞ ये दूसरी पंचवर्षीय योजना के योजनाकार थे।

❖ केरल में विकास और नियोजन के लिए जो रास्ता चुना गया उसे 'केरल मॉडल' (Kerala model) कहा जाता है।

☞ इस मॉडल में शिक्षा, स्वास्थ्य, भूमि-सुधार, कारगर खाद्य-वितरण और गरीबी-उन्मूलन पर ज़ोर दिया जाता रहा है।

☞ केरल में प्रति व्यक्ति आय अपेक्षाकृत कम है और यहाँ औद्योगिक-आधार भी तुलनात्मक रूप से कमज़ोर रहा है। इसके बावजूद केरल में साक्षरता शत-प्रतिशत है। आयु प्रत्याशा बढ़ी है और वहाँ शिशु मृत्यु-दर, मातृ मृत्यु-दर और जन्म-दर भी कम है। केरल में लोगों को कहीं ज़्यादा चिकित्सा-सुविधा मुहैया है।

❖ सन् 1987 से 1991 के बीच सरकार ने 'नव लोकतांत्रिक पहल' (New Democratic Initiative) नाम से अभियान चलाया। इसके अंतर्गत विकास के अभियान चले, जिसमें विज्ञान और पर्यावरण के मामले में शत-प्रतिशत साक्षरता का अभियान शामिल है।

❖ कृषि बनाम उद्योग–

☞ भारत जैसी पिछड़ी अर्थव्यवस्था में कृषि और उद्योग के बीच किसमें ज़्यादा संसाधन लगाए जाने चाहिए। कइयों का मानना था कि दूसरी पंचवर्षीय योजना में कृषि के विकास की रणनीति का अभाव था और इस योजना के दौरान उद्योगों पर ज़ोर देने के कारण खेती और ग्रामीण इलाकों को चोट पहुँची।

☞ 'इकॉनोमी ऑफ परमानेंस' (Economy of Permanence) के लेखक जे.सी. कुमारप्पा (1892–1960) ने भारत में गाँधीवादी आर्थिक नीतियों को लागू करने की कोशिश की।

✓ जे.सी. कुमारप्पा जैसे गाँधीवादी अर्थशास्त्रियों ने एक वैकल्पिक योजना का खाका प्रस्तुत किया था जिसमें ग्रामीण औद्योगीकरण पर ज़्यादा ज़ोर था।

☞ चौधरी चरण सिंह ने भारतीय अर्थव्यवस्था के नियोजन में कृषि को केंद्र में रखने की बात बड़े सुविचारित और दमदार ढंग से उठायी थी।

✓ उन्होंने कहा कि नियोजन से शहरी और औद्योगिक तबके समृद्ध हो रहे हैं और इसकी कीमत किसानों और ग्रामीण जनता को चुकानी पड़ रही है।

✓ चौधरी चरण सिंह कांग्रेस पार्टी में थे और बाद में उससे अलग होकर इन्होंने भारतीय लोकदल नामक पार्टी बनाई।

☞ कई लोगों का सोचना था कि औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि दर को तेज़ किए बगैर गरीबी के मकड़जाल से छुटकारा नहीं मिल सकता।

☞ ऐसे लोगों की एक दलील यह भी थी कि यदि सरकार कृषि पर ज़्यादा धनराशि खर्च करती तब भी ग्रामीण गरीबी की विकराल समस्या का समाधान न कर पाती।

❖ निजी क्षेत्र बनाम सार्वजनिक क्षेत्र–

☞ विकास के जो दो जाने-माने मॉडल थे, भारत ने उनमें से किसी को नहीं अपनाया।

☞ पूँजीवादी मॉडल में विकास का काम पूर्णतया निजी क्षेत्र के भरोसे होता है। भारत ने यह रास्ता नहीं अपनाया।

☞ भारत ने विकास का समाजवादी मॉडल भी नहीं अपनाया जिसमें निजी संपत्ति को खत्म कर दिया जाता है और हर तरह के उत्पादन पर राज्य का नियंत्रण होता है।

☞ भारत में इन दोनों ही मॉडल की कुछ एक बातों को लिया गया और अपने देश में इन्हें मिले-जुले रूप में लागू किया गया। इसी कारण भारतीय अर्थव्यवस्था को 'मिश्रित-अर्थव्यवस्था' कहा जाता है।

☞ खेती-किसानी, व्यापार और उद्योगों का एक बड़ा भाग निजी क्षेत्र के हाथों में रहा। राज्य ने अपने हाथ में भारी उद्योगों को रखा और उसने आधारभूत ढाँचा प्रदान किया। राज्य ने व्यापार का नियमन किया और कृषि के क्षेत्र में कुछ बड़े हस्तक्षेप किए।

☞ इस तरह के मिले-जुले मॉडल की आलोचना दक्षिणपंथी और वामपंथी, दोनों खेमों से हुई।

✓ आलोचकों का कहना था कि योजनाकारों ने निजी क्षेत्र को पर्याप्त जगह नहीं दी है।

✓ विशाल सार्वजनिक क्षेत्र ने ताकतवर निहित स्वार्थों को खड़ा किया है और इन न्यस्त हितों ने निवेश के लिए लाइसेंस तथा परमिट की प्रणाली खड़ी करके निजी पूँजी की राह में रोड़े अटकाए हैं।

✓ इसके अतिरिक्त सरकार ने ऐसी चीज़ों के आयात पर बाधा खड़ी की है जिन्हें घरेलू बाजार में बनाया जा सकता हो और ऐसी चीजों के उत्पादन का बाज़ार एक तरह से प्रतिस्पर्धाविहीन है। इसकी वज़ह से निजी क्षेत्र के पास अपने उत्पादों की गुणवत्ता सुधारने अथवा उन्हें सस्ता करने की कोई हड़बड़ी नहीं रही।

✓ सरकार ने अपने नियंत्रण में ज़रूरत से ज़्यादा चीज़ें रखी हैं। इससे भ्रष्टाचार और अकुशलता बढ़ी है।

✓ कुछ ऐसे आलोचक भी थे जो सोचते थे कि सरकार को जितना करना चाहिए था उतना उसने नहीं किया। इन आलोचकों ने ध्यान दिलाया कि जनता की शिक्षा अथवा चिकित्सा के मद में सरकार ने कुछ खास धनराशि खर्च नहीं की।

✓ दरअसल, सरकार ने केवल उन्हीं क्षेत्रों में हस्तक्षेप किया जहाँ निजी क्षेत्र जाने के लिए तैयार नहीं था और इस तरह से सरकार ने निजी क्षेत्र की मुनाफा कमाने में मदद की।

✓ इसके अतिरिक्त, मदद गरीबों की होनी चाहिए थी लेकिन राज्य के हस्तक्षेप के फलस्वरूप एक नया 'मध्यवर्ग' उठ खड़ा हुआ जो बगैर खास जिम्मेदारी के मोटी तनख्वाह सहित अन्य सुविधाओं को भोग रहा है।

❖ आज़ाद भारत के सामने तीन मुख्य चुनौतियाँ थी, जिनमें तीसरी चुनौती सबसे कठिन साबित हुई। नियोजित विकास की शुरुआती कोशिशों को देश के आर्थिक विकास और सभी नागरिकों की भलाई के लक्ष्य में आंशिक सफलता मिली।

☞ नियोजित विकास के शुरुआती दौर में भारत के आगामी आर्थिक विकास की बुनियाद पड़ी। भारत के इतिहास की कुछ सबसे बड़ी विकास-परियोजनाएँ इसी अवधि में शुरू हुईं। इसमें सिंचाई और बिजली-उत्पादन के लिए शुरू की गई भाखड़ा-नांगल और हीराकुंड जैसी विशाल बाँध परियोजनाएँ शामिल हैं।

☞ सार्वजनिक क्षेत्र के कुछ भारी उद्योग जैसे– इस्पात-संयंत्र, तेल-शोधक कारखाने, विनिर्माता इकाइयाँ, रक्षा-उत्पादन आदि– इसी अवधि में शुरू हुए।

✓ इस दौर में परिवहन और संचार के आधारभूत ढाँचे में भी काफ़ी इजाफ़ा हुआ।

☞ भूमि सुधार–

✓ भूमि सुधार के क्षेत्र में सबसे महत्त्वपूर्ण और सफल प्रयास जमींदारी प्रथा को समाप्त करने का था।

☞ खाद्य संकट–

✓ 1960 के दशक में कृषि की दशा बद से बदतर होती गई। सन् 1965 से 1967 के बीच देश के अनेक हिस्सों में सूखा पड़ा। इसी अवधि में भारत ने दो युद्धों का सामना भी किय। इन सारी बातों के कारण खाद्यान्न की भारी कमी हो गई।

✓ बिहार में खाद्यान्न संकट सबसे ज़्यादा विकराल था।

✓ खाद्यान्न के अभाव में कुपोषण बड़े पैमाने पर फैला। सन् 1967 में बिहार में मृत्यु दर पिछले साल की तुलना में 34 प्रतिशत बढ़ गई थी।

✓ इन वर्षों के दौरान बिहार में उत्तर भारत के अन्य राज्यों की तुलना में खाद्यान्न की कीमतें भी काफ़ी बढ़ीं।

✓ खाद्य संकट के कई परिणाम हुए। सरकार को गेहूँ का आयात करना पड़ा और विदेशी मदद (खासकर संयुक्त राज्य अमरीका की) भी स्वीकार करनी पड़ी।

✓ अब योजनाकारों के सामने पहली प्राथमिकता तो यही थी कि किसी भी तरह खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भरता हासिल की जाए।

❖ हरित क्रांति–

☞ खाद्यान्न संकट की इस हालत में देश पर बाहरी दबाव पड़ने की आशंका बढ़ गई थी। भारत विदेशी खाद्य-सहायता पर निर्भर हो चला था, खासकर संयुक्त राज्य अमरीका के। संयुक्त राज्य अमरीका ने इसकी एवज में भारत पर अपनी आर्थिक नीतियों को बदलने के लिए ज़ोर डाला।

☞ ऐसी स्थिति में सरकार ने खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए कृषि की एक नई रणनीति अपनाई।

☞ सरकार ने अब उन इलाकों पर ज़्यादा संसाधन लगाने का फ़ैसला किया जहाँ सिंचाई सुविधा मौजूद थी और जहाँ के किसान समृद्ध थे।

☞ सरकार ने उच्च गुणवत्ता के बीज, उर्वरक, कीटनाशक और बेहतर सिंचाई सुविधा बड़े अनुदानित मूल्य पर मुहैया कराना शुरू किया।

☞ सरकार ने इस बात की भी गारंटी दी कि उपज को एक निर्धारित मूल्य पर खरीद लिया जाएगा।

☞ यही उस परिघटना की शुरुआत थी, जिसे 'हरित क्रांति' (Green Revolution) कहा जाता है।

☞ हरित क्रांति से देश में खाद्यान्न की उपलब्धता में बढ़ोतरी हुई।

☞ हरित क्रांति के परिणामस्वरूप ज़्यादातर गेहूँ की पैदावार बढ़ी।

☞ हरित क्रांति के दो और प्रभाव हुए–

1. पहला असर तो यह हुआ कि गरीब किसानों और भू-स्वामियों के बीच का अंतर मुखर हो उठा।

2. दूसरे, हरित क्रांति के कारण कृषि में मंझोले दर्जे के किसानों यानी मध्यम श्रेणी के भू-स्वामित्व वाले किसानों का उभार हुआ।

❖ 'मिल्कमैन ऑफ़ इंडिया' (Milkman of India) के नाम से मशहूर वर्गीज कूरियन (Verghese Kurien) ने गुज़रात सहकारी दुग्ध एवं विपणन परिसंघ की विकास कथा में केंद्रीय भूमिका निभायी और 'अमूल' की शुरुआत की।

☞ आणंद (गुज़रात) में सहकारी दूध उत्पादन का आंदोलन 'अमूल' (Anand Milk Union Limited, abbreviated as *Amul*) कायम है।

☞ 'दूध उत्पादन' बढ़ोतरी सम्बन्धी यह आंदोलन 'श्वेत क्रांति' (White Revolution) कहलाया।

☞ वर्गीज कूरियन (Verghese Kurien) 'भारत में श्वेत क्रांति के जनक' (Father of the White Revolution of India) कहे जाते हैं।

❖ सन् 1970 में 'ऑपरेशन फ्लड' (Operation Flood) के नाम से एक ग्रामीण विकास कार्यक्रम शुरू हुआ था।

☞ 'ऑपरेशन फ्लड' के अंतर्गत सहकारी दूध-उत्पादकों को उत्पादन और विपणन के एक राष्ट्रव्यापी तंत्र से जोड़ा गया।

☞ बहरहाल, 'ऑपरेशन फ्लड' सिर्फ़ डेयरी-कार्यक्रम नहीं था। इस कार्यक्रम में डेयरी के काम को विकास के एक माध्यम के रूप में अपनाया गया था, ताकि ग्रामीण लोगों को रोज़गार के अवसर प्राप्त हों, उनकी आमदनी बढ़े तथा गरीबी दूर हो।

❖ सन् 1960 के दशक में पं. नेहरू की मृत्यु के बाद कांग्रेस-प्रणाली संकट से घिरने लगी। इंदिरा गाँधी जननेता बनकर उभरीं।

☞ इंदिरा गाँधी ने फ़ैसला किया कि अर्थव्यवस्था के नियंत्रण और निर्देशन में राज्य और बड़ी भूमिका निभाएगा।

☞ सन् 1967 के बाद की अवधि में 14 निजी बैंकों का राष्ट्रीयकरण (1969 ई. में) कर दिया गया।

☞ सरकार ने गरीबों की भलाई के लिए अनेक कार्यक्रमों की घोषणा की।

☞ इन परिवर्तनों के साथ ही साथ सरकार का विचारधारात्मक रुझान समाजवादी नीतियों की तरफ बढ़ा।

❖ बहरहाल, सरकारी नियंत्रण वाली अर्थव्यवस्था के पक्ष में बनी सहमति ज़्यादा दिनों तक कायम नहीं रही।

✓ सार्वजनिक क्षेत्र के कुछ उद्यमों में भ्रष्टाचार और अकुशलता का ज़ोर बढ़ा।

✓ नौकरशाही भी आर्थिक विकास में ज़्यादा सकारात्मक भूमिका नहीं निभा रही थी।

☞ जनता का भरोसा टूटता देख नीति-निर्माताओं ने 1980 के दशक के बाद से अर्थव्यवस्था में राज्य की भूमिका को कम कर दिया।

भारत के विदेश संबंध
(स्वतंत्र भारत में राजनीति)

Part II Chapter Summary- 4

❖ मार्च, 1949 में संविधान सभा की एक बहस के दौरान पं. जवाहर लाल नेहरू ने कहा कि "... आज़ादी बुनियादी तौर पर विदेश संबंधों से ही बनी होती है। यही आज़ादी की कसौटी भी है।... जिस हद तक आपके हाथ से ये संबंध छूटे और जिन मसलों में छूटे- वहाँ तक आप आज़ाद नहीं रहते।"

☞ एक राष्ट्र के रूप में भारत का जन्म विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि में हुआ था। ऐसे में भारत ने अपनी विदेश नीति में अन्य सभी देशों की संप्रभुता का सम्मान करने और शांति कायम करके अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने का लक्ष्य सामने रखा।

✓ इस लक्ष्य की प्रतिध्वनि संविधान के नीति-निर्देशक सिद्धांतों (Directive Principles of State Policy) में सुनाई देती है।

☞ भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 (Article 51) में 'अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के बढ़ावे' के लिए राज्य के नीति-निर्देशक सिद्धांत के हवाले से कहा गया है कि राज्य :-

✓ अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा की अभिवृद्धि का,

✓ राष्ट्रों के बीच न्यायसंगत और सम्मानपूर्ण संबंधों को बनाए रखने का,

✓ संगठित लोगों के एक-दूसरे से व्यवहारों में अंतर्राष्ट्रीय विधि और संधि-बाध्यताओं के प्रति आदर बढ़ाने का, और

✓ अंतर्राष्ट्रीय विवादों को माध्यस्थम द्वारा निपटारे के लिए प्रोत्साहन देने का, प्रयास करेगा।

☞ विकासशील देश आर्थिक और सुरक्षा की दृष्टि से ज्यादा ताकतवर देशों पर निर्भर होते हैं। इस निर्भरता का भी उनकी विदेश नीति पर जब-तब असर पड़ता है।

☞ दूसरे विश्वयुद्ध के बाद के दौर में अनेक विकासशील देशों ने ताकतवर देशों की मर्जी को ध्यान में रखकर अपनी विदेश नीति अपनाई क्योंकि इन देशों से इन्हें अनुदान अथवा कर्ज मिल रहा था।

❖ गुटनिरपेक्षता की नीति-

☞ 20वीं सदी में पूरी दुनिया में उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष चल रहे थे। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन भी इसी विश्वव्यापी संघर्ष का हिस्सा था। इस आंदोलन का असर एशिया और अफ्रीका के कई मुक्ति आंदोलनों पर हुआ।

☞ नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान 'इंडियन नेशनल आर्मी' (आई.एन.ए.) का गठन किया था।

☞ भारत का स्वतंत्रता आंदोलन जिन उदात्त विचारों से प्रेरित था उनका असर भारत की विदेश नीति पर भी पड़ा। बहरहाल, भारत को जिस वक्त आज़ादी हासिल हुई उस समय शीतयुद्ध का दौर भी शुरू हो चुका था।

☞ शीतयुद्ध के दौर में दुनिया के देश दो खेमों में बँट रहे थे। एक खेमे का अगुआ संयुक्त राज्य अमरीका था और दूसरे का सोवियत संघ।

☞ इसी दौर में संयुक्त राष्ट्र संघ अस्तित्व में आया; परमाणु हथियारों का निर्माण शुरू हुआ; अनौपनिवेशीकरण (decolonization) की प्रक्रिया भी इसी दौर में आरंभ हुई थी। भारत के नेताओं को अपने राष्ट्रीय हित इसी संदर्भ के दायरे में साधने थे।

☞ नेहरू की भूमिका-

✍ भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू प्रधानमंत्री के साथ-साथ विदेश मंत्री भी थे।

✍ उन्होंने सन् 1946 से 1964 तक भारत की विदेश नीति की रचना और क्रियान्वयन पर गहरा प्रभाव डाला।

✍ नेहरू की विदेश नीति के तीन बड़े उद्देश्य थे-

✓ कठिन संघर्ष से प्राप्त संप्रभुता को बचाए रखना।

✓ क्षेत्रीय अखंडता को बनाए रखना।

✓ तेज़ रफ्तार से आर्थिक विकास करना।

✍ नेहरू इन उद्देश्यों को गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाकर हासिल करना चाहते थे।

✍ उन दिनों देश में कुछ समूह ऐसे भी थे जिनका मानना था कि भारत को अमरीकी खेमे के साथ ज्यादा नज़दीकी बढ़ानी चाहिए क्योंकि इस खेमे की प्रतिष्ठा लोकतंत्र के हिमायती के रूप में थी। ऐसा सोचने वालों में डा. भीमराव अंबेडकर भी शामिल थे।

- साम्यवाद की विरोधी कुछ राजनीतिक पार्टियाँ भी चाहती थी कि भारत अपनी विदेश नीति अमरीका के पक्ष में बनाए। ऐसे दलों में भारतीय जन संघ और स्वतंत्र पार्टी प्रमुख थे।

☞ दो खेमों से दूरी–

- आज़ाद भारत की विदेश नीति में शांतिपूर्ण विश्व का सपना था और इसके लिए भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति का पालन किया।
- भारत, अमरीका और सोवियत संघ की अगुवाई वाले सैन्य गठबंधनों से अपने को दूर रखना चाहता था। अमरीका ने उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (NATO) और सोवियत संघ ने इसके जवाब में 'वारसा पैक्ट' नामक संधि संगठन बनाया था।
- भारत ने संतुलन साधने की यह कठिन कोशिश थी और कभी-कभी संतुलन बहुत कुछ नहीं भी सध पाता था।

✓ सन् 1956 में जब ब्रिटेन ने स्वेज नहर के मामले को लेकर मिस्र पर आक्रमण किया तो भारत ने इस नव-औपनिवेशिक हमले के विरुद्ध विश्वव्यापी विरोध की अगुवाई की।

✓ सन् 1956 में सोवियत संघ ने हंगरी पर आक्रमण किया था लेकिन भारत ने सोवियत संघ के इस कदम की सार्वजनिक निंदा नहीं की।

- ऐसी स्थिति के बावजूद, भारत को दोनों खेमों के देशों ने सहायता और अनुदान दिए।
- अमरीका, सोवियत संघ से भारत की बढ़ती हुई दोस्ती को लेकर नाराज जरूर था।
- जनवरी, 1947 में पं. जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि "आमतौर पर हमारी नीति ताकत की राजनीति से अपने को अलग रखने और महाशक्तियों के एक खेमे के विरुद्ध दूसरे खेमे में शामिल न होने की है।... हमें दोनों के साथ दोस्ताना संबंध रखना है, साथ ही उनके खेमे में शामिल भी नहीं होना है।..."

☞ सन् 1977 में जनता पार्टी की सरकार बनी थी। इस सरकार ने घोषणा की कि 'सच्ची गुटनिरपेक्ष नीति' (genuine non-alignment) का पालन किया जाएगा।

✓ इसका आशय यह था कि विदेश नीति में सोवियत संघ के प्रति आए झुकाव को खत्म किया जाएगा।

✓ इसके बाद की सभी सरकारों ने (कांग्रेसी या गैर-कांग्रेसी) चीन के साथ बेहतर संबंध बनाने और अमरीका के साथ नजदीकी रिश्ते बनाने की पहल की।

- रूस लगातार भारत का एक महत्त्वपूर्ण मित्र बना हुआ है लेकिन 1990 के बाद से रूस का अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व कम हुआ है। इसी कारण भारत की विदेश नीति में अमरीका समर्थक रणनीतियाँ अपनाई गई हैं।
- मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय परिवेश में सैन्य-हितों के बजाय आर्थिक-हितों का ज़ोर ज़्यादा है।
- 'कश्मीर' भारत-पाक संबंधों के बीच मुख्य मसले के तौर पर कायम है लेकिन संबंधों को सामान्य बनाने के लिए दोनों देशों ने कई प्रयास किए हैं। सांस्कृतिक आदान-प्रदान, नागरिकों की एक-दूसरे के देश में आवाजाही और पारस्परिक आर्थिक सहयोग को दोनों देशों ने बढ़ावा दिया।

☞ एफ्रो-एशियाई एकता–

- पं. नेहरू की अगुवाई में भारत ने मार्च, 1947 में ही एशियाई संबंध सम्मेलन (एशियन रिलेशंस कांफ्रेंस) का आयोजन कर डाला।
- भारत ने इंडोनेशिया की आज़ादी के लिए भरपूर प्रयास किए। इसके लिए भारत ने सन् 1949 में इंडोनेशिया के स्वतंत्रता-संग्राम के समर्थन में एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन किया।
- भारत अनौपनिवेशीकरण की प्रक्रिया का प्रबल समर्थक था और उसने पूरी दृढ़ता से नस्लवाद का, खासकर दक्षिण अफ्रीका में जारी रंगभेद का विरोध किया।
- सन् 1955 में इंडोनेशिया के एक शहर बांडुंग में 'एफ्रो-एशियाई सम्मेलन' (Afro-Asian Conference) हुआ, जिसे आमतौर पर 'बांडुंग-सम्मेलन' (Bandung Conference) के नाम से जानते हैं।

✓ बांडुंग-सम्मेलन में ही गुटनिरपेक्ष आंदोलन की नींव पड़ी।

- गुटनिरपेक्ष आंदोलन (Non-Aligned Movement : NAM) का पहला सम्मेलन सितंबर, 1961 में बेलग्रेड (यूगोस्लाविया) में हुआ।

❖ चीन के साथ शांति और संघर्ष–

☞ चीनी क्रांति 1949 में हुई थी। इस क्रांति के बाद भारत, चीन की कम्युनिस्ट सरकार को मान्यता देने वाले पहले देशों में एक था।

☞ आज़ाद भारत ने चीन के साथ अपने रिश्तों की शुरुआत बड़े दोस्ताना ढंग से की।

☞ शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के पाँच सिद्धांतों (Five Principles of Peaceful Coexistence) यानी 'पंचशील' (Panchsheel) की घोषणा भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू (Jawaharlal Nehru) और चीन के प्रमुख चाऊ एन लाई (Zhou Enlai) ने संयुक्त रूप से 29 अप्रैल, 1954 को की।

☞ चीन का आक्रमण, 1962 :-

- चीन के साथ भारत के इस दोस्ताना रिश्ते में निम्न कारणों से खटास आई-

✓ चीन ने सन् 1950 में तिब्बत पर कब्ज़ा कर लिया। इससे भारत और चीन के बीच ऐतिहासिक रूप से जो एक मध्यवर्ती राज्य बना चला आ रहा था, वह खत्म हो गया।

✓ तिब्बत के धार्मिक नेता दलाई लामा ने भारत से राजनीतिक शरण माँगी और सन् 1959 में भारत ने उन्हें शरण दे दी। चीन ने आरोप लगाया कि भारत सरकार अंदरूनी तौर पर चीन विरोधी गतिविधियों को हवा दे रही है।

✓ भारत और चीन के बीच एक सीमा-विवाद भी उठ खड़ा हुआ था। मुख्य विवाद चीन से लगी लंबी सीमा-रेखा के पश्चिमी और पूर्वी छोर के बारे में था।

✓ चीन ने भारतीय भू-क्षेत्र में पड़ने वाले दो इलाकों– जम्मू-कश्मीर के लद्दाख वाले हिस्से के 'अक्साई-चीन' (Aksai-chin) और अरुणाचल प्रदेश के अधिकांश हिस्सों पर अपना अधिकार जताया। अरुणाचल प्रदेश को उस समय 'नेफा' (North–East Frontier Agency : NEFA) या 'उत्तर-पूर्वी सीमांत' कहा जाता था।

✓ भारत का दावा था कि चीन के साथ सीमा-रेखा का मामला अंग्रेजी-शासन के समय ही सुलझाया जा चुका है, लेकिन चीन की सरकार का कहना था कि अंग्रेजी शासन के समय का फ़ैसला नहीं माना जा सकता।

✓ सन् 1957 से 1959 के बीच चीन ने 'अक्साई-चीन' इलाके पर कब्ज़ा कर लिया और इस इलाके में उसने रणनीतिक बढ़त हासिल करने के लिए एक सड़क बनाई। दोनों देशों की सेनाओं के बीच सीमा पर कई बार झड़प हुई।

✓ चीन ने अक्तूबर, 1962 में दोनों विवादित क्षेत्रों पर बड़ी तेज़ी से व्यापक स्तर पर हमला किया। पहला हमला एक हफ्ते तक चला और इस दौरान चीनी सेना ने अरुणाचल प्रदेश के कुछ महत्त्वपूर्ण इलाकों पर कब्ज़ा कर लिया।

✓ नवंबर में हमले के अगले दौर के दरम्यान लद्दाख से लगे पश्चिमी मोर्चे पर भारतीय सेना ने चीन की बढ़त रोकी लेकिन पूर्व में चीनी सेना आगे बढ़ते हुए असम के मैदानी हिस्से के प्रवेशद्वार तक पहुँच गई।

✓ आखिरकार, चीन ने एकतरफा युद्धविराम घोषित किया।

✓ चीन-युद्ध से भारत की छवि को देश और विदेश दोनों ही जगह धक्का लगा। पं. नेहरू की छवि भी थोड़ी धूमिल हुई। चीन के इरादों को समय रहते न भाँप सकने और सैन्य तैयारी न कर पाने को लेकर नेहरू की बड़ी आलोचना हुई।

✓ पं. नेहरू के नजदीकी सहयोगी और तत्कालीन रक्षामंत्री वी. के. कृष्णमेनन को भी मंत्रिमंडल छोड़ना पड़ा।

✓ सोवियत संघ इस संकट की घड़ी में तटस्थ बना रहा।

✓ भारत-चीन संघर्ष का असर विपक्षी दलों पर भी हुआ। इस युद्ध और चीन-सोवियत संघ के बीच बढ़ते मतभेद से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा) के अंदर बड़ी उठा-पटक मची।

✓ भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी सन् 1964 में टूट गई। इस पार्टी के भीतर जो खेमा चीन का पक्षधर था उसने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी- मार्क्सवादी (CPI-M) या 'माकपा' बनाई।

✍ सन् 1962 के बाद भारत-चीन संबंध-

✓ सन् 1976 में दोनों देशों के बीच पूर्ण राजनयिक संबंध बहाल हो सके। शीर्ष नेता के तौर पर पहली बार अटल बिहारी वाजपेयी (वे तब विदेश मंत्री थे) सन् 1979 में चीन के दौरे पर गए।

✓ बाद में राजीव गाँधी बतौर प्रधानमंत्री चीन के दौरे पर गए।

✍ निर्देशक चेतन आनंद की फिल्म 'हकीकत' की पृष्ठभूमि में सन् 1962 के चीनी आक्रमण को दर्शाया गया है।

❖ सन् 1962 के बाद भारत को अपने सीमित संसाधन खासतौर से रक्षा क्षेत्र में लगाने पड़े। भारत को अपने सैन्य ढाँचे का आधुनिकीकरण करना पड़ा।

☞ सन् 1962 में रक्षा-उत्पाद विभाग (Department of Defence Production) और सन् 1965 में रक्षा आपूर्ति विभाग (Department of Defence Supplies) की स्थापना हुई।

☞ सन् 1962 के घटनाक्रम का भारत की तीसरी पंचवर्षीय योजना (1961-66) पर असर पड़ा और इसके बाद लगातार तीन एक-वर्षीय योजना पर अमल हुआ। चौथी पंचवर्षीय योजना सन् 1969 में ही शुरू हो सकी।

❖ वी.के. कृष्णमेनन (1897-1974)- इंग्लैंड में भारतीय उच्चायुक्त एवं बाद में संयुक्त राष्ट्र में भारतीय प्रतिनिधिमंडल के मुखिया रहे। सन् 1957 से रक्षा मंत्री रहे। सन् 1962 में भारत-चीन युद्ध के बाद इस्तीफा दिया।

❖ तिब्बत-

☞ तिब्बत मध्य एशिया का मशहूर पठार है।

☞ ऐतिहासिक रूप से तिब्बत भारत और चीन के बीच विवाद का एक बड़ा मसला रहा है।

☞ सन् 1950 में चीन ने तिब्बत पर नियंत्रण कर लिया। तिब्बत के ज़्यादातर लोगों ने चीनी कब्ज़े का विरोध किया।

☞ सन् 1954 में जब भारत और चीन के बीच पंचशील समझौते पर हस्ताक्षर हुए तो इसके प्रावधानों में एक बात यह भी शामिल थी कि दोनों देश एक-दूसरे की क्षेत्रीय संप्रभुता का सम्मान करेंगे। चीन ने इस प्रावधान का अर्थ लगाया कि भारत तिब्बत पर चीनी दावेदारी की बात को स्वीकार कर रहा है।

☞ चीन आश्वासन दे चुका था कि तिब्बत को चीन के अन्य इलाकों से कहीं ज़्यादा स्वायत्तता दी जाएगी।

☞ सन् 1958 में चीनी आधिपत्य के विरुद्ध तिब्बत में सशस्त्र विद्रोह हुआ। इस विद्रोह को चीन की सेनाओं ने दबा दिया।

☞ इसी दौरान तिब्बत के पारंपरिक नेता दलाई लामा ने सीमा पारकर भारत में प्रवेश किया और सन् 1959 में भारत से शरण माँगी। भारत ने दलाई लामा को शरण दे दी।

☞ चीन ने भारत के इस कदम का कड़ा विरोध किया।

☞ हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में संभवतया तिब्बती शरणार्थियों की सबसे बड़ी बस्ती है। दलाई लामा ने भी भारत में धर्मशाला को ही अपना निवास-स्थान बनाया है।

☞ भारत के अनेक राजनीतिक दलों (सोशलिस्ट पार्टी और भारतीय जन संघ भी शामिल हैं।) ने तिब्बत की आज़ादी के प्रति अपना समर्थन जताया।

☞ चीन ने 'स्वायत्त तिब्बत क्षेत्र' बनाया है और इस इलाके को वह चीन का अभिन्न अंग मानता है।

✍ तिब्बती जनता चीन के इस दावे को नहीं मानती कि तिब्बत चीन का अभिन्न अंग है।

✍ ज्यादा से ज्यादा संख्या में चीनी बाशिंदों को तिब्बत लाकर वहाँ बसाने की चीन की नीति का तिब्बती जनता ने विरोध किया।

✍ तिब्बती चीन के इस दावे को भी नकारते हैं कि तिब्बत को स्वायत्तता दी गई है।

✍ तिब्बती मानते हैं कि तिब्बत की पारंपरिक संस्कृति और धर्म को नष्ट करके चीन वहाँ साम्यवाद फैलाना चाहता है।

❖ पाकिस्तान के साथ युद्ध और शांति-

☞ कश्मीर मसले को लेकर पाकिस्तान के साथ बँटवारे के तुरंत बाद ही संघर्ष छिड़ गया था। इस प्रकार सन् 1947 में ही कश्मीर में भारत और पाकिस्तान की सेनाओं के बीच एक 'छाया-युद्ध' (Proxy war) छिड़ गया था।

☞ कश्मीर के सवाल पर हुए संघर्ष के बावजूद भारत और पाकिस्तान की सरकारों के बीच सहयोग-संबंध कायम हुए।

☞ विश्व बैंक की मध्यस्थता से नदी जल में हिस्सेदारी को लेकर चला आ रहा एक लंबा विवाद सुलझा लिया गया।

☞ पं. नेहरू और जनरल अयूब खान ने सिंधु नदी जल संधि (Indus Water Treaty) पर सन् 1960 में हस्ताक्षर किए।

☞ भारत-पाक के बीच सन् 1965 में कहीं ज्यादा गंभीर किस्म के सैन्य-संघर्ष की शुरुआत हुई। इस वक्त लालबहादुर शास्त्री भारत के प्रधानमंत्री थे।

☞ अप्रैल, 1965 में पाकिस्तान ने गुजरात के कच्छ इलाके के रन में सैनिक हमला बोला। इसके बाद उसने अगस्त-सितंबर के महीने में जम्मू-कश्मीर में बड़े पैमाने पर हमला किया।

☞ पाकिस्तानी सेना की बढ़त को रोकने के लिए प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने जवाबी हमला करने के आदेश दिए।

☞ दोनों देशों की सेनाओं के बीच घनघोर लड़ाई हुई और भारत की सेना ने पाकिस्तान को मुँहतोड़ जवाब दिया।

☞ संयुक्त राष्ट्र संघ के हस्तक्षेप से इस लड़ाई का अंत हुआ।

☞ भारतीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री (Lal Bahadur Shastri) और पाकिस्तान के जनरल मो. अयूब खान (Mohammad Ayub Khan) के बीच सन् 1966 में ताशकंद-समझौता (Tashkent Declaration/Agreement) हुआ। सोवियत संघ ने इसमें मध्यस्थ की भूमिका निभाई।

☞ बांग्लादेश युद्ध, 1971 :-

✍ सन् 1970 में पाकिस्तान के पहले आम चुनाव में खंडित जनादेश आया। जुल्फिकार अली भुट्टो (Zulfikar Ali Bhutto) की पार्टी 'पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी' (Pakistan People's Party) पश्चिमी पाकिस्तान में विजयी रही जबकि शेख मुजीबुर्रहमान (Sheikh Mujibur Rahman) की पार्टी अवामी लीग (Awami League) ने पूर्वी पाकिस्तान में ज़ोरदार कामयाबी हासिल की।

✍ पश्चिमी पाकिस्तान के नेताओं के हाथों अपने साथ हुए दोयम दर्जे के नागरिक के बरताव के विरोध में पूर्वी पाकिस्तान की बंगाली जनता ने इस पार्टी को वोट दिया था।

✍ पाकिस्तान के शासक इस जनादेश को स्वीकार नहीं कर पा रहे थे।

✍ पाकिस्तानी सेना ने सन् 1971 में शेख मुजीब को गिरफ्तार कर लिया और पूर्वी पाकिस्तान के लोगों पर जुल्म ढाने शुरू किए।

✍ जवाब में पूर्वी पाकिस्तान की जनता ने अपने इलाके यानी मौजूदा बांग्लादेश को पाकिस्तान से मुक्त कराने के लिए संघर्ष छेड़ दिया।

✍ सन् 1971 में भारत को 80 लाख शरणार्थियों का बोझ वहन करना पड़ा। ये शरणार्थी पूर्वी पाकिस्तान से भागकर भारत के नजदीकी इलाकों में शरण लिए हुए थे।

✍ भारत ने बांग्लादेश के 'मुक्ति संग्राम' को नैतिक समर्थन और भौतिक सहायता दी।

✍ पाकिस्तान को अमरीका और चीन ने मदद की।

✍ अमरीका-पाकिस्तान-चीन की धुरी बनती देख भारत ने इसके जवाब में सोवियत संघ के साथ सन् 1971 में शांति और मित्रता की एक 20-वर्षीय संधि पर दस्तखत किए।

- दिसंबर, 1971 में भारत और पाकिस्तान के बीच एक पूर्णव्यापी युद्ध छिड़ गया।
- भारतीय सेना ने पाकिस्तान के विरुद्ध एक साथ पश्चिमी और पूर्वी मोर्चे से कार्रवाई की।
- स्थानीय लोगों के समर्थन के चलते भारतीय सेना पूर्वी पाकिस्तान में तेज़ी से आगे बढ़ी और उसने ढाका को तीन तरफ से घेर लिया और अन्ततः अपने 90,000 सैनिकों के साथ पाकिस्तानी सेना को आत्म-समर्पण करना पड़ा।
- बांग्लादेश के रूप में एक स्वतंत्र राष्ट्र के उदय के साथ भारतीय सेना ने अपनी तरफ से एकतरफा युद्ध-विराम घोषित कर दिया।
- 3 जुलाई, 1972 को इंदिरा गाँधी (Indira Gandhi) और जुल्फिकार अली भुट्टो (Zulfiqar Ali Bhutto) के बीच शिमला-समझौते (Simla Agreement) पर दस्तखत हुए और इससे अमन की बहाली हुई।
- सन् 1971 की जंग के बाद इंदिरा गाँधी की लोकप्रियता को चार चाँद लग गए।

☞ करगिल संघर्ष-

- सन् 1999 के शुरुआत में भारतीय इलाके की नियंत्रण सीमा रेखा के कई ठिकानों पर अपने को मुजाहिद्दीन बताने वालों ने कब्ज़ा कर लिया था। पाकिस्तानी सेना की इसमें मिलीभगत भाँप कर भारतीय सेना इस कब्ज़े के खिलाफ़ हरकत में आयी। इससे दोनों देशों के बीच संघर्ष छिड़ गया। इसे 'करगिल की लड़ाई' के नाम से जाना जाता है। मई-जून, 1999 के यह लड़ाई जारी रही।
- 26 जुलाई, 1999 तक भारत अपने अधिकतर ठिकानों पर पुनः अधिकार कर चुका था।

❖ भारत की परमाणु नीति-

☞ भारत शांतिपूर्ण उद्देश्यों में इस्तेमाल के लिए अणु ऊर्जा बनाना चाहता था। पं. नेहरू परमाणु हथियारों के खिलाफ़ थे। उन्होंने महाशक्तियों पर व्यापक परमाणु निशस्त्रीकरण के लिए ज़ोर दिया।

☞ पं. नेहरू की औद्योगीकरण की नीति का एक महत्त्वपूर्ण घटक परमाणु कार्यक्रम था। इसकी शुरुआत 1940 के दशक के अंतिम सालों में होमी जहाँगीर भाभा (Homi Jehangir Bhabha) के निर्देशन में हो चुकी थी।

☞ साम्यवादी शासन वाले चीन ने अक्तूबर, 1964 में परमाणु परीक्षण किया।

☞ अणुशक्ति-संपन्न बिरादरी (nuclear weapon powers) यानी संयुक्त राज्य अमरीका, सोवियत संघ, ब्रिटेन, फ्रांस और चीन ने, जो संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्य भी थे, दुनिया के अन्य देशों पर सन् 1968 की परमाणु अप्रसार संधि (Non-Proliferation Treaty : NPT) को थोपना चाहा।

- ✓ भारत हमेशा से इस संधि को 'भेदभावपूर्ण' (discriminatory) मानता था, अतः भारत ने इस पर दस्तखत करने से इनकार कर दिया था।
- ✓ भारत ने परमाणु अप्रसार के लक्ष्य को ध्यान में रखकर की गई संधियों का विरोध किया क्योंकि ये संधियाँ उन्हीं देशों पर लागू होने को थी जो परमाणु शक्ति से हीन थे।
- ✓ इन संधियों के द्वारा परमाणु हथियारों से लैस देशों की जमात के परमाणु शक्ति पर एकाधिकार को वैधता दी जा रही थी।
- ✓ इसी कारण, सन् 1995 में जब परमाणु-अप्रसार संधि को अनियतकाल के लिए बढ़ा दिया गया तो भारत ने इसका विरोध किया और उसने व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (कंप्रेहेंसिव टेस्ट बैन ट्रीटी- CTBT) पर भी हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया।

☞ मई, 1974 में भारत ने पहला परमाणु परीक्षण (first nuclear explosion) किया।

- भारत ने अपने पहले परमाणु परीक्षण को शांतिपूर्ण परीक्षण करार दिया। भारत का कहना था कि वह अणुशक्ति को सिर्फ शांतिपूर्ण उद्देश्यों (peaceful purposes) में इस्तेमाल करने की अपनी नीति के प्रति दृढ़ संकल्प है।
- भारत ने मई, 1998 में फिर परमाणु परीक्षण किए और यह जताया कि उसके पास सैन्य उद्देश्यों के लिए अणुशक्ति को इस्तेमाल में लाने की क्षमता है।
- भारत की परमाणु नीति में सैद्धांतिक तौर पर यह बात स्वीकार की गई है कि भारत अपनी रक्षा के लिए परमाणु हथियार रखेगा लेकिन इन हथियारों का 'प्रयोग पहले नहीं' (No first use) करेगा।
- भारत वैश्विक स्तर पर भेदभाव हीन परमाणु निशस्त्रीकरण के प्रति वचनबद्ध है ताकि परमाणु हथियारों से मुक्त विश्व की रचना हो।

❖ सन् 1973 में अरब-इजरायल युद्ध हुआ था, जिसके बाद पूरे विश्व में तेल के लिए हाहाकार मचा हुआ था। अरब राष्ट्रों ने तेल के दामों में भारी वृद्धि कर दी थी। भारत इस वजह से आर्थिक समस्याओं से घिर गया। भारत में मुद्रास्फीति बहुत ज्यादा बढ़ गई।

XII Class

Pol. Science

कांग्रेस प्रणाली : चुनौतियाँ और पुनर्स्थापना (स्वतंत्र भारत में राजनीति)

Part II Chapter Summary- 5

❖ आज़ादी के बाद शुरुआत में कांग्रेस का चुनाव चिह्न 'दो बैलों की जोड़ी' (a pair of bullocks) था।

❖ 1960 के दशक को 'खतरनाक दशक' (dangerous decade) कहा जाता है क्योंकि गरीबी, गैर-बराबरी, सांप्रदायिक और क्षेत्रीय विभाजन आदि के सवाल अभी अनसुलझे थे।

❖ नेहरू के बाद शास्त्री-

☞ मई, 1964 में पं. जवाहर लाल नेहरू की मृत्यु हो गई।

☞ पं. नेहरू की मृत्यु के बाद कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष के. कामराज ने अपनी पार्टी के नेताओं और सांसदों से सलाह-मशविरा किया। उन्होंने पाया कि सभी लालबहादुर शास्त्री के पक्ष में हैं।

☞ शास्त्री, उत्तर प्रदेश के थे और नेहरू के मंत्रिमंडल में सन् 1951 से 1956 तक मंत्री रहे थे।

☞ शास्त्री अपनी सादगी (simplicity) और सिद्धांत निष्ठा (commitment to principles) के लिए प्रसिद्ध थे। एक दफा वे एक बड़ी रेल दुर्घटना की नैतिक जिम्मेवारी स्वीकार करते हुए रेलमंत्री के पद से इस्तीफा दे चुके थे।

☞ अन्ततः नेहरू के बाद लालबहादुर शास्त्री (1904-1966) भारत के दूसरे प्रधानमंत्री बने, जो इस पद पर सन् 1964 से 1966 तक रहे।

☞ इसी छोटी अवधि में देश ने दो बड़ी चुनौतियों का सामना किया-

✓ भारत, चीन युद्ध के कारण पैदा हुई आर्थिक कठिनाइयों से उबरने की कोशिश कर रहा था।

✓ मानसून की असफलता से देश में सूखे की स्थिति थी। कई जगहों पर खाद्यान्न का गंभीर संकट आन पड़ा था। फिर, सन् 1965 में पाकिस्तान के साथ भी युद्ध करना पड़ा।

☞ 10 जनवरी, 1966 को ताशकंद (वर्तमान उज़्बेकिस्तान की राजधानी) में अचानक उनका देहान्त हो गया। सन् 1965 में पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध की समाप्ति के सिलसिले में पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति मोहम्मद अयूब खान (Muhammad Ayub Khan) से बातचीत करने और एक समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए वे ताशकंद गए थे।

☞ लालबहादुर शास्त्री ने 'जय जवान-जय किसान' (Jai Jawan Jai Kisan) का मशहूर नारा दिया।

❖ लालबहादुर शास्त्री की मृत्यु से कांग्रेस के सामने दुबारा राजनीतिक उत्तराधिकारी का सवाल उठ खड़ा हुआ। इस बार मोरारजी देसाई और इंदिरा गाँधी के बीच कड़ा मुकाबला था।

☞ मोरारजी देसाई बंबई प्रांत (मौजूदा महाराष्ट्र और गुजरात) के मुख्यमंत्री के पद पर रह चुके थे। केंद्रीय मंत्रिमंडल में वे मंत्री पद पर भी रह चुके थे।

☞ पं. जवाहर लाल नेहरू की बेटी इंदिरा गाँधी गुजरे वक्त में कांग्रेस अध्यक्ष के पद पर रह चुकी थी। शास्त्री के मंत्रिमंडल में उन्होंने सूचना मंत्रालय का प्रभार सँभाला था।

☞ इंदिरा गाँधी के नाम पर जब सर्वसम्मति कायम नहीं की जा सकी, तो फ़ैसले के लिए कांग्रेस के सांसदों ने गुप्त मतदान किया। इंदिरा गाँधी ने मोरारजी देसाई को हरा दिया। अब इंदिरा गाँधी प्रधानमंत्री बनी।

❖ इंदिरा गाँधी (1917-1984)-

☞ सन् 1966 से 1977 तक और फिर सन् 1980 से 1984 तक भारत की प्रधानमंत्री रही।

☞ सन् 1958 में कांग्रेस अध्यक्ष और सन् 1964 से 1966 तक शास्त्री मंत्रिमंडल में केंद्रीय सूचना मंत्री के पद पर रहीं।

☞ 'गरीबी हटाओ' (Garibi Hatao) का नारा दिया।

☞ प्रिवी पर्स की समाप्ति, बैंकों का राष्ट्रीयकरण, आण्विक-परीक्षण आदि कार्य किए।

❖ भारत के राजनीतिक और चुनावी इतिहास में 1967 के साल को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पड़ाव माना जाता है।

☞ सन् 1952 के बाद से पूरे देश में कांग्रेस पार्टी का राजनीतिक दबदबा कायम था, लेकिन सन् 1967 के चुनावों में इस प्रवृत्ति में गहरा बदलाव आया।

☞ चौथे आम चुनावों के आने तक देश में दो प्रधानमंत्रियों का जल्दी-जल्दी देहावसान हुआ और नए प्रधानमंत्री को पद सँभाले हुए अभी पूरे एक साल का अरसा भी नहीं गुजरा था। साथ ही, इस प्रधानमंत्री को राजनीति के लिहाज़ से कम अनुभवी माना जा रहा था।

☞ इस अरसे में देश गंभीर आर्थिक संकट में था। मानसून की असफलता, व्यापक सूखा, खेती की पैदावार में गिरावट, गंभीर खाद्य संकट, विदेशी मुद्रा-भंडार में कमी, औद्योगिक उत्पादन और निर्यात में गिरावट के साथ ही साथ सैन्य खर्चे में भारी बढ़ोतरी हुई थी। नियोजन और आर्थिक विकास के संसाधनों को सैन्य-मद में लगाना पड़ा। इन सारी बातों से देश की आर्थिक स्थिति विकट हो गई थी।

☞ इंदिरा गाँधी की सरकार के शुरुआती फ़ैसलों में एक था– रुपये का अवमूल्यन करना। माना गया कि रुपये का अवमूल्यन अमरीका के दबाव में किया गया।

☞ आर्थिक स्थिति की विकटता के कारण कीमतों में तेज़ी से इजाफा हुआ। लोग आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि, खाद्यान्न की कमी, बढ़ती हुई बेरोजगारी और देश की दयनीय आर्थिक स्थिति को लेकर विरोध पर उतर आए।

☞ देश में अकसर 'बंद' और 'हड़ताल' की स्थिति रहने लगी। साम्यवादी और समाजवादी पार्टी ने व्यापक समानता के लिए संघर्ष छेड़ दिया।

☞ मार्क्सवादी-लेनिनवादी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने सशस्त्र कृषक-विद्रोह का नेतृत्व किया।

☞ कांग्रेस की विरोधी पार्टियों ने महसूस किया कि उसके वोट बँट जाने के कारण ही कांग्रेस सत्तासीन हैं, अतः वे सभी दल एकजुट हुए और उन्होंने कुछ राज्यों में एक कांग्रेस विरोधी मोर्चा बनाया तथा अन्य राज्यों में सीटों के मामले में चुनावी तालमेल किया।

☞ समाजवादी नेता राममनोहर लोहिया ने इस रणनीति को 'गैर-कांग्रेसवाद' (Non - Congressism) का नाम दिया। उन्होंने 'गैर-कांग्रेसवाद' के पक्ष में सैद्धांतिक तर्क देते हुए कहा कि कांग्रेस का शासन अलोकतांत्रिक और गरीब लोगों के हितों के खिलाफ़ है, इसलिए गैर-कांग्रेसी दलों का एक साथ आना जरूरी है, ताकि गरीबों के हक में लोकतंत्र को वापस लाया जा सके।

✓ समाजवादी नेता एवं विचारक राममनोहर लोहिया (1910-1967) 'मैनकाइंड' एवं 'जन' के संस्थापक संपादक रहे हैं।

☞ व्यापक जन-असंतोष और राजनीतिक दलों के ध्रुवीकरण के इसी माहौल में लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के लिए फरवरी, 1967 में चौथे आम चुनाव हुए।

☞ कांग्रेस को जैसे-तैसे लोकसभा में बहुमत तो मिल गया था, लेकिन उसको प्राप्त मतों के प्रतिशत तथा सीटों की संख्या में भारी गिरावट आई थी।

☞ इंदिरा गाँधी के मंत्रिमंडल के आधे मंत्री चुनाव हार गए थे। तमिलनाडु से के. कामराज, महाराष्ट्र से एस.के. पाटिल, पश्चिम बंगाल से अतुल्य घोष और बिहार से के.बी. सहाय जैसे राजनीतिक दिग्गजों को मुँह की खानी पड़ी थी।

☞ राज्यों में नजर डालें तो कांग्रेस को सात राज्यों में बहुमत नहीं मिला और कुल 9 राज्यों में कांग्रेस के हाथ से सत्ता निकल गई, जिनमें पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, मद्रास (वर्तमान में तमिलनाडु कहा जाता है) और केरल शामिल हैं।

☞ मद्रास प्रांत में एक क्षेत्रीय पार्टी द्रविड़ मुनेत्र कषगम पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता पाने में कामयाब रही।

☞ मद्रास (तमिलनाडु) के मुख्यमंत्री रहे सी. नटराजन अन्नादुरई ने सन् 1949 में द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम (Dravida Munnetra Kazhagam) का बतौर राजनीतिक पार्टी गठन किया। इन्होंने हिंदी का विरोध किया एवं हिंदी विरोधी आंदोलन का नेतृत्व किया।

☞ चुनावी इतिहास में यह पहली घटना थी जब किसी गैर-कांग्रेसी दल को किसी राज्य में पूर्ण बहुमत मिला।

☞ तत्कालीन अनेक राजनीतिक पर्यवेक्षकों ने चुनाव परिणामों को 'राजनीतिक भूकंप' की संज्ञा दी।

☞ सन् 1967 के चुनावों से गठबंधन की परिघटना सामने आयी। चूँकि किसी पार्टी को बहुमत नहीं मिला था, इसलिए अनेक गैर-कांग्रेसी पार्टियों ने एकजुट होकर संयुक्त विधायक दल बनाया और गैर-कांग्रेसी सरकारों को समर्थन दिया। इसी कारण इन सरकारों को संयुक्त विधायक दल की सरकार कहा गया।

✓ बिहार में बनी संयुक्त विधायक दल की सरकार में दो समाजवादी पार्टियाँ–एसएसपी और पीएसपी–शामिल थी। इस सरकार में वामपंथी–सीपीआई और दक्षिणपंथी जनसंघ–भी शामिल थे।

✓ पंजाब में बनी संयुक्त विधायक दल की सरकार को 'पॉपुलर यूनाइटेड फ्रंट' की सरकार कहा गया। इसमें उस वक्त के दो परस्पर प्रतिस्पर्धी अकाली दल–संत ग्रुप और मास्टर ग्रुप शामिल थे। इनके साथ सरकार में दोनों साम्यवादी दल सीपीआई और सीपीआई (एम), एसएसपी, रिपब्लिकन पार्टी और भारतीय जनसंघ भी शामिल थे।

☞ 1967 के चुनावों की एक खास बात दल-बदल भी है।

✓ कोई जनप्रतिनिधि किसी खास दल के चुनाव चिह्न को लेकर चुनाव लड़े और जीत जाए और चुनाव जीतने के बाद इस दल को छोड़कर किसी दूसरे दल में शामिल हो जाए, तो इसे 'दल-बदल' कहते हैं।

❖ मद्रास (तमिलनाडु) के मुख्यमंत्री रहे के. कामराज (1903 - 1975) मद्रास प्रांत में स्कूली बच्चों को 'दोपहर का भोजन' (Mid-Day Meal Scheme) देने की योजना लागू करने के लिए प्रसिद्ध रहे हैं।

☞ सन् 1963 में इन्होंने प्रस्ताव रखा कि सभी वरिष्ठ कांग्रेसी नेताओं को इस्तीफ़ा दे देना चाहिए, ताकि अपेक्षाकृत युवा पार्टी कार्यकर्ता कमान सँभाल सकें। यह प्रस्ताव 'कामराज योजना' (Kamaraj Plan) के नाम से मशहूर हुआ।

❖ सन् 1967 के चुनावों के बाद केंद्र में कांग्रेस की सत्ता कायम रही, लेकिन उसे पहले जितना बहुमत हासिल नहीं था।

☞ चुनाव के नतीजों ने साबित कर दिया था कि कांग्रेस को चुनावों में हराया जा सकता है।

❖ इंदिरा बनाम सिंडिकेट-

☞ कांग्रेसी नेताओं के एक समूह को अनौपचारिक तौर पर 'सिंडिकेट' (Syndicate) के नाम से इंगित किया जाता था। इस समूह के नेताओं का पार्टी के संगठन पर नियंत्रण था।

☞ लालबहादुर शास्त्री और उसके बाद इंदिरा गाँधी, दोनों ही सिंडिकेट की सहायता से प्रधानमंत्री के पद पर आरूढ़ हुए थे। इंदिरा गाँधी के पहले मंत्रिपरिषद् में इस समूह की निर्णायक भूमिका रही।

☞ मद्रास प्रांत के के. कामराज, मैसूर (अब कर्नाटक) के एस. निजलिंगप्पा, आंध्र प्रदेश के एन. संजीव रेड्डी, बंबई सिटी (अब मुंबई) के एस.के. पाटिल और पश्चिम बंगाल के अतुल्य घोष जैसे नेता 'सिंडिकेट' में रहे हैं।

☞ इंदिरा गाँधी को असली चुनौती विपक्ष से नहीं बल्कि खुद अपनी पार्टी के भीतर से मिली। उन्हें 'सिंडिकेट' से निपटना पड़ा।

☞ 'सिंडिकेट' कांग्रेस के भीतर 'ताकतवर और प्रभावशाली नेताओं का एक समूह' था। 'सिंडिकेट' ने इंदिरा गाँधी को प्रधानमंत्री बनवाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। सिंडिकेट के नेताओं को उम्मीद थी कि इंदिरा गाँधी उनकी सलाहों पर अमल करेंगी।

☞ उन्होंने सिंडिकेट को धीरे-धीरे हाशिए पर ला खड़ा किया।

☞ इस समय इंदिरा गाँधी ने दो चुनौतियों का सामना किया-

✓ उन्हें 'सिंडिकेट' के प्रभाव से स्वतंत्र अपना मुकाम बनाने की ज़रूरत थी।

✓ कांग्रेस ने सन् 1967 के चुनाव में जो ज़मीन खोयी थी उसे भी उन्हें हासिल करना था।

☞ उन्होंने सरकार की नीतियों को वामपंथी रंग देने के लिए कई कदम उठाए। मई, 1967 में कांग्रेस कार्यसमिति ने उनके प्रभाव से दस-सूत्री कार्यक्रम अपनाया।

✓ इस कार्यक्रम में बैंकों पर सामाजिक नियंत्रण, आम बीमा के राष्ट्रीयकरण, शहरी संपदा और आय के परिसीमन, खाद्यान्न का सरकारी वितरण, भूमि सुधार तथा ग्रामीण गरीबों को आवासीय भूखंड देने के प्रावधान शामिल थे।

❖ सिंडिकेट और इंदिरा गाँधी के बीच की गुटबाज़ी सन् 1969 में राष्ट्रपति पद के चुनाव के समय खुलकर सामने आ गई।

☞ तत्कालीन राष्ट्रपति ज़ाकिर हुसैन की मृत्यु के कारण उस साल राष्ट्रपति का पद खाली था। इंदिरा गाँधी की असहमति के बावजूद उस साल सिंडिकेट ने तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष एन. संजीव रेड्डी को कांग्रेस पार्टी की तरफ़ से राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में खड़ा करवाने में सफलता पाई। एन. संजीव रेड्डी से इंदिरा गाँधी की बहुत दिनों से राजनीतिक अनबन चली आ रही थी। ऐसे में इंदिरा गाँधी ने भी हार नहीं मानी। उन्होंने तत्कालीन उपराष्ट्रपति वी.वी. गिरि को बढ़ावा दिया कि वे एक स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में राष्ट्रपति पद के लिए अपना नामांकन भरें।

☞ तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष एस. निजलिंगप्पा ने 'व्हिप' जारी किया कि सभी 'कांग्रेसी सांसद और विधायक पार्टी के आधिकारिक उम्मीदवार एन. संजीव रेड्डी को वोट डालें।

☞ वी.वी. गिरि का छुपे तौर पर समर्थन करते हुए प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने खुलेआम 'अंतरात्मा की आवाज़' पर वोट (conscience vote) डालने को कहा।

☞ आखिरकार राष्ट्रपति पद के चुनाव में वी.वी. गिरि ही विजयी हुए, जो कि स्वतंत्र उम्मीदवार थे, जबकि एन. संजीव रेड्डी कांग्रेस पार्टी के आधिकारिक उम्मीदवार थे।

☞ इस प्रकार वी.वी. गिरि राष्ट्रपति पद के चुनाव में 'स्वतंत्र प्रत्याशी' के रूप में इंदिरा गाँधी के समर्थन से विजयी रहे और सन् 1969 से 1974 तक भारत के राष्ट्रपति रहे।

☞ कांग्रेस अध्यक्ष ने प्रधानमंत्री को अपनी पार्टी से निष्कासित कर दिया। पार्टी से निष्कासित प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने कहा कि उनकी पार्टी ही असली कांग्रेस है। इंदिरा गाँधी की अगुवाई वाले कांग्रेसी खेमे को कांग्रेस (रिक्विजिनिस्ट) या 'नई कांग्रेस' कहा जाने लगा था।

☞ कांग्रेस के विभाजित होने के बाद सिंडीकेट के नेताओं और उनके प्रति निष्ठावान कांग्रेसी 'कांग्रेस (ओ)' में ही रहे। चूँकि इंदिरा गाँधी की 'कांग्रेस (आर)' ही लोकप्रियता की कसौटी पर सफल रही, इसलिए भारतीय राजनीति के ये बड़े और ताकतवर नेता सन् 1971 के बाद प्रभावहीन हो गए।

❖ एस. निजलिंगप्पा (सन् 1902-2000) आधुनिक कर्नाटक के निर्माता के रूप में प्रसिद्ध हैं। तत्कालीन मैसूर प्रांत (अब कर्नाटक) के मुख्यमंत्री रहे।

❖ देसी रियासतों का विलय भारतीय संघ में करने से पहले सरकार ने यह आश्वासन दिया था कि रियासतों के तत्कालीन शासक परिवार को निश्चित मात्रा में निजी संपदा रखने का अधिकार होगा। साथ ही सरकार की तरफ़ से उन्हें कुछ विशेष भत्ते भी दिए जाएँगे।

☞ ये दोनों चीज़ें (यानी शासक की निजी संपदा और भत्ते) इस बात को आधार मानकर तय की जाएँगी कि जिस राज्य का विलय किया जाना है उसका विस्तार, राजस्व और क्षमता कितनी है।

☞ इस व्यवस्था को 'प्रिवी पर्स' (Privy Purse) कहा गया।

☞ सन् 1967 के चुनावों के बाद इंदिरा गाँधी ने 'प्रिवी पर्स' को खत्म करने की माँग का समर्थन किया। उनकी राय थी कि सरकार को 'प्रिवी पर्स' की व्यवस्था समाप्त कर देनी चाहिए। मोरारजी देसाई प्रिवी पर्स की समाप्ति को नैतिक रूप से गलत मानते थे। उनका कहना था कि यह 'रियासतों के साथ विश्वासघात' के बराबर होगा।

☞ बहरहाल ये वंशानुगत विशेषाधिकार भारतीय संविधान में वर्णित समानता और सामाजिक-आर्थिक न्याय के सिद्धांतों से मेल नहीं खाते थे।

☞ सन् 1971 के पाँचवें आम चुनाव में मिली भारी जीत के बाद इंदिरा गाँधी सरकार ने संविधान में संशोधन कर प्रिवी पर्स की व्यवस्था को समाप्त कर दिया।

❖ इंदिरा गाँधी ने सन् 1969 में चौदह अग्रणी बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया।

❖ लोकसभा के लिए पाँचवें आम चुनाव सन् 1971 में सम्पन्न हुए।

☞ इस समय हर किसी को विश्वास था कि कांग्रेस पार्टी की असली सांगठनिक ताकत कांग्रेस (ओ) के नियंत्रण में है। इसके अतिरिक्त, सभी बड़ी गैर-साम्यवादी और गैर-कांग्रेसी विपक्षी पार्टियों ने एक चुनावी गठबंधन बना लिया था, जिसे 'ग्रैंड अलायंस' कहा गया।

✓ 'ग्रैंड अलायंस' के पास कोई सुसंगत राजनीतिक कार्यक्रम नहीं था।

☞ इसके बावजूद 'नई कांग्रेस' के पास एक मुद्दा था; एक अजेंडा और कार्यक्रम था।

☞ इंदिरा गाँधी ने देश भर में घूम-घूम कर कहा कि विपक्षी गठबंधन के पास बस एक ही कार्यक्रम है : इंदिरा हटाओ।

☞ इसके विपरीत इंदिरा गाँधी ने लोगों के सामने एक सकारात्मक कार्यक्रम रखा और इसे अपने मशहूर नारे 'गरीबी हटाओ' के ज़रिए एक शक्ल प्रदान किया।

☞ 'गरीबी हटाओ' के नारे से इंदिरा गाँधी ने वंचित तबकों खासकर भूमिहीन किसान, दलित और आदिवासी, अल्पसंख्यक, महिला और बेरोज़गार नौजवानों के बीच अपने समर्थन का आधार तैयार करने की कोशिश की।

☞ इंदिरा गाँधी ने सार्वजनिक क्षेत्र की संवृद्धि, ग्रामीण भू-स्वामित्व और शहरी संपदा के परिसीमन, आय और अवसरों की असमानता की समाप्ति तथा 'प्रिवी पर्स' की समाप्ति पर अपने चुनाव अभियान में ज़ोर दिया।

☞ सन् 1971 के लोकसभा चुनावों के नतीजों में कांग्रेस (आर) और सीपीआई के गठबंधन को लोकसभा की 375 सीटें मिलीं और इसने कुल 48.4 प्रतिशत वोट हासिल किए।

☞ अकेले इंदिरा गाँधी की 'कांग्रेस (आर)' ने 352 सीटें और 44 प्रतिशत वोट हासिल किए थे।

☞ कांग्रेस (ओ) को महज़ 16 सीटें मिलीं।

☞ विपक्षी 'ग्रैंड अलायंस' धराशायी हो गया था। इस 'महाजोट' को 40 से भी कम सीटें मिली थी।

❖ सन् 1971 के चुनावों के बाद पूर्वी पाकिस्तान में संकट पैदा हुआ और भारत-पाक के बीच युद्ध छिड़ गया। इसके परिणामस्वरूप बांग्लादेश बना।

❖ कांग्रेस प्रणाली का पुनर्स्थापन?

☞ इंदिरा गाँधी के हाथों पुनर्गठित इस पार्टी (कांग्रेस - आर) को लोकप्रियता के लिहाज से वही स्थान प्राप्त था, जो उसे (शुरुआती कांग्रेस को) शुरुआती दौर में हासिल था, लेकिन यह अलग किस्म की पार्टी थी।

☞ यह पार्टी पूर्णतया अपने सर्वोच्च नेता की लोकप्रियता पर आश्रित थी। इस पार्टी का सांगठनिक ढाँचा भी अपेक्षाकृत कमज़ोर था।

☞ इस कांग्रेस पार्टी के भीतर कई गुट नहीं थे।

☞ इस पार्टी ने चुनाव जीते, लेकिन इस जीत के लिए पार्टी कुछ सामाजिक वर्गों जैसे गरीब, महिला, दलित, आदिवासी और अल्पसंख्यकों पर ज़्यादा निर्भर थी।

☞ अब तक कांग्रेस प्रणाली के भीतर हर तनाव और संघर्ष को पचा लेने की क्षमता थी, लेकिन 'नई कांग्रेस' ज़्यादा लोकप्रिय होने के बावजूद इस क्षमता से हीन थी।

☞ कांग्रेस ने अपनी पकड़ मज़बूत की और इंदिरा गाँधी की राजनीतिक हैसियत अप्रत्याशित रूप से बढ़ी, लेकिन जनता की आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति की लोकतांत्रिक ज़मीन छोटी पड़ती गई।

☞ अब विकास और आर्थिक बदहाली के मुद्दों पर जनाक्रोश तथा लामबंदी लगातार बढ़ती रही।

☞ इंदिरा गाँधी ने कांग्रेस प्रणाली को पुनर्स्थापित ज़रूर किया, लेकिन कांग्रेस-प्रणाली की प्रकृति को बदलकर।

❖ प्रकाश मेहरा निर्देशित ''ज़ंजीर'' फ़िल्म में नैतिक मूल्यों के पतन और उससे उपजी कुंठा को बहुत प्रभावशाली ढंग से दिखाया गया है।

XII Class

Pol. Science

लोकतांत्रिक व्यवस्था का संकट
(स्वतंत्र भारत में राजनीति)

Part II Chapter Summary- 6

❖ आपातकाल की पृष्ठभूमि-

☞ सन् 1971 के बाद कांग्रेस को नवजीवन मिला लेकिन इस पार्टी में अब पहले वाली बात नहीं रही। कांग्रेस पार्टी अब बदल चुकी थी।

☞ इंदिरा गाँधी एक कद्दावर नेता के रूप में उभरी थी और उनकी लोकप्रियता अपने चरम पर थी।

☞ इस अवधि में न्यायपालिका और सरकार के आपसी रिश्तों में भी तनाव आए। सर्वोच्च न्यायालय ने सरकार की कई पहलकदमियों को संविधान के विरुद्ध माना।

☞ कांग्रेस पार्टी का मानना था कि अदालत का यह रवैया लोकतंत्र के सिद्धांतों और संसद की सर्वोच्चता के विरुद्ध है।

☞ कांग्रेस ने यह आरोप भी लगाया कि अदालत गरीबों को लाभ पहुँचाने वाले कल्याण-कार्यक्रमों को लागू करने की राह में रोड़े अटका रही है।

☞ विपक्षी दलों को लग रहा था राजनीति हद से ज़्यादा व्यक्तिगत होती जा रही है।

☞ इस प्रकार सन् 1973 से 1975 के बीच आए बदलावों की परिणति देश में 'आपातकाल' लागू करने के रूप में हुई।

☞ अन्ततः जून, 1975 में देश में आपातकाल की घोषणा कर दी गई।

✓ अपने देश में आपातकाल की यह घोषणा 'अंदरूनी गड़बड़ियों' की आशंका (threat of "Internal Disturbance") के मद्देनजर की गई थी।

❖ आपातकाल की पृष्ठभूमि- आर्थिक संदर्भ-

☞ सन् 1971 के चुनाव में कांग्रेस ने 'गरीबी हटाओ' का नारा दिया था।

☞ बांग्लादेश के संकट के कारण भारत आए शरणार्थियों के चलते भारत की अर्थव्यवस्था पर बोझ पड़ा।

☞ पाकिस्तान से युद्ध के बाद अमरीका ने भारत को हर तरह की सहायता देना बंद कर दिया।

☞ इसी अवधि में अंतर्राष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में कई गुना बढ़ोतरी हुई, जिससे विभिन्न चीज़ों की कीमतें भी तेज़ी से बढ़ी।

☞ औद्योगिक विकास की दर बहुत कम थी और बेरोज़गारी बहुत बढ़ गई थी।

☞ खर्चे को कम करने के लिए सरकार ने अपने कर्मचारियों के वेतन को रोक लिया, जिससे सरकारी कर्मचारियों में बहुत असंतोष पनपा।

☞ वर्ष 1972-73 में मानसून असफल रहा, जिससे कृषि की पैदावार में भारी गिरावट आई।

☞ आर्थिक स्थिति की बदहाली को लेकर पूरे देश में असंतोष का माहौल था।

☞ इस अवधि में कुछ मार्क्सवादी समूहों ने मौजूदा राजनीतिक प्रणाली और पूँजीवादी व्यवस्था को खत्म करने के लिए हथियार उठाया तथा राज्यविरोधी तकनीकों का सहारा लिया। ये समूह मार्क्सवादी-लेनिनवादी (अब माओवादी) अथवा 'नक्सलवादी' के नाम से जाने गए। ऐसे समूह पश्चिम बंगाल में सबसे ज़्यादा सक्रिय थे।

❖ आपातकाल की पृष्ठभूमि- गुजरात और बिहार के आंदोलन-

☞ गुजरात और बिहार दोनों ही राज्यों में कांग्रेस की सरकार थी।

☞ जनवरी, 1974 में गुजरात के छात्रों ने खाद्यान्न, खाद्य तेल तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं की बढ़ती हुई कीमत तथा उच्च पदों पर जारी भ्रष्टाचार के खिलाफ़ आंदोलन छेड़ दिया।

✓ जब आंदोलन ने विकराल रूप धारण कर लिया, तो ऐसे में गुजरात में राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया।

✓ विपक्षी दलों द्वारा समर्थित छात्र-आंदोलन के गहरे दबाव में जून, 1975 में विधानसभा के चुनाव हुए। कांग्रेस इस चुनाव में हार गई।

☞ मार्च, 1974 में बढ़ती हुई कीमतों, खाद्यान्न के अभाव, बेरोज़गारी और भ्रष्टाचार के खिलाफ़ बिहार में छात्रों ने आंदोलन छेड़ दिया।

✓ छात्रों ने अपने आंदोलन की अगुवाई के लिए जयप्रकाश नारायण (जेपी) को बुलावा भेजा। जेपी तब सक्रिय राजनीति छोड़ चुके थे और सामाजिक कार्यों में लगे हुए थे।

✓ जेपी ने छात्रों का निमंत्रण इस शर्त पर स्वीकार किया कि आंदोलन अहिंसक रहेगा और अपने को सिर्फ़ बिहार तक सीमित नहीं रखेगा।

✓ जयप्रकाश नारायण (जेपी) ने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दायरे में 'सम्पूर्ण क्रांति' (Sampoorna Kranti / Total Revolution) का आह्वान किया, ताकि उन्हीं के शब्दों में 'सच्चे लोकतंत्र' (True democracy) की स्थापना की जा सके।

✍ सन् 1974 के बिहार आंदोलन का एक नारा था- ''सम्पूर्ण क्रांति अब नारा है, भावी इतिहास हमारा है!''

✍ सन् 1974 में कांग्रेस अध्यक्ष डी.के. बरुआ ने नारा दिया था- ''इंदिरा इज़ इंडिया, इंडिया इज़ इंदिरा''

☞ बिहार आंदोलन का प्रभाव राष्ट्रीय राजनीति पर पड़ना शुरू हुआ। जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चल रहे आंदोलन के साथ ही साथ रेलवे के कर्मचारियों ने भी एक राष्ट्रव्यापी हड़ताल का आह्वान किया।

✓ सन् 1974 में जॉर्ज फर्नान्डिस के नेतृत्व में रेलवे कर्मचारियों की एक राष्ट्रव्यापी हड़ताल का आह्वान किया गया।

✓ बोनस और सेवा से जुड़ी शर्तों के संबंध में अपनी माँगों को लेकर सरकार पर दबाव बनाने के लिए हड़ताल का यह आह्वान किया गया था।

✓ सरकार ने इस हड़ताल को अवैधानिक करार दिया। सरकार ने हड़ताली कर्मचारियों की माँगों को मानने से इनकार कर दिया।

☞ सन् 1975 में जयप्रकाश नारायण (जेपी) ने जनता के 'संसद-मार्च' (peoples' march to Parliament) का नेतृत्व किया।

☞ जयप्रकाश नारायण को अब भारतीय जनसंघ, कांग्रेस (ओ), भारतीय लोकदल, सोशलिस्ट पार्टी जैसे गैर-कांग्रेसी दलों का समर्थन मिला। इन दलों ने जेपी को इंदिरा गाँधी के विकल्प के रूप में पेश किया।

☞ लोकनायक जयप्रकाश नारायण (जेपी) (1902-1979)- 1942 के भारत-छोड़ो आंदोलन के नायक; नेहरू मंत्रिमंडल में शामिल होने से इनकार; 1955 के बाद सक्रिय राजनीति छोड़ी; बिहार आंदोलन के नेता; आपातकाल के विरोध के प्रतीक बन गए थे; जनता पार्टी के गठन के प्रेरणास्रोत।

❖ नक्सलवादी आंदोलन (Naxalite Movement)-

☞ दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल) के नक्सलबाड़ी पुलिस थाने के इलाके में सन् 1967 में एक किसान विद्रोह उठ खड़ा हुआ, जिसकी अगुवाई मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के लोग कर रहे थे। नक्सलबाड़ी से शुरू होने के कारण इस आंदोलन को 'नक्सलवादी आंदोलन' के रूप में जाना जाता है।

☞ सन् 1969 में नक्सलवादी सीपीआई (एम) से अलग हो गए और इन्होंने सीपीआई (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) नाम से एक नई पार्टी चारु मजूमदार (Charu Majumdar) के नेतृत्व में बनाई।

✓ इस पार्टी की दलील थी कि भारत में लोकतंत्र एक छलावा है।

✓ इस पार्टी ने क्रांति करने के लिए गुरिल्ला युद्ध की रणनीति अपनाई।

☞ नक्सलवादी आंदोलन ने धनी भूस्वामियों से बलपूर्वक ज़मीन छीनकर गरीब और भूमिहीन लोगों को दी।

☞ इस आंदोलन के समर्थक अपने राजनीतिक लक्ष्यों को हासिल करने के लिए हिंसक साधनों के इस्तेमाल के पक्ष में दलील देते थे।

☞ फिलहाल 9 राज्यों के लगभग 75 जिले नक्सलवादी हिंसा से प्रभावित हैं। इनमें अधिकतर बहुत पिछड़े इलाके हैं और यहाँ आदिवासियों की जनसंख्या ज़्यादा है।

✓ इन इलाकों में बँटाई पर खेतीबाड़ी करने वाले तथा छोटे किसान उपज में हिस्से, पट्टे की सुनिश्चित अवधि और उचित मज़दूरी जैसे अपने बुनियादी हकों से भी वंचित हैं।

✓ जबरिया मज़दूरी, बाहरी लोगों द्वारा संसाधनों का दोहन तथा सूदखोरों द्वारा शोषण भी इन इलाकों में आम बात है।

☞ कम्युनिस्ट क्रांतिकारी और नक्सलवादी बगावत के नेता चारु मजूमदार (1918-1972) ने आज़ादी से पहले तेभागा आंदोलन में भागीदारी निभाई। इन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) की स्थापना की।

❖ आपातकाल की पृष्ठभूमि- न्यायपालिका से संघर्ष-

☞ आपातकाल से पूर्व के दौर में सरकार और शासक दल के न्यायपालिका के साथ गहरे मतभेद पैदा हुए।

☞ इस क्रम में तीन संवैधानिक मसले उठे थे:-

✍ क्या संसद मौलिक अधिकारों में कटौती कर सकती है?

✓ सर्वोच्च न्यायालय का जवाब था कि संसद ऐसा नहीं कर सकती।

✍ क्या संसद संविधान में संशोधन करके संपत्ति के अधिकार में काट-छाँट कर सकती है?

✓ सर्वोच्च न्यायालय का कहना था कि सरकार, संविधान में इस तरह संशोधन नहीं कर सकती कि अधिकारों की कटौती हो जाए।

✍ संसद ने यह कहते हुए संविधान में संशोधन किया कि वह नीति-निर्देशक सिद्धांतों को प्रभावकारी बनाने के लिए मौलिक अधिकारों में कमी कर सकती है।

✓ सर्वोच्च न्यायालय ने इस प्रावधान को निरस्त कर दिया, जिससे सरकार और न्यायपालिका के बीच संबंधों में तनाव आया।

☞ सन् 1973 के 'केशवानंद भारती' के मुकदमे (Kesavananda Bharati Case) में सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया कि संविधान का एक 'बुनियादी ढाँचा' (Basic Structure) है और संसद इन ढाँचागत विशेषताओं में संशोधन नहीं कर सकती है।

☞ दो और बातों ने न्यायपालिका और कार्यपालिका के संबंधों में तनाव बढ़ाया-

✍ सन् 1973 में भारत के मुख्य न्यायाधीश का पद खाली हुआ, तो सरकार ने तीन वरिष्ठ न्यायाधीशों (जे.एम. शेलट, ए.एन. ग्रोवर, के.एस. हेगड़े) की अनदेखी करके न्यायमूर्ति ए.एन. रे को मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया।

✓ यह निर्णय राजनीतिक रूप से विवादास्पद बन गया क्योंकि सरकार ने जिन तीन न्यायाधीशों की वरिष्ठता की अनदेखी इस मामले में की थी उन्होंने सरकार के इस कदम के विरुद्ध फ़ैसला दिया।

✓ अभी तक सर्वोच्च न्यायालय के सबसे वरिष्ठ न्यायाधीश को भारत का मुख्य न्यायाधीश बनाने की परिपाटी चली आ रही थी।

✍ सरकार और न्यायपालिका के बीच संघर्ष का चरमबिंदु तब आया जब इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इंदिरा गाँधी के निर्वाचन को अवैध घोषित कर दिया।

❖ आपातकाल की घोषणा-

☞ 12 जून, 1975 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश जगमोहन लाल सिन्हा ने एक फ़ैसला सुनाया, जिसमें उन्होंने लोकसभा के लिए इंदिरा गाँधी के निर्वाचन को अवैधानिक करार दिया।

✍ न्यायमूर्ति ने यह फ़ैसला समाजवादी नेता राजनारायण द्वारा दायर एक चुनाव याचिका के मामले में सुनाया था। याचिकाकर्त्ता का तर्क था कि इंदिरा गाँधी ने चुनाव-प्रचार में सरकारी कर्मचारियों की सेवाओं का इस्तेमाल किया था।

✍ राजनारायण, इंदिरा गाँधी के खिलाफ सन् 1971 में बतौर उम्मीदवार चुनाव में खड़े हुए थे।

✍ न्यायालय ने अपने आदेश में यह भी कहा था कि जब तक इस फैसले को लेकर की गई अपील की सुनवाई नहीं होती तब तक इंदिरा गाँधी सांसद बनी रहेंगी, लेकिन वे लोकसभा की कार्रवाई में भाग नहीं ले सकती हैं।

☞ जयप्रकाश नारायण की अगुवाई में विपक्षी दलों ने इंदिरा गाँधी के इस्तीफे के लिए दबाव डाला और इन दलों ने 25 जून, 1975 को दिल्ली के रामलीला मैदान में एक विशाल प्रदर्शन किया।

☞ सरकार ने इन घटनाओं के मद्देनजर जवाब में 'आपातकाल' की घोषणा कर दी। 25 जून, 1975 के दिन सरकार ने घोषणा की कि देश में अंदरूनी गड़बड़ी की आशंका (a threat of internal disturbances) है और इस तर्क के साथ उसने संविधान के अनुच्छेद-352 को लागू कर दिया।

✓ इस अनुच्छेद के अंतर्गत प्रावधान किया गया है कि 'बाहरी' अथवा 'अंदरूनी' गड़बड़ी की आशंका (external threat or a threat of internal disturbances) होने पर सरकार आपातकाल लागू कर सकती है।

✓ आपातकाल की घोषणा के साथ ही सारी शक्तियाँ केंद्र सरकार के हाथ में चली आती हैं।

✓ सरकार चाहे तो ऐसी स्थिति में किसी एक अथवा सभी मौलिक अधिकारों पर रोक लगा सकती है अथवा उनमें कटौती कर सकती है।

✍ 25 जून, 1975 की रात में प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद से आपातकाल लागू करने की सिफारिश की। राष्ट्रपति ने तुरंत यह उद्घोषणा कर दी।

✍ मंत्रिमंडल को इन बातों की सूचना 26 जून, 1975 की सुबह 6 बजे एक विशेष बैठक में दी गई।

✍ प्रश्न यह भी उठा कि क्या राष्ट्रपति को मंत्रिमंडल की सिफ़ारिश के बगैर आपातकाल की घोषणा करनी चाहिए थी?

☞ सरकार के इस फैसले से विरोध-आंदोलन एकबारगी रुक गया। अनेक विपक्षी नेताओं को जेल में डाल दिया गया। सरकार ने प्रेस की आज़ादी पर रोक लगा दी। धरना, प्रदर्शन और हड़ताल की भी अनुमति नहीं थी। नागरिकों के विभिन्न मौलिक अधिकार निष्प्रभावी हो गए।

✓ सांप्रदायिक गड़बड़ी की आशंका के मद्देनजर सरकार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) और जमात-ए-इस्लामी पर प्रतिबंध लगा दिया।

✍ सरकार ने 'निवारक नज़रबंदी' (preventive detention) का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया। इस प्रावधान के अंतर्गत 'लोगों को इस आशंका से गिरफ्तार किया जाता है कि वे कोई अपराध कर सकते हैं।' वे 'बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका' (habeas corpus petition) का सहारा लेकर अपनी गिरफ्तारी को चुनौती भी नहीं दे सकते थे।

✍ अप्रैल, 1976 में सर्वोच्च न्यायालय की संवैधानिक पीठ ने फैसला दिया कि सरकार आपातकाल के दौरान नागरिक से जीवन और आज़ादी का अधिकार वापस ले सकती है।

✓ सर्वोच्च न्यायालय के इस फ़ैसले से नागरिकों के लिए अदालत के दरवाज़े बंद हो गए। इस फ़ैसले को सर्वोच्च न्यायालय के सर्वाधिक विवादास्पद फ़ैसलों में एक माना गया।

✓ 'इंडियन एक्सप्रेस' और 'स्टेट्समैन' जैसे अखबारों ने प्रेस पर लगी सेंसरशिप का विरोध किया।

✓ 'सेमिनार' और 'मेनस्ट्रीम' जैसी पत्रिकाओं ने सेंसरशिप के आगे घुटने टेकने की जगह बंद होना मुनासिब समझा।

✓ पद्मभूषण से सम्मानित कन्नड़ लेखक शिवराम कारंत और पद्मश्री से सम्मानित हिंदी लेखक फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने लोकतंत्र के दमन के विरोध में अपनी-अपनी पद्वी लौटा दी।

☞ इंदिरा गाँधी के मामले में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले की पृष्ठभूमि में संविधान में संशोधन हुआ, जिसके द्वारा प्रावधान किया गया कि प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति पद के निर्वाचन को अदालत में चुनौती नहीं दी जा सकती।

☞ आपातकाल के दौरान ही संविधान का 42वाँ संशोधन-1976 पारित हुआ, जिसके जरिए देश की विधायिका के कार्यकाल को 5 से बढ़ाकर 6 साल किया गया।

❖ आपातकाल के संदर्भ में विवाद-

☞ आपातकाल भारतीय राजनीति का सर्वाधिक विवादास्पद प्रकरण है। इसके कारण हैं-

✓ आपातकाल की घोषणा की ज़रूरत को लेकर विभिन्न दृष्टिकोणों का होना।

✓ सरकार ने संविधान प्रदत्त अधिकारों का इस्तेमाल करके व्यावहारिक तौर पर लोकतांत्रिक कामकाज को ठप्प कर दिया था।

☞ आपातकाल के बाद शाह आयोग ने अपनी जाँच में पाया कि इस अवधि में बहुत सारी 'अति' हुई।

☞ शाह आयोग-1977 (Shah Commission-1977)

✓ मई, 1977 में जनता पार्टी की सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति जे.सी. शाह की अध्यक्षता में एक आयोग गठित किया।

✓ इस आयोग का गठन "25 जून, 1975 के दिन घोषित आपातकाल के दौरान की गई कार्रवाई तथा सत्ता के दुरुपयोग, अतिचार और कदाचार के विभिन्न आरोपों के विविध पहलुओं" की जाँच के लिए किया गया था।

✓ भारत सरकार ने आयोग द्वारा प्रस्तुत दो अंतरिम रिपोर्टों और तीसरी तथा अंतिम रिपोर्ट की सिफ़ारिशों, पर्यवेक्षणों और निष्कर्षों को स्वीकार किया।

☞ क्या 'आपातकाल' ज़रूरी था?

✍ सन् 1975 से पहले भारत में कभी भी 'अंदरूनी गड़बड़ी' को आधार बनाकर आपातकाल की घोषणा नहीं की गई थी।

✍ आपातकाल लागू करने के पीछे सरकार का तर्क था कि भारत में लोकतंत्र है और इसके अनुकूल विपक्षी दलों को चाहिए कि वे निर्वाचित शासक दल को अपनी नीतियों के अनुसार शासन चलाने दें।

✍ सरकार का मानना था कि बार-बार का धरना-प्रदर्शन और सामूहिक कार्रवाई लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं है।

✓ लगातार गैर-संसदीय राजनीति का सहारा लेने से अस्थिरता पैदा होती है और प्रशासन का ध्यान विकास के कामों से भंग हो जाता है।

✍ सीपीआई (इसने आपातकाल के दौरान कांग्रेस को समर्थन देना जारी रखा था) का विश्वास था कि भारत की एकता के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय साज़िश की जा रही है। सीपीआई का मानना था कि ऐसी सूरत में विरोध पर एक हद तक प्रतिबंध लगाना उचित है।

✓ आपातकाल के बाद भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (CPI) ने महसूस किया कि आपातकाल का समर्थन करना एक गलती थी।

✍ आपातकाल के आलोचकों का तर्क था कि लोकतंत्र में लोगों को सार्वजनिक तौर पर सरकार के विरोध का अधिकार होना चाहिए।

✓ जिन लोगों को गिरफ्तार किया गया था, उन पर कभी भी राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों में लिप्त रहने का मुकदमा नहीं चला।

✓ गृह मंत्रालय ने भी कानून व्यवस्था की बाबत कोई चिंता नहीं जतायी थी।

✓ इस प्रकार लोकतांत्रिक कार्यप्रणाली को ठप्प करके 'आपातकाल' लागू करने जैसे अतिचारी कदम उठाने की ज़रूरत कतई न थी।

✓ दरअसल खतरा देश की एकता और अखंडता को नहीं, बल्कि शासक दल और स्वयं प्रधानमंत्री को था।

❖ आपातकाल के दौरान क्या-क्या हुआ?

☞ सरकार ने कहा कि वह आपातकाल के ज़रिए कानून व्यवस्था को बहाल करना चाहती थी, कार्यकुशलता बढ़ाना चाहती थी और गरीबों के हित के कार्यक्रम लागू करना चाहती थी।

✍ इस उद्देश्य से सरकार ने एक 'बीस-सूत्री कार्यक्रम' (Twenty-point programme) की घोषणा की।

✓ बीस-सूत्री कार्यक्रम में भूमि-सुधार, भू-पुनर्वितरण, खेतिहर मज़दूरों के पारिश्रमिक पर पुनर्विचार, प्रबंधन में कामगारों की भागीदारी, बंधुआ मज़दूरी की समाप्ति आदि मसले शामिल थे।

✍ आपातकाल के आलोचकों ने ध्यान दिलाया है कि सरकार के ज़्यादातर वायदे पूरे नहीं हुए।

✍ सरकार पर कई गंभीर आरोप ऐसे लोगों को लेकर लगे थे जो किसी आधिकारिक पद पर नहीं थे, लेकिन सरकारी ताकत का इन लोगों ने इस्तेमाल किया था।

✓ प्रधानमंत्री के छोटे बेटे संजय गाँधी पर आरोप लगाया जाता है कि उन्होंने सरकारी कामकाज में दखल दिया। दिल्ली में झुग्गी बस्तियों को हटाने तथा ज़बरन नसबंदी करने की मुहिम में उनकी भूमिका को लेकर बड़े विवाद उठे।

✓ आपातकाल के दौरान न केवल राजनीतिक कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी हुई और प्रेस पर पाबंदी लगी वरन् पुलिस हिरासत में मौत और यातना की घटनाएँ भी घटीं।

✍ आपातकाल के दौरान इंजीनियरिंग के छात्र केरल निवासी पी. राजन की पुलिस हिरासत के दौरान पुलिस द्वारा लगातार यातना देने के कारण मौत हो गई। इस प्रकरण में केरल के मुख्यमंत्री के. करुणाकरण को अपने पद से इस्तीफ़ा देना पड़ा था।

☞ आपातकाल के सबक-

✍ आपातकाल का एक सबक तो यह है कि भारत से लोकतंत्र को विदा कर पाना बहुत कठिन है, क्योंकि हम देखते हैं कि थोड़े ही दिनों के अंदर कामकाज फिर से लोकतांत्रिक ढर्रे पर लौट आया।

✍ आपातकाल से संविधान में वर्णित आपातकाल के प्रावधानों के कुछ अर्थगत उलझाव भी प्रकट हुए, जिन्हें बाद में सुधार लिया गया। जैसे-

✓ अब 'अंदरूनी' आपातकाल ('Internal' Emergency) सिर्फ़ ''सशस्त्र विद्रोह'' ("armed rebellion") की स्थिति में लगाया जा सकता है।

✓ इसके लिए यह भी ज़रूरी है कि आपातकाल की घोषणा की सलाह 'मंत्रिमंडल' राष्ट्रपति को लिखित में दे।

✍ आपातकाल की समाप्ति के बाद अदालतों ने व्यक्ति के नागरिक अधिकारों की रक्षा में सक्रिय भूमिका निभाई।

✍ आपातकाल का वास्तविक क्रियान्वयन पुलिस और प्रशासन के ज़रिए हुआ। ये संस्थाएँ स्वतंत्र होकर काम नहीं कर पाईं। इन्हें शासक दल ने अपना राजनीतिक औज़ार बनाकर इस्तेमाल किया।

✓ शाह कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार पुलिस और प्रशासन राजनीतिक दबाव की चपेट में आ गए थे। यह समस्या आपातकाल के बाद भी खत्म नहीं हुई।

❖ आपातकाल के बाद की राजनीति-

☞ 'सन् 1977 के चुनाव एक तरह से आपातकाल के अनुभवों के बारे में जनमत-संग्रह थे।' कैसे?

✍ सन् 1977 में विपक्ष ने 'लोकतंत्र बचाओ' के नारे पर चुनाव लड़ा। उत्तर भारत में तो खासतौर पर जनादेश निर्णायक तौर पर आपातकाल के विरुद्ध था, क्योंकि यहाँ आपातकाल का असर सबसे ज़्यादा महसूस किया गया था।

✍ जिन सरकारों को जनता ने लोकतंत्र-विरोधी माना उसे मतदाता के रूप में उसने भारी दंड दिया।

✍ चुनाव के पहले विपक्षी पार्टियों ने एकजुट होकर 'जनता पार्टी' नाम से एक नया दल बनाया। नई पार्टी ने जयप्रकाश नारायण का नेतृत्व स्वीकार किया।

✍ कांग्रेस के कुछ नेताओं ने जगजीवन राम के नेतृत्व में एक नई पार्टी बनाई। इस पार्टी का नाम 'कांग्रेस फॉर डेमोक्रेसी' था और बाद में यह पार्टी 'जनता पार्टी' में शामिल हो गई।

✍ जनता पार्टी ने चुनाव-प्रचार में शासन के अलोकतांत्रिक चरित्र और आपातकाल के दौरान की गई ज़्यादतियों पर ज़ोर दिया।

✍ हज़ारों लोगों की गिरफ्तारी और प्रेस की सेंसरशिप की पृष्ठभूमि में जनमत कांग्रेस के विरुद्ध था।

☞ आज़ादी के बाद पहली बार ऐसा हुआ कि कांग्रेस लोकसभा का सन् 1977 का चुनाव हार गई।

✓ कांग्रेस को लोकसभा की मात्र 154 सीटें मिली थी। उसे 35 प्रतिशत से भी कम वोट हासिल हुए।

✓ उत्तर भारत में चुनावी माहौल कांग्रेस के एकदम खिलाफ था। राजस्थान में उसे महज एक सीट मिली।

✓ इंदिरा गाँधी रायबरेली से और उनके पुत्र संजय गाँधी अमेठी से चुनाव हार गए।

☞ जनता पार्टी और उसके साथी दलों को लोकसभा की कुल 542 सीटों में से 330 सीटें मिलीं। खुद जनता पार्टी अकेले 295 सीटों पर जीत गई थी और उसे स्पष्ट बहुमत मिला था।

☞ सन् 1977 के चुनाव में दक्षिण भारत के राज्यों में तो एक तरह से कांग्रेस की चुनावी विजय का चक्का बेरोक-टोक चला था। इसके कई कारण रहे-

- आपातकाल का प्रभाव हर राज्य पर एकसमान नहीं पड़ा था। लोगों को ज़बरन उजाड़ने और विस्थापित करने अथवा ज़बरन नसबंदी करने का काम ज़्यादातर उत्तर भारत के राज्यों में हुआ था।
- उत्तर भारत में राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता की प्रकृति में दूरगामी बदलाव आए थे।
- उत्तर भारत का मध्यवर्ग कांग्रेस से दूर जाने लगा था और मध्यवर्ग के कई तबके जनता पार्टी को एक मंच के रूप में पाकर इससे आ जुड़े।

❖ जनता सरकार-

☞ सन् 1977 के चुनावों के बाद बनी जनता पार्टी की सरकार में कोई खास तालमेल नहीं था। चुनाव के बाद नेताओं के बीच प्रधानमंत्री के पद के लिए होड़ मची। इस होड़ में मोरारजी देसाई, चरण सिंह और जगजीवन राम शामिल थे।

- मोरारजी देसाई सन् 1966-67 से ही इंदिरा गाँधी के प्रतिद्वंद्वी थे।
- चरण सिंह 'भारतीय लोकदल' के प्रमुख और उत्तर प्रदेश के किसान नेता थे।
- जगजीवन राम को कांग्रेसी सरकारों में मंत्री पद पर रहने का विशाल अनुभव था।

☞ बहरहाल, मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने।

☞ जनता पार्टी की सरकार कांग्रेस द्वारा अपनाई गई नीतियों में कोई बुनियादी बदलाव नहीं ला सकी।

☞ जनता पार्टी के आलोचकों ने कहा कि जनता पार्टी के पास किसी दिशा, नेतृत्व अथवा एक साझे कार्यक्रम का अभाव था।

☞ अन्ततः जनता पार्टी बिखर गई और मोरारजी देसाई के नेतृत्व वाली सरकार ने 18 माह में ही अपना बहुमत खो दिया।

☞ अब कांग्रेस पार्टी के समर्थन पर दूसरी सरकार चरण सिंह के नेतृत्व में बनी। लेकिन बाद में कांग्रेस पार्टी ने समर्थन वापस लेने का फ़ैसला किया। इस वजह से चरण सिंह की सरकार मात्र चार महीने तक सत्ता में रही।

☞ जनवरी, 1980 में लोकसभा के लिए नए सिरे से चुनाव हुए। इस चुनाव में जनता पार्टी बुरी तरह परास्त हुई। जनता पार्टी को उत्तर भारत में करारी शिकस्त मिली।

☞ इंदिरा गाँधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी ने सन् 1980 के चुनाव में एक बार फिर भारी सफलता हासिल की।

☞ सन् 1977-79 के चुनावों ने सबक सिखाया कि सरकार अगर अस्थिर हो और उसके भीतर कलह हो, तो मतदाता ऐसी सरकार को कड़ा दंड देते हैं।

❖ कांग्रेस की प्रकृति में बदलाव-

☞ सन् 1969 के बाद से कांग्रेस का सबको समाहित करके चलने वाला स्वभाव बदलना शुरू हुआ।

☞ सन् 1969 से पहले तक कांग्रेस विविध विचारधारात्मक गति-मति के नेताओं और कार्यकर्ताओं को एक में समेटकर चलती थी।

☞ अपने बदले हुए स्वभाव में कांग्रेस ने स्वयं को विशेष विचारधारा से जोड़ा।

☞ कांग्रेस ने अपने को देश की एकमात्र समाजवादी और ग़रीबों की हिमायती पार्टी बताना शुरू किया।

☞ कांग्रेस पार्टी अब एक नेता यानी इंदिरा गाँधी की लोकप्रियता पर भी निर्भर हुई।

☞ आर.के. लक्ष्मण का ''इंदिरा बुलाओ, देश बचाओ'' कार्टून 'टाइम्स ऑफ इंडिया' में सन् 1980 के चुनावों के बाद छपा था।

❖ मोरारजी देसाई (1896-1995) :-

☞ गाँधीवादी नेता; बॉम्बे प्रांत के मुख्यमंत्री; सन् 1967-1969 के बीच भारत के उप-प्रधानमंत्री; कांग्रेस पार्टी में टूट के बाद कांग्रेस (ओ) में शामिल; सन् 1977-1979 तक एक गैर-कांग्रेसी दल की तरफ से प्रधानमंत्री रहे।

❖ चौधरी चरण सिंह (1902-1987) :-

☞ कांग्रेस छोड़ी और सन् 1967 में भारतीय क्रांति दल का गठन; उत्तर प्रदेश में दो बार मुख्यमंत्री; बाद में सन् 1977 में जनता पार्टी के संस्थापकों में से एक, उप-प्रधानमंत्री और गृहमंत्री (1977-79); लोकदल के संस्थापक; जुलाई, 1979 से जनवरी, 1980 के बीच भारत के प्रधानमंत्री।

❖ जगजीवन राम (1908-1986) :-

☞ बिहार के कांग्रेसी नेता; सन् 1952 से मृत्युपर्यंत सांसद; स्वतंत्र भारत के पहले मंत्रिमंडल में श्रम मंत्री; सन् 1977-79 के बीच भारत के उप-प्रधानमंत्री।

XII Class

Pol. Science

क्षेत्रीय आकांक्षाएँ
(स्वतंत्र भारत में राजनीति)

Part II Chapter Summary- 7

❖ क्षेत्र और राष्ट्र-

☞ 1980 के दशक को स्वायत्तता की माँग के दशक के रूप में भी देखा जा सकता है।

☞ इस दौर में देश के कई हिस्सों से स्वायत्तता की माँग उठी और इसने संवैधानिक हदों को भी पार किया।

☞ इन आंदोलनों में शामिल लोगों ने अपनी माँग के पक्ष में हथियार उठाए; सरकार ने उनको दबाने के लिए जवाबी कार्रवाई की और इस क्रम में राजनीतिक तथा चुनावी प्रक्रिया अवरुद्ध हुई।

☞ ''भारत में विभिन्न क्षेत्र और भाषायी समूहों को अपनी संस्कृति बनाए रखने का अधिकार होगा।'' विविधता के इस बुनियादी सिद्धांत को हम भारत के संविधान पाते हैं।

☞ भारत ने विविधता के सवाल पर लोकतांत्रिक दृष्टिकोण अपनाया। लोकतंत्र में क्षेत्रीय आकांक्षाओं की राजनीतिक अभिव्यक्ति की अनुमति है और लोकतंत्र क्षेत्रीयता को राष्ट्र-विरोधी नहीं मानता।

☞ लोकतांत्रिक राजनीति में विभिन्न दलों और समूहों के लिए क्षेत्रीय पहचान, आकांक्षा अथवा किसी खास क्षेत्रीय समस्या को आधार बनाकर लोगों की भावनाओं की नुमाइंदगी करने के अवसर रहते हैं।

☞ आज़ादी के तुरंत बाद हमारे देश को विभाजन, विस्थापन, देसी रियासतों के विलय और राज्यों के पुनर्गठन जैसे कठिन मसलों से जूझना पड़ा।

☞ आज़ादी के तुरंत बाद जम्मू-कश्मीर का मसला सामने आया। इसी तरह पूर्वोत्तर के कुछ भागों में भारत का अंग होने के मसले पर सहमति नहीं थी। दक्षिण भारत में भी द्रविड़ आंदोलन से जुड़े कुछ समूहों ने एक समय अलग राष्ट्र की बात उठायी थी।

☞ इन आंदोलनों के अतिरिक्त देश में भाषा के आधार पर राज्यों के गठन की माँग करते हुए जन आंदोलन चले। मौजूदा आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र और गुजरात ऐसे ही आंदोलनों वाले राज्य हैं।

☞ तमिलनाडु में हिंदी को राजभाषा बनाने के खिलाफ़ विरोध-आंदोलन चला।

☞ सन् 1966 में पंजाब और हरियाणा नाम से राज्य बनाए गए।

☞ सन् 2000 में छत्तीसगढ़, उत्तराखंड और झारखंड का गठन हुआ।

☞ इस प्रकार कहा जा सकता है कि विविधता की चुनौती से निपटने के लिए देश की अंदरूनी सीमा रेखाओं का पुनर्निर्धारण किया गया।

❖ जम्मू एवं कश्मीर-

☞ जम्मू और कश्मीर को अनुच्छेद 370 के अंतर्गत विशेष दर्जा दिया गया था।

☞ जम्मू और कश्मीर को हिंसा, सीमा पार का आतंकवाद और राजनीतिक अस्थिरता झेलनी पड़ी। इसके परिणाम स्वरूप कई लोग भी मारे गए, जिनमें निर्दोष नागरिक, सुरक्षाकर्मी और उग्रवादी शामिल थे। कश्मीर घाटी से बड़े पैमाने पर कश्मीरी पंडितों का पलायन भी हुआ।

☞ जम्मू और कश्मीर तीन सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों-जम्मू, कश्मीर और लद्दाख से बना हुआ है।

✍ जम्मू क्षेत्र में छोटी पहाड़ियाँ और मैदानी भाग हैं, जिसमें मुख्य रूप से हिन्दू रहते हैं।

✍ कश्मीर क्षेत्र में मुख्य रूप से कश्मीर घाटी है, जहाँ रहने वाले अधिकांश कश्मीरी मुसलमान हैं।

✍ लद्दाख मुख्य रूप से पहाड़ी क्षेत्र है। इसकी जनसंख्या बहुत कम है, जिसमें लगभग बराबर संख्या में बौद्ध और मुसलमान हैं।

☞ समस्या की जड़ें-

✍ सन् 1947 से पहले जम्मू और कश्मीर एक राजसी रियासत थी, जिसके शासक, महाराजा हरि सिंह भारत या पाकिस्तान में शामिल होना नहीं चाहते थे, बल्कि अपनी रियासत के लिए स्वतंत्र दर्जा चाहते थे।

✍ जम्मू और कश्मीर में नेशनल कॉन्फ्रेंस के शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में चलाया गया लोकप्रिय आंदोलन महाराजा से छुटकारा पाना चाहता था।

- नेशनल कॉन्फ्रेंस एक धर्मनिरपेक्ष संगठन था और इसका काँग्रेस के साथ लंबे समय से संबंध था।
- अक्टूबर, 1947 में, पाकिस्तान ने कश्मीर पर कब्जा करने के लिए अपनी तरफ से कबायली घुसपैठिए भेजे। इसने महाराजा को भारतीय सैनिक सहायता लेने के लिए बाध्य किया। भारत ने सैनिक सहायता दी और कश्मीर घाटी से घुसपैठियों को वापस खदेड़ दिया, परंतु यह तभी हुआ जब महाराजा ने भारत सरकार के साथ विलय प्रपत्र पर हस्ताक्षर कर दिए।
- परंतु, चूँकि पाकिस्तान ने राज्य के एक बड़े हिस्से पर नियंत्रण जारी रखा, इसलिए मामले को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाया गया, जिसने दिनांक 21 अप्रैल, 1948 के अपने प्रस्ताव में मामले को निपटाने के लिए एक तीन चरणों वाली प्रक्रिया की अनुशंसा की।
  - ✓ पहला, पाकिस्तान को अपने वे सारे नागरिक वापस बुलाने थे, जो कश्मीर में घुस गए थे।
  - ✓ दूसरा, भारत को धीरे धीरे अपनी फौज कम करनी थी ताकि कानून व्यवस्था बनी रहे।
  - ✓ तीसरा, एक स्वतंत्र और निष्पक्ष तरीके से जनमत संग्रह कराया जाना था।

☞ मार्च, 1948 में शेख अब्दुल्ला जम्मू और कश्मीर के प्रधानमंत्री (उस समय राज्य में सरकार का मुखिया) बन गए।

☞ शेख मोहम्मद अब्दुल्ला (1905-1982):-

- जम्मू एवं कश्मीर के नेता; नेशनल कांफ्रेंस के नेता; धर्मनिरपेक्षता के आधार पर पाकिस्तान का विरोध; भारत में विलय के बाद जम्मू-कश्मीर के प्रधानमंत्री (1947); सन् 1974 में इंदिरा गाँधी के साथ समझौता, राज्य के मुख्यमंत्री पद पर आरूढ़।

☞ बाहरी और आंतरिक झगड़े-

- पाकिस्तान ने सन् 1947 में राज्य में कबायली हमला करवाया, जिसके परिणामस्वरूप राज्य का एक हिस्सा पाकिस्तानी नियंत्रण में आ गया।
- पाकिस्तान के कब्जे वाले क्षेत्र को वे 'आजाद कश्मीर' (Azad Kashmir) कहते हैं।
- अनुच्छेद 370 और 371 में जम्मू और कश्मीर के लिए विशेष प्रावधान किए गए।
- लोगों का एक वर्ग विश्वास करता था कि अनुच्छेद 370 द्वारा प्रदत्त राज्य का विशेष दर्जा राज्य को भारत से पूर्ण रूप से एकीकृत नहीं होने देता है। इस वर्ग को लगा कि अनुच्छेद 370 को रद्द कर देना चाहिए।
- दूसरे वर्ग, अधिकांश कश्मीरियों, का मानना है कि अनुच्छेद 370 द्वारा प्रदत्त स्वायत्तता पर्याप्त नहीं है। उनकी कम से कम तीन मुख्य शिकायतें थी-
  - ✓ पहली, यह कि कबायली हमले से उत्पन्न परिस्थिति के सामान्य होने पर विलय के मामले को 'जनमत-संग्रह' द्वारा सुलझाया जाए। यह वायदा अभी तक पूरा नहीं हुआ है।
  - ✓ दूसरे, यह अनुभव किया जा रहा था कि अनुच्छेद 370 द्वारा दिया गया विशेष संघीय दर्जा व्यवहारिक रूप से कम कर दिया गया है। इससे स्वायत्तता को बहाल करने या 'अधिक राज्य स्वायत्तता' की माँग उठी।
  - ✓ तीसरी, यह अनुभव किया गया कि जिस प्रकार का लोकतन्त्र शेष भारत में है, वैसा जम्मू और कश्मीर राज्य में लागू नहीं किया गया है।
- प्रधानमंत्री बनने के बाद, शेख अब्दुल्ला ने भूमि सुधार और अन्य नीतियाँ शुरू की। परंतु कश्मीर के मुद्दे पर उनके और केंद्र सरकार के बीच मतभेद बढ़ता गया। उन्हें सन् 1953 में पद्च्युत कर दिया गया और कई वर्षों तक कैद रखा गया।
- सन् 1953 और 1974 के बीच की अवधि में कांग्रेस पार्टी ने राज्य की नीतियों पर प्रभाव डाला।
- सन् 1965 में जम्मू और कश्मीर के संविधान में एक परिवर्तन किया गया, जिसके अंतर्गत राज्य के प्रधानमंत्री का पदनाम बदलकर मुख्यमंत्री कर दिया गया।
- भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के गुलाम मोहम्मद सादिक राज्य के पहले मुख्यमंत्री बने।
- सन् 1974 में इंदिरा गाँधी का शेख अब्दुल्ला के साथ एक समझौता हुआ और वे राज्य के मुख्यमंत्री बन गए।
- शेख अब्दुल्ला का सन् 1982 में निधन हो गया और नेशनल कॉन्फ्रेंस का नेतृत्व उनके पुत्र फारूक अब्दुल्ला के पास चला गया, जो मुख्यमंत्री बने, परंतु जल्द ही उन्हें पदच्युत कर दिया गया। सरकार को पदच्युत करने पर कश्मीर में नाराजगी की भावना पैदा हुई।
- सन् 1987 के विधानसभा चुनाव में नेशनल कॉन्फ्रेंस-काँग्रेस गठबंधन की भारी जीत हुई और फारूक अब्दुल्ला मुख्यमंत्री बने।
- 1980 के दशक के प्रारम्भ से ही राज्य में अकुशल प्रशासन के विरुद्ध एक व्यापक नाराजगी चल रही थी। इससे कश्मीर में राजनीतिक संकट उत्पन्न हुआ जो उग्रवाद के उठने से गहरा गया। 1989 तक, राज्य एक उग्रवादी आंदोलन के कब्जे में आ गया। इन विद्रोहियों को पाकिस्तान से नैतिक, आर्थिक और फौजी समर्थन मिला। परिणाम यह रहा कि कई वर्षों तक राज्य, राष्ट्रपति शासन और प्रभावी रूप से सशत्र सेनाओं के नियंत्रण में रहा।
- अंत में, वर्ष 2002 में जम्मू और कश्मीर राज्य में चुनाव हुए। इसमें पीपल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) और काँग्रेस की मिली-जुली सरकार सत्ता में आ गई।

- गठबंधन के समझौते के अनुसार पहले मुफ्ती मोहम्मद और उसके बाद भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के गुलामनबी आज़ाद मुखिया बने।
- नवंबर-दिसंबर 2008 के चुनाव में एक और मिली-जुली सरकार (नेशनल कॉन्फ्रेंस और भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस) उमर अब्दुल्ला के नेतृत्व में सत्ता में आई।
- सन् 2014 में, राज्य में फिर चुनाव हुए, जिसमें पीडीपी के मुफ्ती मोहम्मद सईद के नेतृत्व में बीजेपी के साथ एक मिली-जुली सरकार सत्ता में आई। मुफ्ती मोहम्मद सईद के निधन के बाद, उनकी बेटी महबूबा मुफ्ती 2016 ई. में राज्य की पहली महिला मुख्यमंत्री बनी।
- जून, 2018 में बीजेपी द्वारा मुफ्ती सरकार को दिया गया समर्थन वापस लेने के बाद राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया।
- 5 अगस्त, 2019 को जम्मू और कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम 2019 द्वारा अनुच्छेद 370 समाप्त कर दिया गया और राज्य को पुनर्गठित कर दो केंद्र शासित प्रदेश- जम्मू और कश्मीर तथा लद्दाख बना दिए गए।

❖ द्रविड़ आंदोलन (Dravidian movement)-

- 'उत्तर हर दिन बढ़ता जाए, दक्षिण दिन-दिन घटता जाए' यह द्रविड़ आंदोलन के एक बेहद लोकप्रिय नारे का हिंदी रूपांतर है।
- द्रविड़ आंदोलन भारत के क्षेत्रीय आंदोलनों में सबसे ताकतवर आंदोलन था।
- भारतीय राजनीति में यह आंदोलन क्षेत्रीयतावादी भावनाओं की सर्वप्रथम अभिव्यक्ति था।
- इस आंदोलन ने कभी सशस्त्र संघर्ष की राह नहीं अपनायी।
- द्रविड़ आंदोलन की बागडोर तमिल समाज सुधारक ई.वी. रामास्वामी नायकर 'पेरियार' (E.V. Ramasami Naicker 'Periyar') के हाथों में थी।
- ई.वी. रामास्वामी नायकर (1879-1973) : 'पेरियार' के नाम से प्रसिद्ध; जाति-विरोधी आंदोलन एवं द्रविड़ अस्मिता के उद्भावक; आत्मसम्मान आंदोलन के जनक (1925); ब्राह्मण विरोधी आंदोलन का नेतृत्व; जस्टिस पार्टी के कार्यकर्ता और द्रविड़ कषगम की स्थापना; हिंदी और उत्तर भारतीय वर्चस्व का विरोध; 'उत्तर भारतीय लोग एवं ब्राह्मण द्रविड़ों से अलग आर्य हैं' इस मत का प्रतिपादन किया।
- इस आंदोलन से एक राजनीतिक संगठन-'द्रविड़ कषगम' (Dravidar Kazhagam) का सूत्रपात हुआ।
- यह संगठन ब्राह्मणों के वर्चस्व का विरोध करता था तथा उत्तरी भारत के राजनीतिक, आर्थिक और साँस्कृतिक प्रभुत्व को नकारते हुए क्षेत्रीय गौरव की प्रतिष्ठा पर जोर देता था।
- अन्य दक्षिणी राज्यों से समर्थन न मिलने के कारण यह आंदोलन धीरे-धीरे तमिलनाडु तक ही सिमट कर रह गया।
- बाद में द्रविड़ कषगम दो धड़ों में बंट गया और प्रमुख शक्ति द्रविड़ मुनेत्र कषगम (Dravida Munnetra Kazhagam/ DMK) के पाले में केंद्रित हो गई।
- डीएमके ने तीन-सूत्री आंदोलन के साथ राजनीति में कदम रखा।
  - ✓ पहली, कल्लाकुडी नामक रेलवे स्टेशन का नया नाम-डालमियापुरम निरस्त किया जाए और स्टेशन का मूल नाम बहाल किया जाए।
  - ✓ दूसरी, स्कूली पाठ्यक्रम में तमिल संस्कृति के इतिहास को ज़्यादा महत्त्व दिया जाए।
  - ✓ तीसरी माँग राज्य सरकार के 'शिल्पकर्म शिक्षा कार्यक्रम' (craft education scheme) को लेकर थी, जो, उनके अनुसार समाज में ब्राह्मणवादी दृष्टिकोण को बढ़ावा देता था।
- डीएमके हिंदी को राजभाषा का दर्ज़ा देने के भी खिलाफ़ थी। सन् 1965 के हिंदी विरोधी आंदोलन की सफलता ने डीएमके को जनता के बीच और भी लोकप्रिय बना दिया।
- डीएमके को सन् 1967 के विधानसभा चुनावों में बड़ी सफलता हाथ लगी।
- डीएमके के संथापक सी. अन्नादुरै (C. Annadurai) की मृत्यु के बाद दल में दोफाड़ हो गया। इसमें एक दल मूल नाम यानी डीएमके (DMK) को लेकर आगे चला जबकि दूसरा दल खुद को आल इंडिया अन्ना द्रमुक (All India Anna DMK/ AIADMK) कहने लगा। यह दल स्वयं को द्रविड़ विरासत का असली हकदार बताता था।

❖ पंजाब-

- सन् 1966 में पंजाब (पंजाबी-भाषी प्रांत) और हरियाणा का गठन हुआ।
- सिखों की राजनीतिक शाखा के रूप में 1920 के दशक में अकाली दल का गठन हुआ और अकाली दल ने 'पंजाबी सूबा' के गठन का आंदोलन चलाया था।
- अकाली दल ने पंजाब में सन् 1967 और इसके बाद सन् 1977 में सरकार बनाई, जो कि गठबंधन सरकारें थी।
- अकालियों को लगता था कि उनकी राजनीतिक स्थिति डावांडोल है, जैसे-
  - ✓ उनकी सरकार को केंद्र ने कार्यकाल पूरा करने से पहले बर्खास्त कर दिया था।
  - ✓ अकाली दल को पंजाब के हिंदुओं के बीच कुछ खास समर्थन हासिल नहीं था।
  - ✓ सिख समुदाय भी दूसरे धार्मिक समुदायों की तरह जाति और वर्ग के धरातल पर बँटा हुआ था।

☞ इन्हीं परिस्थितियों के मद्देनज़र सन् 1973 में, आनंदपुर साहिब में हुए एक सम्मेलन में इस आशय का प्रस्ताव पारित हुआ।

☞ 'आनंदपुर साहिब प्रस्ताव' में क्षेत्रीय स्वायत्तता की बात उठायी गई थी। प्रस्ताव की माँगों में केंद्र-राज्य संबंधों को पुनर्परिभाषित करने की बात भी शामिल थी।

☞ यह प्रस्ताव संघवाद को मजबूत करने की अपील करता है।

☞ आगे चलकर कुछ चरमपंथी तबकों ने भारत से अलग होकर 'खालिस्तान' बनाने की वकालत की।

☞ जल्दी ही आंदोलन ने सशस्त्र विद्रोह का रूप ले लिया।

☞ उग्रवादियों ने अमृतसर स्थित सिखों के तीर्थ 'स्वर्णमंदिर' (Golden Temple) में अपना मुख्यालय बनाया और स्वर्णमंदिर एक हथियारबंद किले में तब्दील हो गया।

☞ जून, 1984 में भारत सरकार ने 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' (Operation Blue Star) चलाया। यह स्वर्णमंदिर में की गई सैन्य कार्रवाई का कूट नाम था। इस सैन्य-अभियान में सरकार ने उग्रवादियों को सफ़लतापूर्वक मार भगाया।

☞ इस सैन्य कार्रवाई से ऐतिहासिक स्वर्णमंदिर को भी क्षति पहुँची, जिससे सिखों की भावनाओं को गहरी चोट लगी।

☞ प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी की 31 अक्तूबर, 1984 के दिन उनके आवास के बाहर उन्हीं के अंगरक्षकों ने हत्या कर दी। ये अंगरक्षक सिख थे और ऑपरेशन ब्लू स्टार का बदला लेना चाहते थे।

☞ इससे उत्तर भारत के कई हिस्सों में सिख समुदाय के विरुद्ध हिंसा भड़क उठी। हिंसा में कई सिख मारे गए।

☞ सिखों को सबसे ज्यादा दुख इस बात का था कि सरकार ने स्थिति को सामान्य बनाने के लिए बड़ी देर से कदम उठाए।

☞ सन् 1984 के सिख विरोधी दंगों के दौरान 'निर्दोष सिखों की हत्या' की जाँच के लिए वर्ष 2000 में न्यायमूर्ति जी.टी. नानावती (G.T. Nanavati) की अध्यक्षता में एक आयोग गठित हुआ, जिसने वर्ष 2005 की अपनी रिपोर्ट में कहा कि "... हमलावरों को पुलिस का भी ज्यादा भय नहीं था। इससे जान पड़ता है मानो इन्हें आश्वासन दिया गया हो कि इन कामों को अंजाम देते समय या उसके बाद भी इन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया जाएगा।"

☞ प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने सन् 2005 में संसद में अपने भाषण के दौरान इस सिख-विरोधी हिंसा के लिए देश से माफी माँगी।

☞ सन् 1984 के चुनावों के बाद प्रधानमंत्री राजीव गाँधी (Rajiv Gandhi) ने नरमपंथी अकाली नेताओं से बातचीत की शुरुआत की।

☞ राजीव गाँधी सरकार का अकाली दल के तत्कालीन अध्यक्ष हरचंद सिंह लोगोंवाल (Harchand Singh Longowal) के साथ जुलाई, 1985 में एक समझौता हुआ। इस समझौते को 'राजीव गाँधी-लोंगोवाल समझौता' (Rajiv Gandhi-Longowal Accord) अथवा 'पंजाब समझौता' (Punjab Longowal) कहा जाता है।

☞ समझौते की शर्तें-

✓ चंडीगढ़ पंजाब को दे दिया जाएगा।

✓ पंजाब तथा हरियाणा के बीच सीमा-विवाद को सुलझाने के लिए एक अलग आयोग की नियुक्ति होगी।

✓ पंजाब-हरियाणा-राजस्थान के बीच रावी-व्यास के पानी के बँटवारे के बारे में फ़ैसला करने के लिए एक ट्रिब्यूनल (न्यायाधिकरण) बैठाया जाएगा।

✓ सरकार पंजाब में उग्रवाद से प्रभावित लोगों को मुआवजा देने और उनके साथ बेहतर सलूक करने पर राजी हुई।

✓ पंजाब से विशेष सुरक्षा बल अधिनियम को वापस लेने की बात पर भी सहमति हुई।

✍ समझौता पंजाब में अमन कायम करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम था, लेकिन पंजाब में हिंसा का चक्र लगभग एक दशक तक चलता रहा और इस हिंसा को दबाने के लिए की गई कार्रवाइयों में मानवाधिकार का व्यापक उल्लंघन हुआ।

☞ 1990 के दशक के मध्यवर्ती वर्षों में पंजाब में शांति बहाल हुई।

☞ सन् 1997 में अकाली दल (बादल) और भाजपा के गठबंधन को बड़ी विजय मिली। उग्रवाद के खात्मे के बाद के दौर में यह पंजाब का पहला चुनाव था।

☞ मास्टर तारा सिंह (1885-1967):-

✍ प्रमुख सिख धार्मिक एवं राजनीतिक नेता; अकाली आंदोलन के नेता; स्वतंत्रता के बाद अलग पंजाब राज्य के निर्माण के समर्थक।

☞ संत हरचंद सिंह लोंगोवाल (1932-1985):-

✍ सिखों के धार्मिक एवं राजनीतिक नेता; अकाली नेता; अकालियों की प्रमुख माँगों को लेकर प्रधानमंत्री राजीव गाँधी से समझौता।

❖ पूर्वोत्तर (The North-East)-

☞ पूर्वोत्तर में क्षेत्रीय आकांक्षाएँ 1980 के दशक में एक निर्णायक मोड़ पर आ गई थी। क्षेत्र में सात राज्य हैं और इन्हें 'सात बहनें' (Seven Sisters) कहा जाता है।

☞ इस क्षेत्र की सीमाएँ चीन, म्यांमार और बांग्लादेश से लगती हैं और यह इलाका भारत के लिए एक तरह से दक्षिण-पूर्व एशिया का प्रवेश-द्वार है।

☞ इस इलाके में नगालैंड को सन् 1963 में राज्य बनाया गया। मणिपुर, त्रिपुरा और मेघालय सन् 1972 में राज्य बने जबकि मिजोरम और अरुणाचल प्रदेश को सन् 1987 में राज्य का दर्जा दिया गया।

☞ भारत-विभाजन के बाद के वर्षों में पूर्वोत्तर के इलाके में पड़ोसी राज्यों और देशों से आने वाले शरणार्थियों के कारण इलाके की जनसंख्या की संरचना में बड़ा बदलाव आया।

☞ पूर्वोत्तर का अलग-थलग पड़ जाना, इस इलाके की जटिल सामाजिक संरचना और इस इलाके का आर्थिक रूप से पिछड़ा होना, जैसी कई बातों ने एक साथ मिलकर एक जटिल स्थिति पैदा की।

☞ पूर्वोत्तर के राज्यों में राजनीति पर तीन मुद्दे हावी हैं:-

✓ स्वायत्तता की माँग।

✓ अलगाव के आंदोलन।

✓ 'बाहरी' लोगों का विरोध।

☞ स्वायत्तता की माँग-

✍ आजादी के वक्त मणिपुर और त्रिपुरा को छोड़ दें तो यह पूरा इलाका असम कहलाता था।

✍ गैर-असमी लोगों को जब लगा कि असम की सरकार उन पर असमी भाषा थोप रही है तो इस इलाके से राजनीतिक स्वायत्तता की माँग उठी।

✍ बड़े जनजाति समुदाय के नेता असम से अलग होना चाहते थे। इन लोगों ने 'ईस्टर्न इंडिया ट्राइबल यूनियन' का गठन किया जो सन् 1960 में कहीं ज्यादा व्यापक 'ऑल पार्टी हिल्स कांफ्रेंस' में तब्दील हो गया।

✍ इनकी माँग थी कि असम से अलग एक जनजातीय राज्य बनाया जाए। परिणाम रहा कि असम के कुछ हिस्सों को अलग कर मेघालय, मिजोरम और अरुणाचल प्रदेश बनाया। त्रिपुरा और मणिपुर को भी राज्य का दर्जा दिया गया।

✍ असम के बोडो, करबी और दिमसा जैसे समुदायों ने भी अपने लिए अलग राज्य की माँग की है, लेकिन इन समुदायों को असम में ही रखा गया। करबी और दिमसा समुदायों को जिला-परिषद् के अंतर्गत स्वायत्तता दी गई जबकि बोडो जनजाति को हाल ही में स्वायत्त परिषद् का दर्जा दिया गया है।

☞ अलगाववादी आंदोलन-

✍ स्वायत्तता की माँगों से निपटना आसान था क्योंकि संविधान में विभिन्नताओं का समाहार, संघ में करने के लिए प्रावधान पहले से मौजूद थे।

✍ आज़ादी के बाद मिजो पर्वतीय क्षेत्र को असम के भीतर ही एक स्वायत्त जिला बना दिया गया था, लेकिन जब सन् 1959 में मिजो पर्वतीय इलाके में भारी अकाल पड़ा, तो असम की सरकार इस अकाल में समुचित प्रबंध करने में नाकाम रही।

✓ इसी के बाद अलगाववादी आंदोलन को जनसमर्थन मिलना शुरू हुआ। मिजो लोगों ने गुस्से में आकर लालडेंगा के नेतृत्व में मिजो नेशनल फ्रंट बनाया।

✓ सन् 1966 में मिजो नेशनल फ्रंट ने आज़ादी की माँग करते हुए सशस्त्र अभियान शुरू किया।

✓ मिजो नेशनल फ्रंट ने गुरिल्ला युद्ध किया। उसे पाकिस्तान की सरकार ने समर्थन दिया था। भारतीय सेना ने विद्रोही गतिविधियों को दबाने के लिए जवाबी कार्रवाई की।

✓ अंततः राजीव गाँधी ने इस मुद्दे को एक सकारात्मक समाधान तक पहुँचाया।

✓ सन् 1986 में राजीव गाँधी (Rajiv Gandhi) और लालडेंगा (Laldenga) के बीच शांति समझौता (Peace Accord) हुआ। समझौते के अंतर्गत मिजोरम को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला और उसे कुछ विशेष अधिकार दिए गए। मिजो नेशनल फ्रंट अलगाववादी संघर्ष की राह छोड़ने पर राजी हो गया। लालडेंगा मिजोरम के मुख्यमंत्री बने।

✍ लालडेंगा (1937-1990):-

✓ मिजो नेशनल फ्रंट के संस्थापक: सन् 1986 में प्रधानमंत्री राजीव गाँधी के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए; नव-निर्मित मिजोरम के मुख्यमंत्री बने।

✍ नगालैंड के अंगमी जापू फ़िजो (Angami Zapu Phizo) के नेतृत्व में नगा लोगों के एक तबके ने सन् 1951 में अपने को भारत से आज़ाद घोषित कर दिया था।

✍ अंगमी जापू फिजो (1904-1990):-

✓ नगालैंड की आज़ादी के आंदोलन के नेता; नगा नेशनल काउंसिल के अध्यक्ष।

☞ बाहरी लोगों के खिलाफ़ आंदोलन-

✍ पूर्वोत्तर में बड़े पैमाने पर आप्रवासी आए हैं। स्थानीय जनता इन्हें 'बाहरी' समझती है और 'बाहरी' लोगों के खिलाफ़ उनके मन में गुस्सा है।

✍ बाहरी लोगों को यहाँ की जनता रोजगार के अवसरों और राजनीतिक सत्ता के प्रतिद्वंद्वी के रूप में देखती है।

✍ सन् 1979 से 1985 तक चला असम आंदोलन बाहरी लोगों के खिलाफ़ चले आंदोलनों का सबसे अच्छा उदाहरण है।

✍ असमी लोगों को संदेह था कि बांग्लादेश से आकर बहुत-सी मुस्लिम आबादी असम में बसी हुई है। इन विदेशी लोगों को पहचानकर उन्हें अपने देश नहीं भेजा गया तो स्थानीय असमी जनता अल्पसंख्यक हो जाएगी।

✍ असम में तेल, चाय और कोयले जैसे प्राकृतिक संसाधनों की मौजूदगी के बावजूद व्यापक गरीबी थी। असमी लोगों को लगता था कि प्राकृतिक संसाधन होने का कोई फ़ायदा नहीं हो रहा है।

✍ सन् 1979 में ऑल असम स्टूडेंटस् यूनियन (AASU-आसू) ने विदेशियों के विरोध में एक आंदोलन चलाया।

✓ 'आसू' एक छात्र-संगठन था और इसका जुड़ाव किसी भी राजनीतिक दल से नहीं था।

✓ 'आसू' का आंदोलन अवैध आप्रवासी, बंगाली और अन्य लोगों के दबदबे तथा मतदाता सूची में लाखों आप्रवासियों के नाम दर्ज कर लेने के खिलाफ़ था।

✓ आंदोलन की माँग थी कि सन् 1951 के बाद जितने भी लोग असम में आकर बसे हैं उन्हें असम से बाहर भेजा जाए।

✓ इस आंदोलन को पूरे असम में समर्थन मिला।

✓ आंदोलन के दौरान हिंसक और त्रासद घटनाएँ भी हुई।

✓ आगे चलकर राजीव गाँधी के नेतृत्व वाली सरकार ने 'आसू' के नेताओं से बातचीत शुरू की। इसके परिणामस्वरूप सन् 1985 में एक समझौता हुआ।

✓ समझौते के अंतर्गत तय किया गया कि जो लोग बांग्लादेश-युद्ध के दौरान अथवा उसके बाद के सालों में असम आए हैं, उनकी पहचान की जाएगी और उन्हें वापस भेजा जाएगा।

✓ आंदोलन की कामयाबी के बाद 'आसू' और असम गण संग्राम परिषद् ने साथ मिलकर अपने को एक क्षेत्रीय राजनीतिक पार्टी के रूप में संगठित किया, जिसका नाम 'असम गण परिषद्' (Asom Gana Parishad) रखा गया।

✍ 'बाहरी' का मसला अब भी असम और पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों की, राजनीति में एक जीवंत मसला है। अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम और त्रिपुरा के लोगों में चकमा शरणार्थियों को लेकर गुस्सा है।

☞ समाहार (Accommodation) और राष्ट्रीय अखंडता-

☞ सन् 1980 के बाद के दौर में भारत की राजनीति कई तनावों के घेरे में रही और समाज के विभिन्न तबकों की माँगों में पटरी बैठा पाने की लोकतांत्रिक राजनीति की क्षमता की परीक्षा हुई। हम इन उदाहरणों से क्या सबक सीख सकते हैं।

✍ पहला और बुनियादी सबक तो यही है कि क्षेत्रीय आकांक्षाएँ लोकतांत्रिक राजनीति का अभिन्न अंग हैं। क्षेत्रीय मुद्दे की अभिव्यक्ति कोई असामान्य घटना नहीं है। स्पेन में बास्क लोगों और श्रीलंका में तमिलों ने अलगाववादी माँग की। अत: भारत को क्षेत्रीय आकांक्षाओं से निपटने की तैयारी लगातार रखनी होगी।

✍ दूसरा सबक यह है कि क्षेत्रीय आकांक्षाओं को दबाने की जगह उनके साथ लोकतांत्रिक बातचीत का तरीका अपनाना सबसे अच्छा होता है।

✍ तीसरा सबक है सत्ता की साझेदारी के महत्त्व को समझना।

✍ चौथा सबक यह है कि आर्थिक विकास के एतबार से विभिन्न इलाकों के बीच असमानता हुई तो पिछड़े क्षेत्रों को लगेगा कि उनके साथ भेदभाव हो रहा है। ऐसे में स्वाभाविक है कि पिछड़े प्रदेशों/इलाकों के पिछड़ेपन को प्राथमिकता के आधार पर दूर किया जाना चाहिए।

✍ सबसे आखिरी बात यह कि इन मामलों से हमें अपने संविधान निर्माताओं की दूरदृष्टि का पता चलता है। वे विभिन्नताओं को लेकर अत्यंत सजग थे। पूर्वोत्तर की कुछ जटिल राजनीतिक समस्याओं को सुलझाने में संवैधानिक प्रावधान बड़े निर्णायक साबित हुए।

☞ राजीव गाँधी (1944-1991):-

✍ सन् 1984 से 1989 के बीच भारत के प्रधानमंत्री; खुली अर्थव्यवस्था एवं कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के हिमायती; सिंहली-तमिल समस्या को सुलझाने के लिए भारतीय शांति सेना को श्रीलंका की सरकार के अनुरोध पर श्रीलंका भेजा।

❖ सिक्किम का विलय-

☞ आज़ादी के समय सिक्किम को भारत की 'शरणागति' प्राप्त थी, जिसका मतलब यह कि तब सिक्किम भारत का अंग तो नहीं था लेकिन वह पूरी तरह संप्रभु राष्ट्र भी नहीं था।

☞ सिक्किम की रक्षा और विदेशी मामलों का जिम्मा भारत सरकार का था जबकि सिक्किम के आंतरिक प्रशासन की बागडोर यहाँ के राजा चोग्याल के हाथों में थी।

☞ सिक्किम विधानसभा के लिए पहला लोकतांत्रिक चुनाव सन् 1974 में हुआ। सिक्किम विधानसभा ने अप्रैल, 1975 में एक प्रस्ताव पारित किया, जिसमें भारत के साथ सिक्किम के पूर्ण विलय की बात कही गई थी।

☞ इस प्रस्ताव के तुरंत बाद सिक्किम में जनमत-संग्रह कराया गया और सिक्किम भारत का 22वाँ राज्य बन गया।

☞ काजी लैंदुप दोरजी खांगसरपा (1904):-

✍ सिक्किम के लोकतंत्र बहाली आंदोलन के नेता; सन् 1962 में सिक्किम नेशनल कांग्रेस की स्थापना; सिक्किम के भारत में विलय के समर्थक; सिक्किम के भारत में विलय के बाद में पहले मुख्यमंत्री बने।

❖ गोवा की मुक्ति-

☞ सन् 1947 में भारत में अंग्रेजी साम्राज्य का खात्मा हो गया था लेकिन पुर्तगाल ने गोवा, दमन और दीव से अपना शासन हटाने से इनकार कर दिया।

☞ दिसंबर, 1961 में भारत सरकार ने गोवा में अपनी सेना भेजी। दो दिन की कार्रवाई में भारतीय सेना ने गोवा को मुक्त करा लिया। गोवा, दमन और दीव संघशासित प्रदेश (Union Territory/UT) बनाए गए।

☞ अंतत: सन् 1987 में गोवा भारत संघ का एक राज्य बना।

☞ कोंकणी भाषा यहाँ की प्रमुख भाषा है।

XII Class

Pol. Science

भारतीय राजनीति : नए बदलाव
(स्वतंत्र भारत में राजनीति)

Part II Chapter Summary- 8

❖ 1990 का दशक–

☞ श्रीमती इंदिरा गाँधी की हत्या के बाद राजीव गाँधी प्रधानमंत्री बने।

☞ सन् 1984 में लोकसभा चुनाव में राजीव गाँधी की अगुवाई में कांग्रेस को भारी विजय मिली।

☞ सन् 1989 के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस की हार है। जिस पार्टी ने सन् 1984 में लोकसभा की 415 सीटें जीती थी, वह इस चुनाव में महज 197 सीटें ही जीत सकी।

☞ सन् 1991 में एक बार फिर मध्यावधि चुनाव हुए और कांग्रेस इस बार अपना आँकड़ा सुधारते हुए सत्ता में आयी।

☞ बहरहाल, सन् 1989 में ही उस परिघटना की समाप्ति हो गई थी, जिसे राजनीति विज्ञानी अपनी खास शब्दावली में 'कांग्रेस प्रणाली' (Congress system) कहते हैं। सन् 1989 के बाद भी देश पर किसी अन्य पार्टी के बजाय कांग्रेस का शासन ज़्यादा दिनों तक रहा। लेकिन, दलीय प्रणाली के भीतर जैसी प्रमुखता इसे पहले के दिनों में हासिल थी, वैसी अब न रही।

❖ सन् 1990 में राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार ने 'मंडल आयोग' (Mandal Commission) की सिफ़ारिशों को लागू किया।

☞ इन सिफ़ारिशों के अंतर्गत प्रावधान किया गया कि केंद्र सरकार की नौकरियों में 'अन्य पिछड़ा वर्ग' को आरक्षण दिया जाएगा।

☞ सरकार के इस फ़ैसले से देश के विभिन्न भागों में मंडल-विरोधी हिंसक प्रदर्शन हुए।

☞ अन्य पिछड़ा वर्ग को मिले आरक्षण के समर्थक और विरोधियों के बीच चले विवाद को 'मंडल मुद्दा' (Mandal issue) कहा जाता है।

❖ ढाँचागत समायोजन कार्यक्रम अथवा नए आर्थिक सुधार–

☞ विभिन्न सरकारों ने 1980 के दशक के आखिर के सालों में देश में जो आर्थिक नीतियाँ अपनाईं, वे बुनियादी तौर पर बदल चुकी थी। इसे ढाँचागत समायोजन कार्यक्रम अथवा नए आर्थिक सुधार के नाम से जाना गया।

☞ इनकी शुरुआत राजीव गाँधी की सरकार के समय हुई और 1991 तक ये बदलाव बड़े पैमाने पर प्रकट हुए।

☞ आज़ादी के बाद से अब तक भारतीय अर्थव्यवस्था जिस दिशा में चलती आई थी, वह इन नए आर्थिक सुधारों के कारण मूलगामी अर्थों में बदल गई।

☞ बहरहाल इस अवधि में जितनी सरकारें बनी, सबने नयी आर्थिक नीति पर अमल जारी रखा।

❖ दिसंबर, 1992 में अयोध्या स्थित एक विवादित ढाँचे, जो कि बाबरी मस्ज़िद (Babri Masjid) के रूप में प्रसिद्ध थी, का विध्वंस हुआ। इस घटना से भारतीय राष्ट्रवाद और धर्मनिरपेक्षता पर बहस तेज़ हो गई।

❖ मई 1991 में राजीव गाँधी की हत्या कर दी गई।

☞ राजीव गाँधी चुनाव अभियान के सिलसिले में तमिलनाडु के दौरे पर थे। तभी 'लिट्टे' (LTTE : Liberation Tigers of Tamil Eelam) से जुड़े श्रीलंकाई तमिलों ने उनकी हत्या कर दी।

☞ सन् 1991 के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस सबसे बड़ी विजयी पार्टी के रूप में सामने आयी।

☞ राजीव गाँधी की मृत्यु के बाद कांग्रेस पार्टी ने पी.वी. नरसिम्हा राव को प्रधानमंत्री चुना।

❖ गठबंधन का युग–

☞ सन् 1989 के चुनावों में कांग्रेस पार्टी की हार हुई थी, लेकिन कांग्रेस अब भी लोकसभा में सबसे बड़ी पार्टी थी, परन्तु बहुमत में न होने के कारण उसने विपक्ष में बैठने का फ़ैसला किया।

☞ वी.पी. सिंह के नेतृत्व वाली 'राष्ट्रीय मोर्चा' सरकार को परस्पर विरुद्ध दो राजनीतिक समूहों – भाजपा (BJP) और वाम मोर्चे (Left Front) – ने केवल समर्थन दिया। इस गठबंधन सरकार में भाजपा और वाम मोर्चा ने शिरकत नहीं (...did not join) की।

THOSTU

☞ 'राष्ट्रीय मोर्चा' (National Front) जनता दल और कुछ अन्य क्षेत्रीय दलों को मिलाकर बना था।

❖ सन् 1989 के बाद कांग्रेस के दबदबे के खात्मे के साथ बहुदलीय शासन-प्रणाली (Multi-party system) का युग शुरू हुआ।

☞ सन् 1989 के बाद से लोकसभा के चुनावों में कभी भी किसी एक पार्टी को सन् 2014 तक पूर्ण बहुमत नहीं मिला।

☞ इस प्रकार इसी अवधि में केंद्र में गठबंधन सरकारों का दौर शुरू हुआ।

☞ यद्यपि, पुनः सन् 2014 तथा 2019 के लोकसभा चुनावों में भाजपा (BJP) को अकेले बहुमत प्राप्त हुआ है।

❖ भाजपा ने लोकसभा के सन् 1991 तथा सन् 1996 के चुनावों में अपनी स्थिति लगातार मज़बूत की।

☞ सन् 1996 के चुनावों में यह सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। इस नाते भाजपा को सरकार बनाने का न्यौता मिला, लेकिन अधिकांश दल, भाजपा की नीतियों के खिलाफ़ थे और इस वजह से भाजपा की सरकार लोकसभा में बहुमत हासिल नहीं कर सकी।

☞ आखिरकार भाजपा एक गठबंधन (राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन– राजग / National Democratic Alliance : NDA) के अगुआ के रूप में सत्ता में आयी और मई, 1998 से जून, 1999 तक सत्ता में रही। फिर अक्तूबर, 1999 में इस गठबंधन ने दोबारा सत्ता हासिल की। इन दोनों सरकारों में अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री बने।

☞ सन् 1999 की राजग सरकार ने अपना निर्धारित कार्यकाल पूरा किया।

❖ इस तरह सन् 1989 के चुनावों से भारत में गठबंधन की राजनीति के एक लंबे दौर की शुरुआत हुई। इसके बाद से मई, 2014 तक केंद्र में 11 सरकारें बनीं।

❖ भारत में मार्च, 1998 से मई, 2004 तक भाजपा नीत 'राजग' (राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन– राजग) की तथा मई, 2004 से मई, 2014 तक कांग्रेस नीत 'संप्रग' (संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन– संप्रग / United Progressive Alliance : UPA) की सरकार रही।

☞ सन् 1989 के बाद केंद्रीय सरकार–

प्रधानमंत्री	अवधि	गठबंधन/सरकार में शामिल दल
वी.पी. सिंह	दिस. 1989 नव. 1990	राष्ट्रीय मोर्चा (वाम मोर्चा एवं भाजपा का समर्थन)
चन्द्रशेखर	नव. 1990 जून 1991	राष्ट्रीय मोर्चा का एक तबका समाजवादी जनता पार्टी के नेतृत्व में (कांग्रेस का समर्थन)
पी.वी. नरसिम्हा राव	जून 1991 मई 1996	कांग्रेस (कुछ अन्य दलों का समर्थन)
अटल बिहारी वाजपेयी	मई 1996 जून 1996	भाजपा (अल्पमत सरकार)
एच.डी. देवगौड़ा	जून 1996 अप्रैल 1997	संयुक्त मोर्चा (कांग्रेस का समर्थन)
इन्द्रकुमार गुजराल	अप्रैल 1997 मार्च 1998	संयुक्त मोर्चा (कांग्रेस का समर्थन)
अटल बिहारी वाजपेयी	मार्च 1998 मई 2004	भाजपा नीत 'राजग' सरकार
मनमोहन सिंह	मई 2004 मई 2014	कांग्रेस नीत 'संप्रग' सरकार
नरेन्द्र मोदी	मई 2014 से लगातार	भाजपा नीत 'राजग' सरकार

❖ 'अन्य पिछड़ा वर्ग' अथवा 'अदर बैकवर्ड क्लासेज़' (ओबीसी) अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित जनजाति से अलग एक कोटि है, जिसमें शैक्षणिक और सामाजिक रूप से पिछड़े समुदायों की गणना की जाती है। इन समुदायों को 'पिछड़ा वर्ग' भी कहा जाता है।

❖ दक्षिण के राज्यों में 1960 के दशक से अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षण का प्रावधान चला आ रहा था। यह नीति उत्तर भारत के राज्यों में लागू नहीं थी।

☞ सन् 1977-79 की जनता पार्टी की सरकार के समय उत्तर भारत में पिछड़े वर्ग के आरक्षण के लिए राष्ट्रीय स्तर पर मज़बूती से आवाज़ उठाई गई।

☞ बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर की सरकार ने बिहार में 'ओबीसी' को आरक्षण देने के लिए एक नीति लागू की।

☞ भारत सरकार ने सन् 1978 में एक आयोग बैठाया, जिसके जिम्मे पिछड़ा वर्ग की स्थिति को सुधारने के उपाय बताने का काम सौंपा गया।

☞ आज़ादी के बाद से यह दूसरा अवसर था, जब सरकार ने ऐसा आयोग नियुक्त किया। इसी कारण आधिकारिक रूप से इस आयोग को 'दूसरा पिछड़ा वर्ग आयोग' कहा गया।

☞ आमतौर पर इस आयोग को इसके अध्यक्ष बिन्देश्वरी प्रसाद मंडल (1918-1982) के नाम पर 'मंडल कमीशन' कहा जाता है।

☞ आयोग ने सन् 1980 में अपनी सिफारिशें पेश की–

✓ आयोग ने पिछड़ी जातियों के लिए शिक्षा संस्थाओं तथा सरकारी नौकरियों में 27 प्रतिशत सीट आरक्षित करने की सिफारिश की।

✓ मंडल आयोग ने अन्य पिछड़ा वर्ग की स्थिति सुधारने के लिए कई और समाधान सुझाए जिनमें भूमि-सुधार भी एक था।

☞ अगस्त, 1990 में राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार ने मंडल आयोग की सिफ़ारिशों में से एक को लागू करने का फ़ैसला किया।

☞ इस फ़ैसले को सर्वोच्च न्यायालय में भी चुनौती दी गई और यह प्रकरण 'इंदिरा साहनी केस' (Indira Sawhney Case) के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

☞ नवंबर, 1992 में सर्वोच्च न्यायालय ने सरकार के निर्णय को सही ठहराते हुए अपना फ़ैसला सुनाया।

☞ बिन्देश्वरी प्रसाद मंडल सन् 1968 में डेढ़ माह तक बिहार के मुख्यमंत्री पद पर रहे।

❖ सन् 1978 में 'बामसेफ' (बैकवर्ड एंड माइनॉरिटी कम्युनिटीज़ एम्पलाइज़ फेडरेशन / Backward And Minority Communities Employees Federation : BAMCEF) का गठन हुआ। इसी का परवर्ती विकास 'दलित-शोषित समाज संघर्ष समिति' है, जिससे बाद के समय में बहुजन समाज पार्टी का उदय हुआ। इस पार्टी का सबसे ज़्यादा समर्थन दलित मतदाता करते हैं।

☞ इस पार्टी की अगुआई कांशीराम ने की।

☞ बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के संस्थापक कांशीराम (1934-2006) थे।

❖ भूतपूर्व जनसंघ के समर्थकों ने वर्ष 1980 में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) बनाई।

☞ भाजपा ने 'हिंदुत्व' की राजनीति का रास्ता चुना और हिंदुओं को लामबंद करने की रणनीति अपनायी।

❖ सांप्रदायिकता, धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र–

☞ जनता पार्टी के पतन और बिखराव के बाद भूतपूर्व जनसंघ के समर्थकों ने सन् 1980 में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) बनाई। शुरू-शुरू में भाजपा ने जनसंघ की अपेक्षा कहीं ज़्यादा बड़ा राजनीतिक मंच अपनाया। इसने 'गाँधीवादी समाजवाद' को अपनी विचारधारा के रूप में स्वीकार किया।

✓ बहरहाल, भाजपा को सन् 1980 और सन् 1984 के चुनावों में खास सफलता नहीं मिली।

✓ सन् 1986 के बाद इस पार्टी ने अपनी विचारधारा में हिंदू राष्ट्रवाद के तत्त्वों पर ज़ोर देना शुरू किया। भाजपा ने 'हिंदुत्व' की राजनीति का रास्ता चुना और हिंदुओं को लामबंद करने की रणनीति अपनायी।

☞ 'हिंदुत्व' अथवा 'हिंदूपन' शब्द को वी.डी. सावरकर ने गढ़ा था और इसको परिभाषित करते हुए उन्होंने इसे भारतीय (और उनके शब्दों में हिंदू) राष्ट्र की बुनियाद बताया। उनके कहने का आशय यह था कि भारत राष्ट्र का नागरिक वही हो सकता है, जो भारतभूमि को न सिर्फ़ 'पितृभूमि' बल्कि अपनी 'पुण्यभूमि' भी स्वीकार करे।

☞ सन् 1986 में ऐसी दो बातें हुईं, जो एक हिंदूवादी पार्टी के रूप में भाजपा की राजनीति के लिहाज़ से प्रधान हो गई।

✓ पहली बात सन् 1985 के शाहबानो मामले से जुड़ी है।

✓ दूसरी बात का संबंध फैज़ाबाद ज़िला न्यायालय द्वारा फरवरी, 1986 में सुनाए गए फ़ैसले से है। इस अदालत ने फ़ैसला सुनाया था कि बाबरी मस्ज़िद के अहाते का ताला खोल दिया जाना चाहिए, ताकि हिंदू यहाँ पूजा पाठ कर सकें, क्योंकि वे इस जगह को पवित्र मानते हैं। अयोध्या स्थित बाबरी मस्जिद को लेकर दशकों से विवाद चला आ रहा था।

❖ वर्ष 1985 का शाहबानो मामला एक 62 वर्षीया तलाकशुदा मुस्लिम महिला शाहबानो का था।

☞ उसने अपने भूतपूर्व पति से गुजारा भत्ता हासिल करने के लिए अदालत में अर्ज़ी दायर की थी। सर्वोच्च अदालत ने शाहबानो के पक्ष में फ़ैसला सुनाया।

☞ पुरातनपंथी मुसलमानों ने अदालत के इस फ़ैसले को अपने 'पर्सनल लॉ' में हस्तक्षेप माना।

☞ कुछ मुस्लिम नेताओं की माँग पर सरकार ने मुस्लिम महिला अधिनियम (1986) (तलाक से जुड़े अधिकारों) पास किया। इस अधिनियम के द्वारा सर्वोच्च न्यायालय के फ़ैसले को निरस्त कर दिया गया।

✓ सरकार के इस कदम का कई महिला संगठनों, मुस्लिम महिलाओं की जमात तथा अधिकांश बुद्धिजीवियों ने विरोध किया।

✓ भाजपा ने कांग्रेस सरकार के इस कदम की आलोचना की और इसे अल्पसंख्यक समुदाय को दी गई अनावश्यक रियायत तथा 'तुष्टिकरण' करार दिया।

❖ फैज़ाबाद ज़िला न्यायालय द्वारा फरवरी, 1986 में फ़ैसला सुनाया गया था कि बाबरी मस्ज़िद के अहाते का ताला खोल दिया जाना चाहिए, ताकि हिंदू यहाँ पूजा पाठ कर सकें, क्योंकि वे इस जगह को पवित्र मानते हैं।

☞ अयोध्या स्थित बाबरी मस्जिद को लेकर दशकों से विवाद चला आ रहा था।

☞ बाबरी मस्ज़िद का निर्माण अयोध्या में मीर बाकी ने करवाया था। मीर बाकी मुगल शासक बाबर का सिपहसलार था। यह मस्ज़िद 16वीं सदी में बनी थी।

☞ भाजपा ने जनसमर्थन जुटाने के लिए गुजरात स्थित सोमनाथ से उत्तर प्रदेश स्थित अयोध्या तक एक बड़ी 'रथयात्रा' निकाली।

☞ 6 दिसंबर, 1992 को देश के विभिन्न भागों से आये लोगों ने बाबरी मस्जिद को गिरा दिया। बाबरी मस्ज़िद के विध्वंस की खबर से देश के कई भागों में हिंदू और मुसलमानों के बीच झड़प हुई।

☞ इस घटना के परिणामस्वरूप उत्तर प्रदेश में सत्तासीन भाजपा की राज्य सरकार को केंद्र ने बर्खास्त कर दिया। दूसरे राज्यों में भी, जहाँ भाजपा की सरकार थी, राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया।

☞ भाजपा ने आधिकारिक तौर पर अयोध्या की घटना पर अफ़सोस जताया।

☞ केंद्र सरकार ने एक जाँच आयोग नियुक्त किया और उसे उन स्थितियों की जाँच करने के लिए कहा, जिनकी परिणति मस्ज़िद के विध्वंस के रूप में हुई थी।

☞ अधिकतर राजनीतिक दलों ने मस्ज़िद के विध्वंस की निंदा की और इसे धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों के विरुद्ध बताया।

❖ फरवरी-मार्च, 2002 में गुजरात के मुसलमानों के विरुद्ध हिंसा भड़की।

☞ गोधरा (गुजरात) स्टेशन पर घटी एक घटना इस हिंसा का तात्कालिक उकसावा साबित हुई। अयोध्या की ओर से आ रही एक ट्रेन की बोगी कारसेवकों से भरी हुई थी और इसमें आग लग गई। सत्तावन व्यक्ति इस आग में मर गए। यह घटना "गोधरा काण्ड (27 फरवरी, 2002)" के नाम से जानी जाती है।

☞ यह संदेह करके कि बोगी में आग मुसलमानों ने लगायी होगी, अगले दिन गुजरात के कई भागों में मुसलमानों के खिलाफ़ बड़े पैमाने पर हिंसा हुई।

❖ सन् 1984 के सिख-विरोधी दंगों के समान सन् 2002 के गुजरात के दंगों से भी यह ज़ाहिर हुआ कि सरकारी मशीनरी सांप्रदायिक भावनाओं के आवेग में आ सकती है।

☞ गुजरात में घटी ये घटनाएँ हमें आगाह करती हैं कि राजनीतिक उद्देश्यों के लिए धार्मिक भावनाओं को भड़काना ख़तरनाक हो सकता है। इससे हमारी लोकतांत्रिक राजनीति को ख़तरा पैदा हो सकता है।

☞ 4 अप्रैल, 2002 को प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था कि "मुख्यमंत्री (गुजरात के) को मेरा संदेश है कि वे राजधर्म का पालन करें। शासक को अपनी प्रजा के बीच जाति, मत या धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए।"

❖ सन् 1989 के बाद की अवधि को कभी-कभार कांग्रेस के पतन और भाजपा के अभ्युदय की भी अवधि कहा जाता है।

☞ इस अवधि में भाजपा और कांग्रेस कठिन प्रतिस्पर्धा में लगे हुए थे।

☞ सन् 2004 के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस भी पूरे ज़ोर के साथ गठबंधन में शामिल हुई। राजग की हार हुई और संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) की सरकार बनी। इस गठबंधन का नेतृत्व कांग्रेस ने किया। संप्रग को वाम मोर्चा ने समर्थन दिया। 2004 के चुनावों में एक हद तक कांग्रेस का पुनरुत्थान भी हुआ।

❖ 1990 के दशक के बाद से हमारे सामने जो राजनीतिक प्रक्रिया आकार ले रही है, उसमें हम मुख्य रूप से चार तरह की पार्टियों के उभार को पढ़ सकते हैं : कांग्रेस के साथ गठबंधन में शामिल दल; भाजपा के साथ गठबंधन में शामिल दल; वाम मोर्चा के दल और कुछ ऐसे दल जो इन तीनों में से किसी में शामिल नहीं हैं।

☞ बहरहाल, अनेक महत्त्वपूर्ण मसलों पर अधिकतर दलों के बीच एक व्यापक सहमति है। इस सहमति में चार बातें हैं-

✓ नई आर्थिक नीति पर सहमति।

✓ पिछड़ी जातियों के राजनीतिक और सामाजिक दावे की स्वीकृति।

✓ देश के शासन में प्रांतीय दलों की भूमिका की स्वीकृति।

✓ विचारधारा की जगह कार्यसिद्धि पर ज़ोर और विचारधारागत सहमति के बगैर राजनीतिक गठजोड़।

☞ आज गरीबी, विस्थापन, न्यूनतम मज़दूरी, आजीविका और सामाजिक सुरक्षा के मसले जन आंदोलनों के ज़रिए राजनीतिक एजेंडे के रूप में सामने आ रहे हैं। ये आंदोलन राज्य को उसकी ज़िम्मेदारियों के प्रति सचेत कर रहे हैं। इसी तरह लोग जाति, लिंग, वर्ग और क्षेत्र के संदर्भ में न्याय तथा लोकतंत्र के मुद्दे उठा रहे हैं।

❖ 17वीं लोकसभा (वर्ष 2019) में भारतीय जनता पार्टी को 303 सीटें तथा इंडियन नेशनल कांग्रेस को 52 सीटें प्राप्त हुई।

❖ भारत में संसद सदस्यों की कुल संख्या 545 है, जिनमें राज्यों से 530, केंद्र-शासित प्रदेशों से 13 तथा एंग्लो-इंडियन समूह से 2 हैं।

☞ एंग्लो-इंडियन समूह के सदस्यों को राष्ट्रपति द्वारा नामित/मनोनीत किया जाता है।

TUROSHI